न रा
का स
उपक्रम-1 दिल्ली

इन्द्रप्रस्थ स्वर

वर्ष 14, अंक 20 जनवरी–दिसम्बर, 2025

''जहां आप पहुंचे छलांगे लगाकर,
वहां मैं भी पहुंचा मगर धीरे-धीरे''

- डॉ. रामदरश मिश्र

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली
अध्यक्षता: भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, निगमित मुख्यालय

पाँचवाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा पांचवां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 14–15 सितंबर 2025 को महात्मा मंदिर कन्वेन्शन एवं एग्जीबिशन सेंटर, गांधीनगर, गुजरात में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन के दौरान नराकास(उपक्रम–1) को राजभाषा कार्यान्वयन हेतु उत्कृष्ट श्रेणी में पुरस्कृत किया गया। भाविप्रा के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ श्री संजीव कुमार, संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य–सचिव नराकास (उपक्रम–1) द्वारा यह पुरस्कार प्राप्त किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली

इन्द्रप्रस्थ स्वर

अंकः 20 जनवरी–दिसम्बर, 2025

मुख्य संरक्षक

विपिन कुमार, भा.प्र.से.
अध्यक्ष

संरक्षक

पंकज मल्होत्रा
सदस्य (वित्त) एवं अतिरिक्त प्रभार (मानव संसाधन)

मार्गदर्शन

माया लवानिया
कार्यपालक निदेशक (प्रशासन)

प्रबंध संपादक

संजीव कुमार
संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव, नराकास

सह–संपादक

रीता अरूण मलिक
प्रबन्धक (राजभाषा)

नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली की ओर से
आंतरिक वितरण के लिए प्रकाशित

'इंद्रप्रस्थ स्वर' में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली की उनसे सहमति हो, अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।

इस अंक में

मुख्य संरक्षक की कलम से	02
संरक्षक की कलम से	03
मार्गदर्शन	04
प्रबंध संपादक की कलम से	05
सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदमः नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एनएसएफडीसी)	06
''प्रजातंत्र''	08
डिजिटल अरेस्टः साइबर ठगी का नया माध्यम	09
''सिर ऊँचा रखना''	11
''एक सबक इंसानियत का''	12
असली उजाला	13
क्या ये कलयुग के अंत की शुरूआत हे	14
अजनबी शहर की जानी–पहचानी खामोशी	15
दिहाड़ी मजदूर	16
कारगिल उड़ान	17
तकनीक, विश्वास और नवाचार की मिसाल – एमएसटीसी की डिजिटल यात्रा	18
माँ मिलती सौभाग्य से	19
हाउसवाइफः घर की आत्मा, समाज की नींव	20
हिंदी से करो प्रेम	21
हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का महत्व	22
मल्टीप्ल स्क्लेरोसिस (एमएस)– एक रोग	24
पर्यावरण – जीवन का आधार और उसकी प्रदूषण से सुरक्षा	25
आदिवासी गौरव और देशभक्ति	31
प्रदूषण मुक्त भारत की ओर एक प्रयास	32
हिंदी	33
बात–बात में यहां दिखावा है	34
सतर्कताः एक साझा जिम्मेदारी	34
समय प्रबंधन	35
उम्र ढलती रही	36
''शाकाहारः एक सशक्त और संतुलित जीवनशैली''	37
दो शहर	38
भारत अर्थ मूवर्स (बीईएम्एल): राष्ट्र का प्रेरक बल	39
''भीष्म प्रतिज्ञा''	40
हिंदी हमारी पहचान	42
संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा विचार विमर्श कार्यक्रम	43
नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के तत्वावधान में ''संसदीय राजभाषा निरीक्षण प्रश्नावली'' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	44
14.05.2025 को ''भारतीय ज्ञान परम्परा में हिंदी अनुवाद'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	44
नराकास (उपक्रम–1) के तत्वावधान में 2025 में आयोजित की गई प्रतियोगिताएँ	45
भारत का इतिहास : भारत गौरव	45
नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के सभी उपक्रमों के कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा प्रमुखों का विवरण	46
जब सेवानिवृत्त हो जाऊँगी	55
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) दिल्ली की 60वीं बैठक	56

विपिन कुमार, भा.प्र.से.
VIPIN KUMAR, IAS
अध्यक्ष
Chairman
दूरभाष / Phone : 011-24632930
011-24622796
फैक्स / Fax : 011-20818201
ई–मेल / E-mail : chairman@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गाँधी भवन
Rajiv Gandhi Bhawan
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110003
Safdarjung Airport, New Delhi-110003

मुख्य संरक्षक की कलम से

भारतवर्ष में हर क्षेत्र में विविधता है जैसे संस्कृति, पहनावा, खान–पान, जीवन शैली, बोली आदि परंतु राजभाषा के रूप में हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो इस विविधता को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। हिन्दी की सरलता एवं वास्तुनिष्ठ प्रकृति उसे सर्वसाधारण के लिए सुलभ एवं सुगम्य बनाती है। हिन्दी में काम करने के लिए हमें वैचारिक स्वतंत्रता तो मिलती ही है साथ ही इसकी लिपि देवनागरी भी इसके प्रयोग को और अधिक सहज बनाती है। ऐसी महान भाषा के कार्यालयीन प्रयोग एवं सदस्य कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित 15वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में उत्कृष्ट श्रेणी में पुरस्कार मिलना इस बात का द्योतक है कि हमारे सभी सदस्य कार्यालय अपना कार्य सत्यनिष्ठा एवं प्रणालीबद्ध रूप से कर रहे हैं।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) दिल्ली की प्रतिनिधि पत्रिका "इंद्रप्रस्थ स्वर" के 20वें अंक को क्रमबद्धता में आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके लिए सभी सदस्य कार्यालय बधाई के पात्र हैं।

राजभाषा हिन्दी के विकास की प्रक्रिया में राजभाषा पत्रिकाओं का प्रकाशन निश्चित रूप से एक प्रशंसनीय प्रयास है। इसी दिशा में नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली की प्रतिनिधि पत्रिका "इंद्रप्रस्थ स्वर" न केवल राजभाषा के प्रचार–प्रसार में वृद्धि हेतु प्रयासरत है अपितु यह सदस्य कार्यालयों को अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित बनाए रखने के लिए एक उपयुक्त मंच प्रदान कर रही है। यह पत्रिका सभी सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों द्वारा राजभाषा के प्रति सम्मान, समर्पण का प्रतीक है।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 के अनुसार हमारे सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुख अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए राजभाषा संबंधी नियमों जैसे धारा 3(3) का अनुपालन, हिंदी मे प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में देना आदि का पालन करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

मैं आशा करता हूँ कि "इंद्रप्रस्थ स्वर" के इस अंक में प्रकाशित लेखों से सभी पाठक लाभान्वित होंगे और राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन के प्रति और अधिक प्रेरित होंगे।

नववर्ष की शुभकामनाओं सहित।

(विपिन कुमार)

श्री पंकज मल्होत्रा, भारेकासे
Mr. Pankaj Malhotra, IRPS
सदस्य (मानव संसाधन)
Member (Human Resource)
कार्यालय/Office : 91-11-24632946, 20818202
ई–मेल/E-mail : memberhr@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गांधी भवन, 'सी' ब्लॉक
Rajiv Gandhi Bhawan, 'C' Block
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली-110 003
Safdarjung Airport, New Delhi-110 003

संरक्षक की कलम से

नराकास (उपक्रम–1) की गृह पत्रिका "इंद्रप्रस्थ स्वर" के 20वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका नराकास (उपक्रम–1) के सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा का प्रतिबिम्ब है।

विदित है कि राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा देश के विभिन्न नगरों में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है। यह एक ऐसा मंच है जहाँ सदस्य कार्यालयों के कार्य स्वरूप में विविधता होने पर भी सभी राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु एकजुट होकर भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सार्थक प्रयास कर रहे हैं। इसी प्रकार नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के स्तर पर किए जाने वाले प्रयासों में से हिन्दी पत्रिका "इंद्रप्रस्थ स्वर" का प्रकाशन एक प्रकार से मील का पत्थर है।

इस पत्रिका में सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों को अपनी स्वयं की भाषा शैली चुनने एवं भावों को शब्द रूपी मोतियों में पिरो कर अपनी भावनाएँ व्यक्त करने की स्वतंत्रता है। भाषा एवं साहित्य के प्रति कार्मिकों का ऐसा रुझान उनके दैनिक कार्यालयीन दायित्वों के निष्पादन का वर्धन तो करता ही है साथ ही यह सामाजिक मूल्यों के प्रति सोच एवं व्यवहार को भी प्रभावित करता है। हमारे सभी सदस्य कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति हेतु महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। यह पत्रिका उनके सक्रिय योगदान को परिलक्षित करती प्रतीत होती है।

उल्लेखनीय है कि हाल ही में दिनांक 10.06.2025 को ही संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य समिति द्वारा दिल्ली एवं आसपास स्थित फरीदाबाद एवं अलीगढ़ के साथ–साथ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) के अध्यक्ष तथा कुछ सदस्य कार्यालयों के साथ विचार–विमर्श कार्यक्रम का आयोजन नई दिल्ली में किया गया। इस कार्यक्रम का समन्वय कार्य भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण को सौंपा गया था। राजभाषा निरीक्षण के दौरान भाविप्रा, निगमित मुख्यालय द्वारा समिति की अपेक्षाओं के अनुसार सफलतापूर्वक दायित्वों का निर्वहन किया गया। इस विचार–विमर्श कार्यक्रम में समिति द्वारा रिक्त पदों को भरने हेतु शीघ्र कार्रवाई करने के निदेश भी दिए गए। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सभी कार्यालय प्रमुख माननीय समिति की अपेक्षाओं के अनुरूप इस दिशा में कार्य कर रहे होंगे।

मैं आशा करता हूँ कि ''इंद्रप्रस्थ स्वर'' का यह अंक सभी सदस्य कार्यालयों के रचनाकारों में और अधिक ऊर्जा के साथ प्रतिभा विकास की भावना का संचार करेगा।

पंकज

श्री पंकज मल्होत्रा

माया लवानिया
Maya Lavaniya
कार्यपालक निदेशक (प्रशासन)
Executive Director (Administration)
कार्यालय/Office : 91-11-20818221
मोबाईल/Mob. : 91-9987725382
ई-मेल/E-mail : edadmin@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गांधी भवन, ए-ब्लॉक, कमरा न. 22
Rajiv Gandhi Bhawan, A-Block, Room No. 22
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली-110 003
Safdarjung Airport, New Delhi-110 003

मार्गदर्शन

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में निरंतर वृद्धि करते हुए "इंद्रप्रस्थ स्वर" पत्रिका का 20वां अंक प्रकाशित किया गया है।

प्रकृति की महान कलाकृति 'मानव' को सोचने–समझने की सबसे विलक्षण शक्ति ईश्वर द्वारा प्रदान की गई है तथा हमारे विचारों को व्यक्त करने का माध्यम भाषा है। अतः मनुष्य का विकास भाषा के विकास के साथ समांतर रूप से आगे बढ़ता है। भाषा का विकास केवल शब्दों के विन्यास या साहित्य रचना से नहीं होता अपितु दैनिक कार्यों में नित–नए प्रयोग से भाषा के विकास को गति मिलती है।

कार्यालयीन कामकाज से अलग कार्मिकों द्वारा अपनी रचनाओं का सृजन एवं उन्हें एक मंच पर प्रस्तुत करना बहुत प्रशंसा का विषय है। प्रतिभा के साथ–साथ इसके लिए बहुत धैर्य एवं दृढ़ता की आवश्यकता होती है। "इंद्रप्रस्थ स्वर" एक ऐसा मंच है जहां यह प्रतिभा एक साथ कई संगठनों के समक्ष जाती है अतः सभी रचनाकार, जिनकी रचनाएँ इस अंक में प्रकाशित हुई है बधाई के पात्र हैं। आपकी सृजनात्मक शक्तियों का इसी प्रकार वर्धन हो तथा नराकास की यह पत्रिका इसी प्रकार और अधिक रोचक एवं ज्ञानवर्धक बनती रहे।

यह पत्रिका नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली के सभी सदस्य कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति को इंगित करती है और इन कार्यालयों में काम करने वाले सभी कार्मिकों में राजभाषा के प्रयोग एवं देशप्रेम की भावना की द्योतक है। पत्रिका में प्रकाशित सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों द्वारा रचनात्मक अभिव्यक्ति उनके हिन्दी साहित्य के प्रति प्रेम को उजागर करती है।

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा भाविप्रा कार्यालयों के सफल राजभाषा निरीक्षण इस बात का प्रमाण है कि सभी कार्मिक एवं कार्यालय प्रमुख राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति पूरी सत्यनिष्ठा एवं समर्पण भाव से अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहे है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सम्पादन मण्डल को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(माया लवानिया)

प्रबंध संपादक की कलम से

"इंद्रप्रस्थ स्वर" का वर्ष 2025 का अंक 20वां आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली की प्रतिनिधि पत्रिका के इस अंक में विभिन्न विषयों पर सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रेषित लेख प्रकाशित किए गए हैं । साथ ही 10 जून 2025 को नराकास (उपक्रम–1) के कुछ कार्यालयों के साथ माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा विचार–विमर्श कार्यक्रम के दौरान निरीक्षण एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा गांधी कन्वेन्शन सेंटर, अहमदाबाद में 15वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह की संक्षिप्त रिपोर्ट एवं कुछ छायाचित्र भी इस अंक में सम्मिलित किए गए हैं। आशा करता हूँ कि यह संकलन भी पिछले अंकों की भांति रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक साबित होगा।

नराकास (उपक्रम–1) के सभी सदस्य कार्यालयों की सक्रिय भागीदारी एवं राजभाषा कार्यान्वयन के प्रयासों की अखिल भारतीय स्तर पर सराहना करते हुए राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा 15वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में नराकास (उपक्रम–1) को 'उत्कृष्ट' श्रेणी में पुरस्कृत किया गया। यह सभी सदस्य कार्यालयों में कार्यरत प्रत्येक कार्मिक के राजभाषा के प्रति प्रेम एवं सत्यनिष्ठा को प्रोत्साहित करता है तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु पथ प्रदर्शित करता है। मैं आप सभी का इस तत्परता से कार्य करने के लिए कोटि–कोटि धन्यवाद करता हूँ साथ ही यह आशा भी करता हूँ कि आप स्थिति को यथावत बनाए रखते हुए आगे बढ़ेंगे।

'इंद्रप्रस्थ स्वर' पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से विभिन्न विषयों पर सभी सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों द्वारा दिए गए लेखों एवं नराकास की गतिविधियों का संकलन करते समय भाषा की सरलता एवं बोधगम्यता का ध्यान रखा गया है। सभी रचनाकारों का राजभाषा हिन्दी की सेवा में अपना बहुमूल्य योगदान देने के लिए आभार।

नववर्ष की शुभकामनाओं सहित,

संजीव कुमार
संयुक्त महाप्रबन्धक (राजभाषा)

सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदमः नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एनएसएफडीसी)

परिचयः

भारत में अनुसूचित जातीय (Scheduled Castes) लक्षित समूह का सामाजिक व आर्थिक सशक्तिकरण सदैव एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। सरकार द्वारा समय–समय पर अनेक योजनाएं एवं संस्थाएं स्थापित की गई हैं, जिनका उद्देश्य इन वर्गों के समग्र विकास का कार्य करते हुए इनको मुख्यधारा में लाना है। इसी दिशा में कार्यरत एक प्रमुख संस्था है **नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एनएसएफडीसी)।**

स्थापना और उद्देश्यः

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स एंड शेड्यूल्ड ट्राइब्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एनएसएफडीसी) की स्थापना भारत सरकार द्वारा 08 फरवरी, 1989 को कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा–25 (अब कंपनी अधिनियम, 2013 के अधीन धारा–8) के अंतर्गत 'लाभ–निरपेक्ष कंपनी' के रूप में भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के अधीन एक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के रूप में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाना था। जनजातीय कार्य मंत्रालय के अंतर्गत अनुसूचित जनजाति लक्ष्य समूह के लिए नेशनल शेड्यूल्ड ट्राइब्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन के सृजन के कारण दिनांक 10.04.2001 को निगम का विभाजन हुआ। इस विभाजन के परिणामस्वरूप, एनएसएफडीसी अब पूर्णतः अनुसूचित जाति के लक्ष्य समूह की आवश्यकताओं को पूर्ण करता है।

एनएसएफडीसी, अनुसूचित जाति के पात्र व्यक्तियों के सामाजिक–आर्थिक विकास के माध्यम से व्यवस्थित रूप से गरीबी को कम करने के लिए चैनलाइजिंग एजेंसियों और अन्य विकास भागीदारों के साथ प्रभावी, उत्तरदायी और सहयोगात्मक तरीके से प्रमुख उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है। वित्तीय सहायता के प्रवाह में सुधार और कौशल विकास एवं अन्य नवीन पहलों के माध्यम से अनुसूचित जातियों की समृद्धि को बढ़ाने में सहायता करता है। एनएसएफडीसी गरीब व आर्थिक रूप से पिछड़े अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को रिआयती ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराती है, ताकि वे स्वरोजगार, उद्यमिता, शिक्षा एवं कौशल विकास के माध्यम से अपनी सामाजिक–आर्थिक स्थिति को सुधार सकें। एनएसएफडीसी, अपने चैनल भागीदारों के माध्यम से योजना के अधीन, पात्र लक्ष्य समूह को ऋण प्रदान करता है। एनएसएफडीसी अनुसूचित जातियों के लिए आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावी माध्यम है। इसकी योजनाएं सरल और सुलभ है। इसका प्रमुख उद्देश्य हैः

- अनुसूचित जाति की आबादी के लिए ट्रेडों और अन्य महत्वपूर्ण आर्थिक क्रियाकलापों की पहचान करना।
- अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के कौशल और उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रक्रियाओं को उन्नत बनाना।
- छोटे, कुटीर और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा देना।
- अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के उत्थान और आर्थिक कल्याण के लिए विशेष कार्यक्रमों को वित्त पोषित करना।
- अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के आर्थिक कल्याण के लिए उनके वित्तीय सहायता के प्रवाह में सुधार करना।
- लक्ष्य समूह को अपनी परियोजना स्थापित करने के लिए परियोजना तैयार करने, प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता के लिए मदद करना।
- भारत और विदेश में पूर्णकालिक व्यावसायिक/तकनीकी पाठ्यक्रमों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनुसूचित जाति के पात्र छात्रों को ऋण प्रदान करना।
- पात्र युवाओं को भारत में वोकेशनल (व्यावसायिक) शिक्षा और प्रशिक्षण कोर्स में अध्ययन करने के बाद कौशल और नियोजनीयता में वृद्धि करने के लिए ऋण प्रदान करना।

एनएसएफडीसी से ऋण प्राप्त करने की पात्रताः

1) लाभार्थी (लाभार्थियों) को अनुसूचित जाति समुदाय का होना चाहिए।
2) ऋण आधारित योजनाओं के अंतर्गत आवेदक की वार्षिक पारिवारिक आय रु. 3.00 लाख होनी चाहिए।

मुख्य कार्य और योजनाएं:

एनएसएफडीसी के पास लाभार्थियों को वित्तीय और अन्य सहायता प्रदान करने के लिए विभिन्न ऋण आधारित और गैर–ऋण आधारित योजनाएं हैं। कृषि और समवर्गी क्षेत्र, लघु उद्योगों और परिवहन क्षेत्रों सहित सेवाओं के अंतर्गत विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के लिए लाभार्थियों को ऋण उपलब्ध कराया जाता है।

1. **आर्थिक सहायता योजनाएं:**

   एनएसएफडीसी विभिन्न प्रकार की योजनाओं के अंतर्गत उद्यमियों को ऋण प्रदान करती है, जैसे:

   - लघु वित्त योजना
   - मियादी ऋण योजना
   - आजीविका माइक्रो फाइनेंस योजना (एएमवाई)
   - उद्यम निधि योजना (यूएनवाई)

2. **शैक्षणिक ऋण योजना:**

   अनुसूचित जाति के अभावग्रस्त छात्रों को उच्च शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए देश और विदेश में पढ़ाई के लिए रिआयती ब्याज पर शिक्षा ऋण प्रदान किया जाता है।

3. **कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम:**

   युवाओं को आधुनिक व्यापारिक आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षित करने के लिए स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम चलाए जाते हैं।

ऋण देने की प्रक्रिया:

एनएसएफडीसी राज्य स्तर पर कार्यरत राज्य चैनलाइजिंग एजेंसियों और चैनल भागीदारों के माध्यम से लाभार्थियों तक ऋण पहुंचाता है। आवेदक को अपनी राज्य की संबंधित एजेंसी के माध्यम से आवेदन करना होता है।

लाभार्थियों को विपणन सहायता:

निगम, एनएसएफडीसी की योजनाओं के तहत सहायता प्राप्त लाभार्थियों के उत्पादों की बिक्री के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व के चयनित प्रदर्शनियों और मेलों में अपनी वस्तुओं को बेचने के लिए अवसर प्रदान करता है। इन राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों एवं मेलों में लाभार्थियों को अपने उत्पादों के प्रदर्शन व बिक्री हेतु निःशुल्क स्टाल उपलब्ध कराया जाता है। इन प्रदर्शनियों में सहभागिता से लाभार्थियों को न केवल अपने उत्पाद को बेचने बल्कि ग्राहकों, डीलरों और निर्यातकों से बातचीत करने एवं नए उत्पादों के विकास के लिए जरूरतों/आवश्यकताओं को जानने का भी अवसर मिलता है।

ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार, कारीगरों के उत्पादों के विपणन और विकास/पुनः डिजाइनिंग संबंधित विभिन्न प्रकार के आदानों को उपलब्ध कराने के लिए लाभार्थियों को विपणन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में काउंटर पर अच्छी विक्रय कला के कार्य–निवेश के साथ ग्राहकों की जरूरतों के अनुकूल उत्पादों में रूपांतर कैसे किया जाए, इस पर जोर दिया जाता है।

उपलब्धियाँ और प्रभाव:

अब तक लाखों लोगों को एनएसएफडीसी के माध्यम से स्वरोजगार मिला है। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में इसके माध्यम से रोजगार के नए अवसर खुले हैं। शिक्षा ऋण से हजारों छात्रों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है। साथ ही, सामाजिक सम्मान, जीवन स्तर में उन्नयन और आत्मनिर्भरता की भावना का

विकास भी हुआ है। आत्मनिर्भर और सशक्त लक्ष्य समूह की ओर एक कदम।

आज के सूचना प्रौद्योगिकी युग में एनएसएफडीसी ने अपने लाभार्थियों तक सुलभ पहुँच, उनकी सुगमता, उन्हें लाभांवित करने, उनके उत्थान और सशक्तिकरण को ध्यान में रखते हुए सोशल मीडिया के प्लेटफार्म का भी उपयोग किया है। इस संबंध में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए एनएसएफडीसी की वेबसाइट (https://nsfdc.nic.in/index-hindi) पर देखा जा सकता है। इसके अलावा निगम की गतिविधियों को फेसबुक (https://www.facebook.com/NSFDC.Delhi), और इंस्टाग्राम (https://www.instagram.com/nsfdc_official) पर भी देखा जा सकता है।

अर्चना मेहरा
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
एनएसएफडीसी

"प्रजातंत्र"

प्रजातंत्र हूँ मैं, लोगों की आवाज हूँ मैं।
राजा रानी के किस्से खत्म किया
आम आदमी की बात शुरू किया
सबको समान रूप से देखता हूँ
किसी से, भेदभाव नहीं करता हूँ
प्रजातंत्र हूँ मैं। सुनो मेरी कहानी।

मुझ से पहले, समाज था बंटा हुआ,
जाति, धर्म, कुल, वंश से था पहचाना जाता
क्या काम करेगा कोई, किसके साथ खाएगा
ये भी जन्म से निर्धारण होता था
गरीबों, अमीरों की खाई में हर दिन
इंसानियत की मृत्यु होती थी
कोई महलों का था स्वामी
किसी को छप्पर भी नहीं नसीब था
देखकर समाज की ये लीला
मेरा शरीर था काँप गया

समाज को न्याय दिलाने की खातिर
सभी ने मिलकर मुझको अपनाया
सभी को बोलने की आजादी
सभी को सामान अधिकार मिला,
न कोई किसी का गुलाम रहा
न कोई किसी का स्वामी
इस गुलिस्तान में सभी फूल
महक रहे एक दूसरे के साथ
प्रजातंत्र हूँ मैं, यही है मेरी खूबी

न्याय दिलाने को न्यायालय,
सरकार चुनने को मताधिकार दिया,
सभी को सामान अधिकार मिले
संविधान को सर्वाधिकार दिया।

दयाराम मीना
वरिष्ठ प्रबंधक
बीईएमएल लिमिटेड

डिजिटल अरेस्टः साइबर ठगी का नया माध्यम

इंटरनेट और डिजिटल तकनीकों के व्यापक उपयोग ने जहाँ हमारे जीवन को सरल और सुगम बनाया है, वहीं इसके दुरुपयोग से साइबर अपराधों की संख्या में भी तेजी से वृद्धि हुई है। ऑनलाइन फ्रॉड, डेटा चोरी, हैकिंग, साइबर स्टॉकिंग, जैसे अपराधों ने व्यक्तिगत गोपनीयता और राष्ट्रीय सुरक्षा को गंभीर खतरे में डाल दिया है। इसी क्रम में अब साइबर ठगों ने डिजिटल ठगी का एक नया तरीका अपनाया है वह है– डिजिटल अरेस्ट। इस आलेख में हम डिजिटल अरेस्ट क्या है एवं इसके माध्यम से की जा रही ठगी की कार्यप्रणाली, उससे बचाव एवं इससे संबंधित जागरुकता के बारे में जानेगें।

डिजिटल अरेस्ट क्या है?

डिजिटल अरेस्ट एक साइबर स्कैम है। डिजिटल अरेस्ट स्कैम में साइबर ठग पुलिस, सीबीआई, नारकोटिक्स, आरबीआई और पुलिस अधिकारी बनकर अत्यंत आत्मविश्वास से बात करते हैं। वॉट्सएप या स्काइप कॉल पर जब कनेक्ट करते हैं तो आपको फर्जी अधिकारी एकदम असली से लगते हैं। वे लोग पीड़ित को इमोशनली और मेंटली टॉर्चर करते हैं। यकीन दिलाते हैं कि उनके या उनके परिजन के साथ कुछ बुरा हो चुका है या होने वाला है। सामने बैठा व्यक्ति पुलिस की वर्दी में होता है, ऐसे में ज्यादातर लोग डर जाते हैं और उनके जाल में फंसते चले जाते हैं। आसान भाषा में कहा जाए तो डिजिटल अरेस्ट में फर्जी सरकारी अधिकारी बनकर वीडियो कॉल के माध्यम से लोगों को डरा–धमकाकर उनसे बड़ी रकम वसूली जाती है। पिछले कुछ दिनों से डिजिटल अरेस्ट से जुड़े काफी मामलें सामने आए हैं।

डिजिटल अरेस्ट की कार्यप्रणाली

डिजिटल अरेस्ट में आपके पास किसी अनजान नंबर से साइबर ठग का कॉल आता है और साइबर ठग खुद को सीबीआई या पुलिस का बड़ा अधिकारी बताते हैं और लोगों को धमकाते हैं कि आपका नाम मनी लांड्रिंग या स्मगलिंग जैसे खतरनाक अपराध में आया है। फिर कहते हैं कि पुलिस स्टेशन दूसरे राज्य में है या पुलिस स्टेशन की दूरी ज्यादा है इसलिए आपको डिजिटल अरेस्ट किया जा रहा है और इस बारे में आपसे डिजिटल रूप में पूछताछ की जाएगी और डराया जाता है कि अगर आप इस कॉल को कट करते हैं तो आपको पुलिस वास्तव में जेल में डाल देगी। यह ठग वीडियो कॉल में पुलिस स्टेशन या पुलिस अधिकारी के चेंबर जैसा बैकग्राउंड तैयार रखते हैं ताकि व्यक्ति को लगे कि सच में यह कॉल किसी पुलिस अधिकारी या पुलिस स्टेशन से ही आया है।

मामला–1

इसी तरह के एक मामले में एक रिटायर्ड इंजीनियर को ताइवान से आए पार्सल के बारे में कॉल आया। कॉल करने वाले व्यक्ति ने बताया कि उसके नाम वाला पार्सल मुंबई एयरपोर्ट पर रोक लिया गया है। उसने बताया कि पार्सल के अंदर ड्रग्स मिले हैं। कॉल करने वाले ने आगे कहा कि मुंबई पुलिस क्राइम ब्रांच के अधिकारी उससे बात करेंगे। शिकायत के अनुसार पीड़ित को वीडियो कॉल के लिए स्काइप डाउनलोड करने के लिए कहा गया। जैसे ही बुजुर्ग ने इस कॉल को अटेंड किया और उसके निर्देशों का पालन किया, उसके बाद ठग ने उनसे जुड़ी तमाम जानकारी पूछी। फिर जो जानकारी बुजुर्ग ने दी, उसका इस्तेमाल करके उन्हें धमकाया गया। साथ ही कहा गया कि उनके नाम पर ताइवान से एक पार्सल आया है जिसके अंदर तमाम प्रतिबंधित दवाइयां है इस वजह से उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की जाएगी और उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

फिर बुजुर्ग से बोला गया कि अगर वो बचना चाहते हैं तो सबसे पहले वो खुद को कमरे में बंद कर लें। अपने मोबाइल या लैपटॉप का कैमरा ऑन कर लें। जब तक वो कैमरे के सामने रहेंगे तब तक सेफ रहेंगे नहीं तो उन्हें पुलिस भेज कर गिरफ्तार कर लिया जाएगा। उनके परिवार के दूसरे सदस्य भी खतरे में आ जाएंगे। इसके बाद बुजुर्ग घबरा गए। थोड़ी ही देर में उनके सामने स्क्रीन पर एक पुलिस वाला नजर आया जो खुद को मुंबई पुलिस का अधिकारी बता रहा था। फिर उसने मदद करने के नाम पर बुजुर्ग के खातों में जमा पैसे की जानकारी ली। कॉल पर आए इस फर्जी पुलिस अधिकारी ने बुजुर्ग से कहा कि वो अपने खातों में जमा रकम दूसरे खातों में ट्रांसफर कर दें ताकि जांच के बाद उन्हें सुरक्षित वापस कर

दी जाए। इस पूरी घटना का खुलासा तब हुआ जब बुजुर्ग को एहसास हुआ कि वो ठगी का शिकार हो चुके हैं। पुलिस के अधिकारियों के मुताबिक इसके बाद रिटायर्ड इंजीनियर को आठ घंटे तक डिजिटल अरेस्ट पर रहने के लिए मजबूर किया गया। इसके बाद साइबर ठगों ने उनके कई खातों में से 10.3 करोड़ रूपए ट्रांसफर करने के लिए मजबूर किया। इस घटना का शिकार होने के बाद पीड़ित ने अपने परिवार को अपराध के बारे में बताया।

डिजिटल अरेस्ट को कैसे पहचानें?

डिजिटल अरेस्ट की पहचान करने के लिए सतर्कता की जरूरत है। अगर आपके पास किसी अनजान नंबर से कोई फोन या वॉट्सएप कॉल आती है तो रिसीव करते वक्त पुलिस की एडवाइजरी को याद रखें जो इस प्रकार है–

- पुलिस अधिकारी कभी भी अपनी पहचान बताने के लिए वीडियो कॉल नहीं करेंगे।
- पुलिस अधिकारी कभी भी आपको कोई एप डाउनलोड करने के लिए नहीं कहेंगे।
- पहचान पत्र, एफआईआर की कॉपी और गिरफ्तारी वारंट ऑनलाइन साझा नहीं किया जाएगा।
- पुलिस अधिकारी कभी भी वॉयस या वीडियो कॉल पर बयान दर्ज नहीं करते हैं।
- पुलिस अधिकारी कॉल पर पैसे या पर्सनल जानकारी देने के लिए डराते–धमकाते नहीं हैं।
- पुलिस कॉल के दौरान अन्य लोगों से बात करने से नहीं रोकती है।
- कानून में डिजिटल अरेस्ट करने का कोई प्रावधान नहीं है

ठगी से बचने के लिए जागरूक होना जरूरी

इस मामले में साइबर एक्सपर्ट का कहना है कि साइबर ठग लगातार नए–नए तरीके अपना रहे हैं. लोगों को डर का माहौल बनाकर ठग रहे हैं। इस तरह की ठगी से बचने के लिए लोगों को जागरूक होना चाहिए। किसी भी अनजान कॉल पर अपनी पर्सनल और बैंकिंग जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए। पुलिस ने भी लोगों को सलाह दी है कि किसी अनजान व्यक्ति या कॉल से सावधान रहें। साइबर ठग डिजिटल अरेस्ट के जरिए करोड़ों रूपए का चूना लगा रहे हैं। डिजिटल अरेस्ट की बढ़ती घटनाओं पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी चिंता जता चुके हैं। साथ ही इस तरह के स्कैम से सतर्क रहने के लिए देशवासियों को आगाह किया।

ठगी से बचने के लिए उपाय

भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (सीईआरटी–इन) ने लोगों को डिजिटल अरेस्ट से बचाने के लिए एडवाइजरी जारी की है। सीईआरटी ने बताया डिजिटल अरेस्ट से कैसे बच सकते हैं...

सतर्क रहे, सुरक्षित रहें

कोई भी सरकारी जांच एजेंसी आधिकारिक संचार के लिए वॉट्सएप या स्काइप जैसे प्लेटफॉर्म्स का उपयोग नहीं करतीं। जबकि ऑनलाइन ठग इन्हीं का इस्तेमाल कर रहे हैं। शुरुआत में शक होने पर तुरंत फोन काट दें। फोन पर लंबी बातचीत करने से बचें।

इग्नोर करें

साइबर ठग डिजिटल अरेस्ट के लिए पीड़ितों को फोन कॉल, ई–मेल से संदेश भेजते हैं। बताते हैं कि आप मनी लॉन्ड्रिंग या चोरी जैसे अपराधों के तहत जांच के दायरे में हैं। ऐसे किसी कॉल और ई–मेल पर ध्यान न दें।

घबराएं नहीं

साइबर ठग कॉल पर बातचीत के दौरान गिरफ्तारी या कानूनी कार्रवाई की धमकी देते हैं। उनकी बातचीत और फर्जी तर्कों से घबराहट हो सकती है, लेकिन घबराना नहीं है। न ही बैंक डिटेल व यूपीआई आईडी शेयर करनी है।

जल्दबाजी करने से बचें

कॉल या वीडियो कॉल पर ठगों के सवालों और तर्कों का जवाब देने में जल्दबाजी न करें। शांत रहें, सिर्फ सुनें। अनजान नंबरों से आए सामान्य और वीडियो कॉल पर भी कोई निजी जानकारी न दें।

साक्ष्य जुटाएं

कॉल के स्क्रीनशॉट या वीडियो रिकॉर्डिंग सेव करें ताकि आवश्यक होने पर उपयोग कर सकें।

चक्षु पोर्टल पर शिकायत करें

व्हाट्सएप पर आने वाली फर्जी कॉल्स और मैसेज को रोकने के लिए संचार मंत्रालय ने 'चक्षु'(Chakshu) नाम से एक पोर्टल लॉन्च किया है। इस पर स्पैम कॉल, मैसेज, वॉट्सएप पर आने वाली फर्जी कॉल्स व मैसेज की शिकायत कर सकते हैं।

डिजिटल युग में, जहां तकनीकी प्रगति ने हमारे जीवन को सरल बनाया है, वहीं इसके नकरात्मक पक्ष, जैसे साइबर अपराध और ''डिजिटल अरेस्ट,'' ने नई चुनौतियों को जन्म दिया है। डिजिटल अरेस्ट साइबर अपराध का एक नया और खतरनाक रूप है, जो लोगों को मानसिक और आर्थिक रूप से नुकसान पहुंचा रहा है। इसके प्रभावों को समझते हुए, हमें साइबर सुरक्षा के प्रति अधिक सतर्क और जागरूक होने की आवश्यकता है। तकनीकी नवाचारों का लाभ उठाते हुए, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इन्हें सकारात्मक दिशा में उपयोग किया जाए। एक जिम्मेदार डिजिटल नागरिक बनने की दिशा में कदम बढ़ाना ही इन अपराधों से बचाव और सुरक्षित भविष्य का निर्माण करने का एकमात्र उपाय है।

वरुण भारद्वाज
उप प्रबंधक (मानव संसाधन–राजभाषा)
भारतीय कंटेनर निगम

''सिर ऊँचा रखना''

तुम हो वीर धरा के, सिर ऊँचा रखना,
डगमग हो पथ, आँधी हो या तूफाँ, तुम मत झुकना.
तुम हो वीर धरा के, सिर ऊँचा रखना,
है प्रमाण यह प्रकृति धरा, ये याद तुम्हें है रखना,
नदी हो, माँ हो, पर्वत माला, सरिस हृदय प्रिय बनना,
ताड़ वृक्ष हो, पद हो ऊँचा सदा ही इनसे बचना.
सरिस ताड़ पद वालों से किंचित फल इच्छा मत रखना,
अनुज हृदय अग्रज रखना, सिर झुकने मत देना,
तुम हो वीर धरा के, सिर ऊँचा रखना,
है धन्य जहाँ, रणवीर तुम्हारा जग में आना,
है कहाँ असंभव असुर निजों से लड़ना.
चीख रहा है द्वापर, गीता का है कहना,
तुम हो अर्जुन, तुम अभिमन्यु साथ सत्य के चलना,
एक विजय तो एक अमर है, किंचित नहीं है डरना,
दोनों ही है लक्ष्य वीर का, रणभूमि का गहना,
तुम हो वीर धरा के, सिर ऊँचा रखना,
है कलयुग की यही कहानी, राणाप्रताप है बनना,
सूखी रोटी या हो घास, लक्ष्य अडिग तुम रखना,
शत्रु पराजय निश्चय कर, सदा ही आगे बढ़ना,
तुम हो वीर धरा के, सिर ऊँचा रखना,
मन के जीते जीत, मन के हारे हार, है अनुज कवि का कहना,
कर लाल रक्त रणभूमि को, धड़ को जीवित रखना,
कटा के सिर माँ के चरणों में, शत्रु लहू को चखना,
तुम हो वीर धरा के, सिर ऊँचा रखना,
चिंगारी है अनुज हृदय में, परिवर्तन ज्वाला में करना,
शत्रु सोच कर भस्म वहीं, जग उजियारा करना,
लहू कलंकित बूँद मात्र भी, धरा को वंचित रखना,
कर पान लहू कलंकित का, शंकर सरिस, है बनना,
तुम हो वीर धरा के, जग उजियारा करना,
तुम हो वीर धरा के, सिर ऊँचा रखना,
है इतिहास गवाँ धरती का, नहीं है कायर बनना,
कायर, लोमड़ जयचंदों को पीछे से है लड़ना,
है ललकार वीर अनुज का, दम है तो छाती से लड़ना,
है स्वीकार पराजय ऐसी, नहीं है कायर बनना,
हो जीत मुबारक शत्रु तुम्हें, नहीं है ऐसे लड़ना,
है रणवीर धरा के मतवाले, अभिमान हमारा गहना,
मिट जाएंगे, कट जाएंगे, लहू बहा देंगे हम अपना,
नहीं झुकेंगे, नहीं रुकेंगे, यही किरण का सपना,
तुम हो वीर धरा के, सिर ऊँचा रखना,
तुम हो वीर धरा के, सिर ऊँचा रखना।

अनुज कुमार सिंह
हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

"एक सबक इंसानियत का"

कभी–कभी हम और आप कुछ चीजों को या कुछ लोगों को नजरंदाज कर जाते हैं क्योंकि हमें उनसे किसी तरह का लगाव, किसी तरह की उम्मीद नहीं रहती या किसी तरह की सकारात्मक सोच या उर्जा मिलने की संभावना कम ही रहती है, पर हमारी उनके प्रति सोच कभी कभी एकदम उलटी पड़ जाती है, एक ऐसे ही छोटे से वाकये को कहानी में ढालने की कोशिश कर रहा हूँ।

भोपाल से नर्मदापुरम बस के सफर के दौरान शाम के समय भीड़भाड़ थोड़ा ज्यादा हो जाती है, ज्यादातर सवारियों को बस में बैठने की जगह नहीं मिल पाती है, इन सवारियों में ऑफिस में काम करने वाले, फैक्टरियों में काम करने वाले, अध्यापक, विद्यार्थी तथा दिहाड़ी मजदूर भी सफर करते हैं।

एक दिन बस में सफर के दौरान एक उम्रदराज औरत ने बड़े सम्मानपूर्वक आवाज दी, "आ जाइए मैडमजी, आप यहाँ बैठ जाइए" कहते हुए उसने अपनी सीट पर उनको बैठा दिया, खुद वो गरीब–सी दिखने वाली औरत बस में खड़ी हो गई। मैडम ने दुआ दी, "बहुत–बहुत धन्यवाद बहन, आज सच में बहुत थकी हुई थी और खड़े रह पाना बहुत मुश्किल हो रहा था।"

उस गरीब महिला के चेहरे पर एक सुकून भरी मुस्कान फैल गई। कुछ देर बाद महिला के पास वाली सीट खाली हो गई लेकिन महिला ने एक और महिला को, जो एक छोटे बच्चे के साथ यात्रा कर रही थी और बड़ी मुश्किल से बच्चे को संभाल पा रही थी, को सीट पर बिठा दिया। अगले पड़ाव पर बच्चे के साथ महिला भी उतर गई, सीट खाली हो गई, लेकिन उस नेकदिल महिला ने बैठने का लालच नहीं किया और बस में चढ़े एक कमजोर बूढ़े आदमी को बैठा दिया जो अभी–अभी बस में चढ़ा था।

नर्मदापुरम पहुँचते–पहुँचते बस में अब गिनी–चुनी सवारियां ही रह गईं थीं, अब उस अध्यापिका ने उस महिला को अपने पास बुलाकर बिठाया और पूछा, "सीट कितनी बार खाली हुई है लेकिन आप खुद न बैठकर लोगों को ही बैठाते रहीं, खुद नहीं बैठीं, क्या बात है?"

महिला ने कहा, "मैडमजी", मैं एक मजदूर हूं, मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं कि मैं कुछ दान कर सकूं तो मैं क्या करती हूं कि कहीं रास्ते में कोई पत्थर दिखे तो उस पत्थर को उठाकर एक तरफ कर देती हूं, कभी किसी जरूरतमंद को पानी पिला देती हूं, कभी बस में किसी के लिए सीट छोड़ देती हूं, फिर जब सामने वाला मुझे दुआएं देता है तो मैं अपनी गरीबी भूल जाती हूं। दिन भर की थकान दूर हो जाती है और तो और, जब मैं दोपहर में रोटी खाने के लिए बाहर बेंच पर बैठती हूं ना, तो ये पंछी–चिड़ियां पास आ के बैठ जाते हैं, तब उनको रोटी डाल देती हूं छोटे–छोटे टुकड़े करके और जब वे खुशी से चिल्लाते हैं तो उन भगवान के जीवों को देखकर मेरा पेट भर जाता है। हमारे पास पैसा–धेला (रुपया–पैसा) नहीं है तो न सही, सोचती हूं दुआएं तो मिल ही जाती हैं न मुफ्त में, फायदा ही है ना और हमने साथ लेकर भी क्या जाना है यहां से"।

उस दिन महोदया के पास बोलने के लिए कुछ नहीं था वह अवाक रह गई, एक अनपढ़ दिखने वाली साधारण सी महिला जीवन का इतना बड़ा सबक जो पढ़ा गई थी उन्हें।

श्याम यादव
सहायक प्रबंधक(तकनीकी)
भारतीय कंटेनर निगम

सफलता हमेशा अंतिम नहीं होती, वैसे ही
जैसे असफलता हमेशा घातक नहीं होती।

असली उजाला

बरसात थम चुकी थी। मिट्टी की गंध पूरे झींगुरपुरा गाँव में फैल रही थी। आसमान साफ था, खेतों में धान की बालियाँ झूम रही थीं और लोग फसल कटने की खुशी में गुनगुना रहे थे। दीवाली आने वाली थी यह वह वक्त होता है कि जब गाँव का हर घर, चाहे कितना ही साधारण क्यों न हो, किसी मंदिर की तरह जगमगा उठता है।

लेकिन इस बार झींगुरपुरा में कुछ और भी होने वाला था। दीवाली के साथ–साथ प्रधान के चुनाव भी आने वाले थे। गाँव के किनारे बबूल के पेड़ के नीचे रामवती का एक मिट्टी का घर था, रामवती तीस साल की थी, पर उसके चेहरे की लकीरें पचास की लगती थीं।

पति बिरजू तीन साल पहले शहर में एक दुर्घटना में चल बसे थे। तब से उसके जीवन में दीये तो थे, पर उनमें उजाला नहीं था उसका बारह साल का बेटा मंगू ही उसकी दुनिया था।

वो रोज स्कूल जाता, लौटकर मिट्टी से दीये बनाता और कहता, माँ, इस बार हम बहुत सारे दीये जलाएँगे न? रामवती बस सिर पर हाथ फेरती और उसे नाराज ना करने के उद्देश्य से कहती हाँ बेटा, देखेंगे, पर उसके स्वर से थकान और उम्मीद भी अब बुझने लगी हो ऐसा प्रतीत होता था।

इसी बीच गाँव में एक नई स्कूल टीचर आई संतोष शहर में पढ़ी लिखी, पर गाँव के संस्कारों से जुड़ी हुई। संतोष ने गाँव आते ही देखा कि लोग मेहनती तो हैं, पर असमानता, पुरानी सोच और थोड़ी सी राजनीति ने सबको बाँट रखा है। गाँव के केंद्र में दो गुट थे, एक तरफ प्रधान रामजी लाल, जो पिछले पंद्रह सालों से कुर्सी पर थे। दूसरी तरफ कुछ युवा किसान, जो बदलाव चाहते थे। संतोष ने सोचा अगर त्योहार लोगों को जोड़ सकता है, तो राजनीति क्यों नहीं? और बस यहीं से शुरू हुई झींगुरपुरा की "असली उजाला" की असली कहानी।

एक दिन चौपाल में संतोष ने बैठक बुलाई। उसने कहा कि हम सब, एक नयी पहल करते हैं कि इस बार दीवाली गाँव की नहीं बल्कि पूरे झींगुरपुरा परिवार की होगी। हर घर पाँच दीये अपने लिए और पाँच दीये किसी दूसरे के लिए जलाएगा। लोगों ने हँसकर कहा, कि मैडम, पाँच दीये अपने लिए और पाँच दीये पड़ोसी के लिए ये कौन सी दीवाली हुई, संतोष ने मुस्कुराकर जवाब दिया, कि जब एक दूसरों के घरों में हम रौशनी करेंगे तभी असली उजाला एक दूसरों के दिलों में आएगा।

कुछ बुजुर्गों ने सहमति में सिर हिलाया। और तभी भीड़ में खड़ी रामवती ने छोटे घूँघट की आड़ मैं से पहली बार हाथ उठाया और बोली मैं अपने बेटे के बनाए दीये सबको दूँगी। रामवती का चेहरा वर्षों बाद आत्मविश्वास से चमक उठा था।

मंगू मिट्टी के दीये बनाने में लग गया। सुबह स्कूल, दोपहर में घर के काम में माँ की मदद, और शाम होते ही दीयों की कतार। उसकी छोटी उँगलियाँ मिट्टी से सनी रहतीं, पर चेहरे पर मुस्कान होती। धीरे–धीरे गाँव के बच्चे भी उसके साथ जुड़ गए। किसी ने कहा, हम भी मिट्टी लाएँगे किसी ने कहा, हम रंग भरेंगे। और देखते ही देखते उसके छोटे से घर में पाँच सौ से अधिक दीये तैयार हो गए। संतोष बोली, मंगू के दीये इस बार सिर्फ झींगुरपुरा ही नहीं, बल्कि हम आसपास के गाँवों में भी बेचेंगे। इससे गाँव की औरतों को भी काम मिलेगा। रामवती की आँखों में आँसू आ गए। उसने कहा, मैडम, आपने तो हमारे गाँव की मिट्टी को सोना बना दिया। दीवाली की शाम झींगुरपुरा कुछ अलग लग रहा था। हर घर, हर आँगन, हर गलियारा, चौपाल रौशनी से भरा था। बच्चे पटाखे जला रहे थे, और औरतें अपने आँगन में दीये सजा रही थीं। दीवाली पूजन के बाद मिठाई बाटने के लिए गाँव के बीच बने चौपाल पर संतोष खड़ी थी। सामने रामजी लाल और बाकी लोग भी थे। संतोष ने कहा आज की दीवाली राजनीति की नहीं, एकता की है। जो दीया हम और आप जलाते हैं, वो किसी घर का नहीं, बल्कि पूरे गाँव का अँधियारा दूर करके सबको रास्ता दिखाता है।

रामवती ने मंगू का हाथ थामते हुए कहा, देख बेटा, अब हमारा घर और गाँव सच में जगमगा उठा है। दीवाली के हफ्ते भर बाद प्रधान के चुनाव हुए। इस बार गाँव में अलग माहौल था लोग वादों पर नहीं, काम पर बात कर रहे थे। संतोष ने खड़े होकर कहा, अगर मैं जीतूँ, तो हर महिला के दरवाजे तक शिक्षा और काम को लेकर वो जाएगी। और फिर जब नतीजा आया संतोष ने लोगों और महिलाओं के समर्थन से जीत हासिल की। पहली बार गाँव ने एक शिक्षित महिला प्रधान चुनी थी। संतोष ने शपथ लेते ही कहा, अब झींगुरपुरा में त्यौहार केवल मिठाई का नहीं, बल्कि शिक्षा और समानता का भी होगा, हर औरत प्रधान की साथी बनेगी, हर बच्चा पढ़ेगा, हर घर की समस्या पूरे गाँव की समस्या होगी और हम सब मिलकर उसका हल निकालेंगे, एक साल बीता और अब झींगुरपुरा के पास अपनी महिला सहकारी समिति थी। औरतें

मंगू जैसे बच्चों के बनाए दीये, हस्तशिल्प और मिठाइयाँ शहर भेजती थीं।

रामवती उस समिति की अध्यक्ष थी। रामजी लाल, जो पहले विरोधी थे, अब संतोष के साथ गाँव की योजनाओं में काम करने लगे थे। उन्होंने चौपाल में कहा, "हमारी राजनीति अब सेवा बन गई है। संतोष बिटिया ने हमें सिखाया कि विरोध से नहीं, सहयोग से गाँव बदलता है। मंगू अब स्कूल में सबसे आगे रहता, और अपने दोस्तों से कहता, जब हम सब मिलकर काम करेंगे, तब झींगुरपुरा सबसे रोशन गाँव बनेगा।"

अगली बार मकर संक्रांति पर गाँव ने एकता मेले का आयोजन किया।

हर जाति, हर उम्र के लोग साथ आए। संतोष ने सब से कहा, कि जब तक हम एक दूसरे के त्यौहार को अपना नहीं मानेंगे तब तक सही मायनों में हमारी दीवाली अधूरी रहेगी।

साल की आखिरी शाम को संतोष चौपाल में बैठी थी। रामवती और बाकी औरतें पास आकर बोलीं, मैडम, आपने हमारे जीवन में दीये जलाए हैं।

संतोष मुस्कुराई और बोली, नहीं दीदी, दीये तो आप सबने खुद जलाए हैं। मैंने तो बस बाती लगाई थी। सूरज डूब रहा था, पर गाँव अब भी रौशनी से भरा था। मंगू आकर बोला, मैडम, इस बार शहर वाले हमारे दीये और माँग रहे हैं। संतोष ने मुस्कुराते हुए कहा, क्यों नहीं बेटा? जब गाँव का दिल उजाला बाँटता है, तो शहर और गाँव खुद रौशन हो जाते हैं और सही मायने में यही असली उजाला है।

हरबान सिंह
वरिष्ठ प्रबन्धक (मानव संसाधन–प्रशासन)
हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

क्या ये कलयुग के अंत की शुरूआत है

जल भरा धरती पर, अग्नि की गगन में बरसात है,
क्या ये कलयुग के अंत की शुरूआत है।

पिघल रही बर्फ रूसी गोलों से, यहूदीयों की देशभक्ति भारी है,
जिद्द, हठ लिए खड़ा, आतंकी, दुश्मन सेना का प्रभारी है।
सपने टूटे, घर उजड़ा, बच्चों के लिए युद्ध के ये हालात हैं,
क्या ये कलयुग के अंत की शुरूआत है।।

स्वर्ग में पहलगाम रचाया, उसमें आतंकी ने कोहराम मचाया,
धर्म पूछकर, चुन–चुन कर माथे का सिंदूर मिटाया।
अपनी धरती, अपने धर्म की क्या खूब खूनी मुलाकात है,
क्या ये कलयुग के अंत की शुरूआत है।।

कोविड की नाकाबंदी, ब्रह्मोस की जुगलबंदी, सब ये बच्चे देख रहे हैं,
प्रोत्साहना–अवहेलना, सच झूठ सब ऑनलाइन फेंक रहे हैं।
विकास, प्रचार और मानवता की क्या खूब डिजिटल प्रभात है,
क्या ये कलयुग के अंत की शुरूआत है।।

राजनीति से कूटनीति, मानवता से दानवता, अब साफ नजर आती है,
लंका, बंगाल, नेपाल से लंदन तक जेन–जी की लहर जाती है।
युद्धपोतों की गूंज, प्राकर्तिक कहर नई पीढ़ी के लिए बस यही सौगात है,
क्या ये कलयुग के अंत की शुरूआत है।।

यतिश कुमार
मुख्य प्रबन्धक (सूचना प्रणाली)
इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड

अजनबी शहर की जानी-पहचानी खामोशी

जीवन में कुछ अनुभव ऐसे होते हैं जो केवल घटनाएँ नहीं रहते। बल्कि हमारे व्यक्तित्व की नींव बन जाते हैं। ऐसा ही एक अनुभव था– **पहली बार अकेले किसी बड़े शहर में जाना।** यह यात्रा बाहर से एक शहर की यात्रा लग सकती है, लेकिन भीतर से यह आत्मा की यात्रा बन जाती है– निर्णयों, डर, आशाओं और नए रिश्तों की एक अनकही कहानी।

मैं एक साधारण गाँव में पला–बढ़ा, जहाँ रिश्ते जमीन की तरह ठोस थे, और भावनाएँ पानी की तरह स्वच्छ। जब बारहवीं के बाद मुझे दिल्ली के एक प्रतिष्ठित कॉलेज में प्रवेश मिला, तो पूरे गाँव में जैसे उत्सव का माहौल बन गया। माँ के चेहरे पर गर्व की झलक थी, लेकिन उनकी आँखों में चिंता भी थी, जिसे वह लगातार छुपाने की कोशिश कर रही थी।

जाने के दिन माँ ने एक छोटा टिफिन पकड़ाया– घर की रोटियाँ, थोड़ा अचार और साथ ही एक रुमाल में बाँधा हुआ तुलसी का पत्ता। बोलीं, "कभी डर लगे तो इसे देख लेना, मैं यहीं हूँ।" उस वक्त मैं कुछ नहीं बोल पाया। बस चुपचाप उनके हाथ को पकड़े रहा।

दिल्ली पहुँचना जैसे किसी नए संसार में प्रवेश करना था। चारों ओर भीड़, शोर, तेज भागती जिंदगी और अनगिनत चेहरे। हॉस्टल में जिस कमरे में मुझे ठहराया गया, वहाँ की दीवारें चुप थीं, और खिड़की से झाँकती हुई जिंदगी अपरिचित। उस रात, जब सब सो चुके थे, मैं चुपचाप माँ की दी हुई रोटियों का डिब्बा खोलकर बैठा। हर निवाले के साथ आँखें भरती रहीं। खाना तो खा रहा था, पर भीतर कुछ और पचाने की कोशिश कर रहा था– अकेलापन।

शुरुआत में सब कुछ कठिन लगा। भाषा, माहौल, लोग–सब कुछ अजनबी। मेरी हिंदीभाषी पृष्ठभूमि कई बार मेरे लिए झिझक का कारण बन जाती। क्लास में जब लोग धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलते, तो मैं अपनी चुप्पी में सिमट जाता। लेकिन समय के साथ मैंने सीखा आत्म–सम्मान भाषा का मोहताज नहीं होता। एक दिन जब मैंने पूरे आत्मविश्वास के साथ एक

प्रस्तुति हिंदी में दी, तो सहपाठियों की तालियों ने मेरी आत्मा को वह संबल दिया, जिसकी मुझे वर्षों से तलाश थी।

धीरे–धीरे शहर मुझे अपना लगने लगा, लेकिन मन के किसी कोने में गाँव की गंध अब भी बसी रही। माँ की रसोई की खुशबू, पिताजी का चुपचाप समझाना, और शाम की तुलसी में दीया लगाने की आदत–ये सब शहर की रौशनी में कहीं गुम से हो गए थे। पर जब कभी अकेले बैठता, तो वे सारी स्मृतियाँ जैसे मेरे चारों ओर आ बैठतीं।

कभी–कभी लगता, इस दौड़ में मैं बहुत आगे आ गया हूँ, लेकिन वहीं रुक कर सोचता–क्या मैं अब भी वही हूँ, जो उस दिन पहली बार ट्रेन में बैठा था? शायद नहीं। अब मैं बदल गया हूँ। अब मैं 'अकेला' नहीं, 'स्वतंत्र' हूँ। अब मुझे शहर की खामोशी डराती नहीं, समझ में आती है।

अब जब वर्षों बाद गाँव लौटता हूँ, तो माँ अब भी वही बात पूछती हैं–"कितनी रोटियाँ खाएगा?" और मैं मुस्कराते हुए कहता हूँ, "जितनी तुम प्यार से बना सको।" माँ हँसती हैं, पर उनकी आँखें मुझे बताती हैं कि वे जानती हैं–उस रोटी के साथ मैं अपनी जड़ें भी खा रहा हूँ।

अब जब शहर मेरा ठिकाना बन गया था, तब भी भीतर कुछ था जो हर रोज मुझे भीतर से कुरेदता था। सुबह मेट्रो की भीड़ में धकेले जाते हुए जब किसी बुजुर्ग को जगह नहीं मिलती, या कोई व्यक्ति खाली चेहरा लेकर फोन में गुम होता, तो मन सोचता–क्या यही है वह 'अवसरों का शहर'? जहाँ लोग तो मिलते हैं, लेकिन रिश्ते नहीं।

कॉलेज की पढ़ाई पूरी होने के बाद नौकरी मिली। एक सरकारी कंपनी में काम शुरू किया। धीरे–धीरे इस शहर में कुछ अपने से लोग भी मिले–वो दोस्त, जो आधी रात को खिचड़ी लेकर आ जाते, जब मैं बीमार होता; वो सहकर्मी, जो पूछते, "अरे यार, आज उदास क्यों है?" और वो छोटी–छोटी बातें, जो रिश्तों को जीवन देती हैं।

एक बार ऑफिस की मीटिंग में जब हिंदी में प्रस्तुति देने का प्रस्ताव रखा, तो कई लोगों ने कहा–"क्या जरूरत है? सब अंग्रेजी में समझते हैं।" लेकिन मैंने कहा, "हमें अपनी भाषा में सोचना आता है, अभिव्यक्ति भी उसी में सबसे सच्ची होगी।"

उस दिन मैंने जाना कि हिंदी बोलना कोई बाधा नहीं, एक बल है–जो हमारे भीतर की सच्चाई को बिना संकोच सामने लाता है।

शहर के रास्ते अब पहचाने लगते हैं, लेकिन गाँव की पगडंडियाँ अब भी याद हैं। कभी–कभी ऑफिस से लौटते समय जब ऑटो धीमे चलता है, और खिड़की से बाहर धूप का रंग थोड़ा पीला पड़ने लगता है, तो मन करता है कि उतर जाऊँ, किसी पेड़ के नीचे बैठकर माँ की तरह किसी के हाथ की रोटियाँ खाऊँ। लेकिन फिर उसी शाम ऑफिस से एक मेल आता है– "कल सुबह प्रजेंटेशन है।" और मैं फिर दौड़ने लगता हूँ।

पर अब यह दौड़ सिर्फ नौकरी या पैसे की नहीं है, यह पहचान की है। मैं जानता हूँ, मैं उस मिट्टी से आया हूँ, जहाँ आत्मा की सादगी में जीवन बसता है, और उस शहर में हूँ जहाँ सपनों की ऊँचाई मापी जाती है। दोनों के बीच संतुलन बनाना ही मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

शहर ने बहुत कुछ सिखाया–चुप रहना, मुस्कराना, हार को छुपाना और फिर से खड़ा होना। लेकिन गाँव ने जो सिखाया था– सच्चाई, सादगी, और रिश्तों की गहराई– वह सब अब भी मेरे साथ है।

कहने को तो यह एक शहर जाने की घटना थी, लेकिन असल में यह एक **आत्मयात्रा** थी। उस दिन स्टेशन से चला था एक लड़का, और लौटा एक ऐसा इंसान, जिसे अब अपने भीतर की आवाज सुनाई देती है।

"इस यात्रा में मैंने जाना कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि पहचान की नींव है। जब मैंने खुद को हिंदी में अभिव्यक्त करना सीखा, तभी मैंने खुद को पहचानना शुरू किया।"

राघवेंद्र सिंह
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
एमएसटीसी लिमिटेड

दिहाड़ी मजदूर

हर एक रोज है जारी, जीने की जंग
कैसी उनकी खुशी और कैसा उमंग?
हर एक रोज है जारी, जीने की जंग।

सुबह बीती, तो हुई शाम की चिंता
शाम गुजरी तो हुआ हाथ सुबह का तंग
हर एक रोज है जारी, जीने की जंग
कैसी उनकी खुशी और कैसा उमंग?
हर एक रोज है जारी, जीने की जंग।

चार–छह बच्चे, खुद और लुगाई,
न नौकरी न चाकरी
न दिन की कोई निश्चित कमाई ता पर,
समाज में इज्जत भरी हो जीने का ढंग
हर एक रोज है जारी, जीने की जंग
कैसी उनकी खुशी और कैसा उमंग?
हर एक रोज है जारी, जीने की जंग।

शिक्षा–स्वास्थ्य उनके हैं सब भगवान भरोसे
दिन–प्रति दिन वो कैसे भी परिवार को पोसे,
छुट्टी जो एक भी हो कोई सरकारी
चुल्हा न जले, न बने रोटी–तरकारी
बीते मुंह निहारत अँधेरी रात संग–संग
हर एक रोज है जारी, जीने की जंग
कैसी उनकी खुशी और कैसा उमंग?
हर एक रोज है जारी, जीने की जंग।

कभी उधारी तो कभी कुछ नकदी
कभी कोई सेठजी, गारीओ बक दी
दिहाड़ी मजदूरों का रहता, नित जीवन तंग–तंग
हर एक रोज है जारी, जीने की जंग
कैसी उनकी खुशी और कैसा उमंग?
हर एक रोज है जारी, जीने की जंग
हर एक रोज है जारी, जीने की जंग।

सुनील कुमार
महाप्रबंधक(सतर्कता)
इरकॉन इंटरनेशनल

कारगिल उड़ान

पवन हंस ने भारतीय सेना को द्रास, कारगिल और बटालिक जैसे दुर्गम क्षेत्रों में विमान रखरखाव सहायता प्रदान की है। इस दौरान, पवन हंस के हेलीकॉप्टरों ने 9,000 से 17,000 फीट की ऊंचाई वाले दुर्गम क्षेत्रों में लैंडिंग की।

हमने जिन चुनौतियों का सामना किया, उनमें अप्रवेशनीय और कठोर पहाड़ी इलाका, कड़ाके की ठंड, और दिन में भी –15 डिग्री सेल्सियस तक गिरता तापमान शामिल था। सभी हेलीपैड और लैंडिंग ग्राउंड पहाड़ों के बीच या पहाड़ियों की चोटियों पर थे, और कई तो अंतरराष्ट्रीय सीमा के बिल्कुल पास स्थित थे।

हमें यह सुनिश्चित करना होता था कि सूर्योदय के 3 से 4 घंटे के भीतर उड़ान पूरी हो जाए, क्योंकि उसके बाद तेज हवाएं और बढ़ते तापमान से डेंसिटी एल्टीट्यूड (घनत्व ऊंचाई) बढ़ जाती, जिससे हेलीकॉप्टर की उठान क्षमता और पेलोड ले जाने की क्षमता प्रभावित होती।

उड़ान की तैयारी सूर्योदय से पहले ही शुरू हो जाती थी। इसके लिए एयरक्राफ्ट मेंटेनेंस इंजीनियर को हेलीकॉप्टर को उड़ान के लिए कम से कम 2 घंटे पहले तैयार करना होता था। इसलिए हमारी मेंटेनेंस टीम सुबह 4:00 बजे अंधेरे में ही ड्यूटी पर पहुंच जाती थी। पूर्व उड़ान निरीक्षण के बाद हेलीकॉप्टर सुबह 5:30 बजे उड़ान के लिए तैयार हो जाता था।

इन मिशनों को दो पायलटों के साथ (डुअल पायलट मोड) में उड़ाया जाता था, क्योंकि इतनी ऊंचाई पर ऑक्सीजन की कमी होती है। दोनों पायलटों को लगातार ऑक्सीजन सप्लाई दी जाती थी।

हर सुबह, हमारे भारतीय सैनिक हेलीपैड से बर्फ साफ करते थे, ताकि हेलीकॉप्टर लैंड कर सके। इस कार्य में भारी परिश्रम लगता था, क्योंकि वह काम ऊंचे इलाकों, सर्द हवाओं, शून्य से नीचे तापमान, और कम ऑक्सीजन के बीच करना होता था।

कुछ हेलीपैड पर हमें सिर्फ 1 घंटे का समय मिलता था सूर्योदय के बाद, जिसमें हमें अपना मिशन – यानी सेना को हवाई सहायता – पूरा करना होता था। इसलिए प्रत्येक उड़ान के लिए बहुत सटीक योजना बनानी पड़ती थी, जिसमें ईंधन की मात्रा, पेलोड, और प्रत्येक हेलीपैड तक पहुंचने में लगने वाला समय सावधानीपूर्वक गिना जाता था।

जब हम यह सहायता प्रदान कर रहे थे, तब हमें इस बात का एहसास हुआ कि यह सेवा कितनी अमूल्य है। यह अनुभव हमें कृतज्ञता, विनम्रता, और धन्यवाद की भावना से भर देता था– ऐसी भावनाएं जिन्हें शब्दों में कहना संभव नहीं है, केवल महसूस किया जा सकता है।

जैसे–जैसे हम इन ऊँचाइयों पर पहुंचते, हमें महसूस होता कि सच्चा सुख क्या होता है– उन सैनिकों से जुड़ाव जो हमारी प्रतीक्षा कर रहे होते। वे पूरी तरह बर्फीले परिधान में ढंके होते, फिर भी तेज और साहसी बने रहते। जब वे हेलीकॉप्टर के पास आते, तो उनके अनुशासित चाल से उनकी तैयारी और समर्पण साफ झलकता।

उनकी बर्फ से ढकी दाढ़ी और मूंछें, ठंड से नीले पड़े चेहरे, और उनकी चील जैसी तेज नजर, तेंदुए जैसी फुर्ती– इन सबके बीच भी, वे हमें गर्म चाय और बिस्कुट के साथ स्वागत करते थे। यही है भारतीय सेना।

कैप्टन एन.बी. गुप्ता
पवन हंस

तकनीक, विश्वास और नवाचार की मिसाल - एमएसटीसी की डिजिटल यात्रा

कभी एक समय था जब सरकारी नीलामियाँ सभागारों और दफ्तरों के बंद कमरों में हुआ करती थीं। भारी–भरकम फाइलें, दस्तावेजों के ढेर, और बोली लगाने वाले लोगों की भीड़ उस पुराने दौर का परिचित दृश्य थीं। पूरी प्रक्रिया में समय, श्रम और कभी–कभी पारदर्शिता की भी कमी होती थी। ऐसे ही समय में एमएसटीसी लिमिटेड नाम का एक संगठन उभरा, जिसने भारत में नीलामी के तौर–तरीकों को ही बदल डाला। यह कहानी सिर्फ एक सरकारी कंपनी की नहीं, बल्कि उस डिजिटल क्रांति की है जिसने भारत की ई–नीलामी प्रणाली को नया आयाम दिया।

एमएसटीसी, जो मूलतः धातु और कोयले की बिक्री के लिए स्थापित किया गया था, ने धीरे–धीरे यह समझ लिया कि आने वाला युग तकनीक का होगा। नीलामी की पारंपरिक प्रणाली में सुधार की आवश्यकता थी– बोली लगाना आसान हो, प्रक्रिया पारदर्शी हो, और हर भागीदार को समान अवसर मिले। इसी सोच से जन्म हुआ ई–नीलामी की अवधारणा का। अब खरीदारों और विक्रेताओं को न तो किसी दफ्तर के चक्कर लगाने पड़ते थे और न ही किसी बिचौलिए की आवश्यकता रहती थी। केवल एक डिजिटल प्लेटफॉर्म और इंटरनेट कनेक्शन के जरिए, कोई भी व्यक्ति देश के किसी भी कोने से नीलामी में भाग ले सकता था।

एमएसटीसी ने समय के साथ अपनी ई–नीलामी प्रणाली को और भी उन्नत बनाया। क्लाउड–आधारित सर्वर, डिजिटल हस्ताक्षर सत्यापन, ऑनलाइन भुगतान गेटवे और रीयल–टाइम बोली प्रणाली जैसी सुविधाओं ने पूरी प्रक्रिया को सुरक्षित और विश्वसनीय बना दिया। हर लेन–देन का रिकॉर्ड डिजिटल रूप में संरक्षित होने लगा, जिससे पारदर्शिता सुनिश्चित हुई। एमएसटीसी ने यह साबित कर दिया कि सरकारी क्षेत्र में भी तकनीकी नवाचार संभव है, और वह भी उत्कृष्ट स्तर पर।

धीरे–धीरे संगठन ने अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार किया। पहले जहां यह केवल धातु और कोयला नीलामी तक सीमित था, वहीं अब एमएसटीसी ने स्क्रैप, वाहन, भूमि, कृषि उत्पाद, ई–कचरा, और यहां तक कि सौर ऊर्जा उपकरणों की नीलामी तक अपनी सेवाएँ बढ़ा दीं। नगर निगमों, सार्वजनिक उपक्रमों, और राज्य सरकारों के साथ साझेदारी करते हुए एमएसटीसी ने नीलामी को हर क्षेत्र में पहुँचाया। इससे सरकारी संपत्तियों की बिक्री तेज, पारदर्शी और राजस्व–सृजन के दृष्टिकोण से अधिक प्रभावी बन गई।

एमएसटीसी की कहानी यहीं खत्म नहीं होती। संगठन ने यह महसूस किया कि देश के छोटे और मध्यम उद्योगों को डिजिटल बाजार की मुख्यधारा से जोड़ना आवश्यक है। इस सोच से जन्म हुआ उपकरण का – एक ऐसा ऑनलाइन ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म जो सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को अपने उत्पादों और सेवाओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करने का अवसर देता है। सदस्यता–आधारित इस प्लेटफॉर्म ने हजारों उद्यमों को नए खरीदारों से जोड़कर व्यापारिक अवसरों का विस्तार किया। यह पहल 'मेक इन इंडिया' और 'डिजिटल इंडिया' अभियानों की भावना को साकार करती है।

तकनीकी दृष्टि से भी एमएसटीसी निरंतर आगे बढ़ रहा है। अब संस्था कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा एनालिटिक्स, और ब्लॉकचेन तकनीक जैसी आधुनिक प्रणालियों का प्रयोग करने की दिशा में सक्रिय है। एआई के माध्यम से बोली प्रक्रिया का विश्लेषण किया जा सकता है, जबकि ब्लॉकचेन नीलामी डेटा को और अधिक सुरक्षित तथा पारदर्शी बनाता है। डेटा एनालिटिक्स से संगठन को बाजार के रुझानों को समझने और निर्णय प्रक्रिया को सशक्त करने में सहायता मिलती है।

आज एमएसटीसी न केवल एक नीलामी मंच है, बल्कि यह भारत की डिजिटल प्रगति का प्रतीक बन चुका है। इसने यह दिखाया है कि सरकारी संस्थाएँ भी नवाचार और तकनीक के माध्यम से जनता को सरल, पारदर्शी और कुशल सेवाएँ प्रदान कर सकती हैं। एमएसटीसी की यात्रा यह प्रमाणित करती है कि जब दृष्टिकोण स्पष्ट हो और उद्देश्य राष्ट्रहित का हो, तो कोई भी संस्था परिवर्तन की दिशा में अग्रणी बन सकती है। यह कहानी उस विश्वास की है जिसने तकनीक को पारदर्शिता, दक्षता और ईमानदारी का माध्यम बना दिया– और भारत को डिजिटल भविष्य की ओर अग्रसर कर दिया।

सक्षम कुमार
सहायक प्रबंधक (संचालन)
एमएसटीसी लिमिटेड

माँ मिलती सौभाग्य से

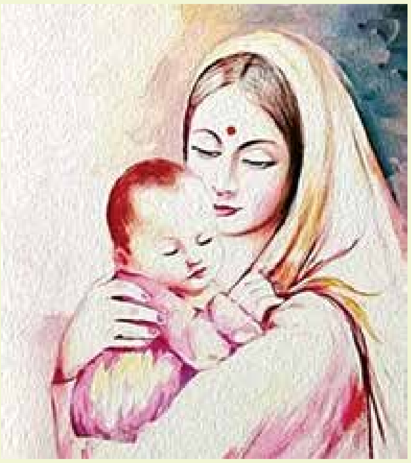

सच ही है हर किसी के नसीब में माँ की छत्रछाया नहीं होती,

वरदान के रूप में उसकी लोरियाँ नहीं होतीं,

अच्छे बुरे का फर्क समझाकर संकटों से उबारने वाली संकटमोचक नहीं होती,

गलतियों पर डांटकर संभालने वाली शिक्षिका व ममतामयी अंदाज में आलिंगन करने वाली सखा नहीं होती।

सच ही है हर किसी के नसीब में माँ की छत्रछाया नहीं होती,

स्वयं कमियों में रहकर भी अन्न का सेवन कराने वाली अन्नपूर्णा नहीं होती,

खुद गीले में सो कर अपने बच्चों को सुरक्षा कवच सी अपनी गोद में सुलाने वाली त्यागशील देवी नहीं होती,

दुनिया के हर धन ऐश्वर्य से सम्पन्न होते हुए भी सृष्टि की यह अनुपम रचना संग नहीं होती।

सच ही है हर किसी के नसीब में माँ की छत्रछाया नहीं होती,

तुम्हारी हर मुस्कान की खातिर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाली गुरु, सहेली नहीं होती,

उंगली पकड़ कर चलना सिखाने वाली, एक रोटी मांगने पर चार खिलाने वाली निःस्वार्थ प्रेम करने वाली हमदम नहीं होती,

सब कुछ वार कर भी कोई कर्ज का बहीखाता न रखने वाली दिलदार नहीं होती।

सच ही है हर किसी के नसीब में माँ की छत्रछाया नहीं होती,

मन के गलियारों पर अमिट छाप छोड़ती एक दैव्य शक्ति संग नहीं होती,

कितने भी बड़े क्यों ना हो जाओ, बचपन के एहसास से रूबरू कराने वाली अद्भुत मनमीत नहीं होती,

दुनिया के समस्त धन – ऐश्वर्य एक तरफ, इस निर्दयी दुनिया में माँ के जैसी दया की मूरत नहीं होती।

वैशाली कंचन
प्रबंधक
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

हिंदी भाषा का महत्त्व उसकी सामाजिक,
सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता में है।

हाउसवाइफ: घर की आत्मा, समाज की नींव

वह स्त्री जो घर की चारदीवारी में रहती है, जिसे समाज अक्सर **"सिर्फ हाउसवाइफ"** कहकर पुकारता है– वास्तव में वह एक ऐसी शक्ति है, जो पूरे परिवार को थामे रखती है। वह कोई औपचारिक पद नहीं रखती, कोई वेतन नहीं लेती, फिर भी उसका योगदान अमूल्य है। वह इतिहास के पन्नों में नहीं लिखी जाती, पर हर दिन अपने घर में एक नया अध्याय रचती है– प्रेम, त्याग और समर्पण से।

हम अक्सर उन महिलाओं की प्रशंसा करते हैं जो बाहर जाकर नाम कमाती हैं, बड़ी उपलब्धियाँ हासिल करती हैं। लेकिन उतनी ही बड़ी सच्चाई यह भी है कि हर घर में एक ऐसी स्त्री होती है, जो खुद बाहर नौकरी पर न जाकर भी पूरे परिवार को आगे बढ़ने की ताकत देती है। वह अपने सपनों को परिवार की खुशियों में समाहित कर देती है, और बदले में सिर्फ मुस्कान माँगती है।

वह दफ्तर की मीटिंग्स में नहीं बैठती, पर हर मन की उलझन सुलझाती है। वह टारगेट्स नहीं बनाती, पर हर दिन की जरूरतें पूरी करती है। उसकी सुबह अलार्म से पहले शुरू होती है– बच्चों के टिफिन, पति की चाय, बुजुर्गों की दवा– और रात तब खत्म होती है जब सब चैन की नींद में होते हैं। उसके लिए कोई रविवार नहीं होता, कोई छुट्टी नहीं होती– उसका जीवन एक सतत साधना है।

वह माँ है, जो बच्चों की परवरिश में अपना अस्तित्व घोल देती है। वह बहू है, जो घर की परंपराओं को सहेजती है। वह बेटी है, जो अपने सपनों को घर की दीवारों में रंग देती है। हर रूप में वह जीवन की गहराई है, एक ऐसी शक्ति जो बिना दिखे सबको थामे रहती है।

वह त्योहारों को सजाती है, घर को सँवारती है, और हर दिन को एक उत्सव बना देती है– बिना किसी तालियों के, बिना किसी प्रशंसा के। उसकी मुस्कान में सुकून है, उसकी चुप्पी में समझदारी है। वह पैसा नहीं कमाती, पर सबसे अमीर दौलत बाँटती है– स्नेह, सुरक्षा और अपनापन।

उसके पास कोई प्रमोशन नहीं होता, कोई एपीएआर नहीं होता, फिर भी वह हर दिन खुद को बेहतर बनाती है। वह थकती है, पर रुकती नहीं। जब सब सो जाते हैं, तब वह अपने अधूरे सपनों को जगाती है– कभी किताबों में, कभी सिलाई में, कभी बस एक कप चाय के साथ खिड़की के पास बैठकर।

उसके हाथों में चूड़ियाँ हैं, पर वे उसकी शक्ति की झंकार हैं। उसके पाँवों में पायल है, पर वे उसकी कर्मभूमि की गूंज हैं। वह साड़ी में लिपटी है, पर उसके भीतर एक समूचा ब्रह्मांड है– भावनाओं का, विचारों का, और असीम प्रेम का।

वह कोई नौकरी नहीं करती, पर हर दिन एक नई भूमिका निभाती है– रसोई की रचनाकार, बच्चों की शिक्षिका, परिवार की चिकित्सक, और घर की प्रबंधक। उसकी कोई छुट्टी नहीं होती, कोई वेतन नहीं होता, फिर भी वह सबसे समृद्ध होती है– क्योंकि उसके पास सबका प्यार होता है।

वह जब थकती है, तो चुपचाप मुस्कुरा देती है। जब दुखी होती है, तो अपने आँसुओं को चाय की भाप में छुपा देती है। जब खुश होती है, तो पूरे घर को महका देती है। उसकी खुशी में सबका सुकून है, उसकी खामोशी में सबकी सलामती।

उसका काम पूजा है, उसका समर्पण साधना है। वह मजबूरी नहीं, उसने यह भूमिका अपनी खुशी से चुनी है। इसलिए उसे "हाउसवाइफ" कहना उसकी पहचान को छोटा करना है। वह तो घर की आत्मा है– एक ऐसी आत्मा जो सबका सहारा है, सबकी प्रेरणा है।

वह इतिहास नहीं लिखती, पर हर दिन अपने घर में एक नया अध्याय रचती है। वह कोई किताब नहीं लिखती, पर बच्चों के चरित्र में संस्कारों की इबारत गढ़ती है। वह कोई भाषण नहीं देती, पर हर दिन अपने कर्मों से एक संदेश देती है– सेवा, प्रेम और धैर्य का।

वह जब रसोई में होती है, तो सिर्फ खाना नहीं बनाती– वह स्वाद में अपनापन घोलती है। जब वह कपड़े धोती है, तो सिर्फ धुलाई नहीं करती– वह हर दाग के साथ घर की चिंता भी धो देती है। जब वह घर की सफाई करती है, तो सिर्फ धूल नहीं हटाती– वह वातावरण को सुकून से भर देती है।

वह जब बच्चों को स्कूल भेजती है, तो उनके साथ अपने सपनों को भी विदा करती है– यह सोचकर कि शायद एक दिन वे सपने उनके साथ लौट आएँगे। वह जब पति को दफ्तर के लिए तैयार करती है, तो उसके आत्मविश्वास में अपना विश्वास जोड़ देती है। वह जब बुजुर्गों की सेवा करती है, तो उनके अनुभवों को अपने जीवन का हिस्सा बना लेती है।

उसके पास कोई डिग्री नहीं होती, पर वह जीवन की सबसे बड़ी शिक्षिका होती है। उसके पास कोई पद नहीं होता, पर वह सबसे बड़ी प्रबंधक होती है। उसके पास कोई पुरस्कार नहीं होता, पर वह सबसे बड़ी विजेता होती है– क्योंकि वह हर दिन बिना थके, बिना रुके, बिना शिकायत के अपना सर्वस्व देती है।

इसलिए, जब हम समाज की प्रगति की बात करें, तो उन स्त्रियों को न भूलें जो घर की नींव बनकर सबको थामे रहती हैं। उन्हें सिर्फ "घर पर रहने वाली" न कहें– उन्हें वह कहें जो वे वास्तव में हैं: जीवन की धारा, घर की आत्मा, और समाज की शक्ति।

उनका नाम सम्मान होना चाहिए, उनका परिचय गर्व होना चाहिए। वे कोई मजबूरी नहीं, वे एक स्वेच्छा से चुनी गई भूमिका हैं– जिसमें हर दिन वे खुद को समर्पित करती हैं, और बदले में सबको जीवन देती हैं।

वह हाउसवाइफ नहीं – वह घर की देवी है।

खुशबु तिवारी
सहायक प्रबंधक (मा.सं.प्र)
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

हिंदी से करो प्रेम

हिंदी से करो प्रेम, यही तो हमारी पहचान है,
इसकी ध्वनि में बसी देश की मुस्कान है।
हर शब्द में इसकी मिठास घुली है,
जैसे गंगा की धारा, पवित्र और निर्मल चली है।

ये माँ की लोरी है, ये दिल की जुबान है,
हर भाव में बसी अपनी जान है।
हिंदी में जब बोलते हैं हम,
तो दिल से दिल का होता मिलन संगम।

इसकी गोद में कबीर गाते हैं,
तुलसी और सूर मुस्कुराते हैं।
प्रेमचंद के शब्दों में ये जीवन रचती है,
महादेवी की कलम से करुणा बरसती है।

हिंदी से करो प्रेम, ये आत्मा की बात है,
ये केवल भाषा नहीं, संस्कृति की सौगात है।
जहाँ हिंदी है, वहाँ अपनापन है,
हर स्वर में मातृभूमि का आलिंगन है।

मत मानो इसे केवल एक विषय या पाठ,
ये है भारत की आत्मा का साथ।
बोलो हिंदी, लिखो हिंदी, जियो हिंदी में,
यही तो सच्चा गर्व है, हर भारतीय जीवन में।

हिंदी से करो प्रेम, क्योंकि ये हमारी शान है,
इससे ही तो जुड़ा हिंदुस्तान है।
जो इसको अपनाए, वो कभी पराया नहीं,
क्योंकि हिंदी से बढ़कर कोई साया नहीं।

सोनम सक्सेना
हिंदी सहायक (राजभाषा)
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का महत्व

प्रस्तावना

भारतीय समाज की जड़ें गाँवों में बसती हैं। महात्मा गांधी ने कहा था – "भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है।" हिंदी साहित्य, विशेषतः हिंदी उपन्यास, इस आत्मा को शब्दों में मूर्त रूप देता है। उपन्यास, जो जीवन का दर्पण कहा गया है, उसमें ग्रामीण जीवन की छवि अत्यंत सजीव रूप में उभरती है। हिंदी उपन्यासों ने भारतीय ग्रामीण समाज के सुख–दुःख, संघर्ष, परंपरा, सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक मूल्यों का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है।

हिंदी उपन्यास का आरंभ और ग्रामीण पृष्ठभूमि

हिंदी उपन्यास का आरंभ 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर प्रेमचंद तक आते–आते हिंदी उपन्यास एक सशक्त विधा बन गया। प्रारंभिक उपन्यासों में शहरी जीवन की झलक मिलती थी, परंतु समाज का असली चित्र– गाँवों का जीवन– प्रेमचंद के लेखन से उभरकर सामने आया। गाँव केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि संस्कृति, मानवीय संबंधों और नैतिक मूल्यों का केंद्र है। इसीलिए हिंदी उपन्यासकारों ने ग्रामीण परिवेश को अपने लेखन का आधार बनाया।

प्रेमचंद और ग्रामीण यथार्थ का चित्रण

यदि हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की चर्चा होती है, तो मुंशी प्रेमचंद का नाम सर्वोपरि आता है। उन्होंने भारतीय किसान और गाँव की व्यथा को साहित्य का विषय बनाया। उनके उपन्यास 'गोदान', 'निर्मला', 'सेवासदन', 'रंगभूमि' आदि में ग्रामीण जीवन का बहुआयामी चित्र मिलता है। 'गोदान' विशेष रूप से भारतीय किसान की दुखद स्थिति, जमींदारी शोषण, आर्थिक असमानता और सामाजिक अन्याय का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। होरी जैसे पात्र में पूरा भारतीय किसान

वर्ग सजीव हो उठता है– जो मेहनती है, परंतु शोषित और बेबस भी। प्रेमचंद के लेखन में गाँव केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि जीवंत चरित्र बन जाता है।

ग्रामीण समाज के विविध पहलू

हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन के अनेक पक्षों को चित्रित किया गया है–

1. **आर्थिक शोषण और गरीबी**

   जमींदारी प्रथा, साहूकारी और पूंजीवादी शोषण ने गाँवों की रीढ़ तोड़ दी थी। प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ 'रेणु', और उपेन्द्रनाथ अश्क जैसे लेखकों ने किसान की आर्थिक विवशता को बड़ी मार्मिकता से दिखाया।

2. **सामाजिक विषमता और जातिवाद**

   गाँवों में व्याप्त जातिगत भेदभाव और सामाजिक अन्याय को भी उपन्यासकारों ने रेखांकित किया। प्रेमचंद के 'रंगभूमि' और फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

3. **परंपरा और आधुनिकता का संघर्ष**

   ग्रामीण समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया को भी हिंदी उपन्यासों ने बखूबी पकड़ा है। रेणु के पात्र पुरानी रूढ़ियों से जूझते हुए नई चेतना की ओर बढ़ते हैं।

4. **मानवीय संबंध और सहजीवन**

   ग्रामीण जीवन का सबसे सुंदर पहलू है– लोगों के बीच आत्मीयता, सहयोग और भावनात्मक एकता। यह भावना हिंदी उपन्यासों में गहराई से प्रकट होती है। गाँव का जीवन कठिनाइयों के बावजूद सामूहिकता का प्रतीक है।

फणीश्वरनाथ रेणु और आंचलिकता का यथार्थ

प्रेमचंद के बाद ग्रामीण जीवन के सबसे सजीव चित्रकार फणीश्वरनाथ रेणु माने जाते हैं। उनके उपन्यास 'मैला आँचल' में बिहार के पूर्णिया जिले के गाँव की संपूर्ण झाँकी मिलती है। रेणु ने न केवल ग्रामीण जीवन की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को दिखाया, बल्कि वहाँ की बोली, संस्कृति, लोकगीत, लोककथाएँ और परंपराएँ भी अपने लेखन में शामिल कीं। 'मैला आँचल' हिंदी उपन्यासों में आंचलिकता की परंपरा

का सूत्रपात करता है– जिसमें गाँव का हर पात्र, हर दृश्य, हर भावना जीवंत प्रतीत होती है।

अन्य उपन्यासों में ग्रामीण जीवन

प्रेमचंद और रेणु के अतिरिक्त कई अन्य उपन्यासकारों ने भी ग्रामीण जीवन को केंद्र में रखा है–

- **रांगेय राघव** के "कब तक पुकारूँ" में किसान जीवन के साथ–साथ वर्ग–संघर्ष और राजनीतिक चेतना का यथार्थ चित्रण है।
- **उपेन्द्रनाथ अश्क** के "गिरती दीवारें" में गाँव और शहर के बदलते रिश्तों का सामाजिक चित्र है।
- **शिवप्रसाद सिंह** के "नीला चाँद" में ग्रामीण भारत की बदलती मानसिकता को दिखाया गया है।
- **कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, और मोहन राकेश** ने भी अपने लेखन में ग्रामीण जीवन के नैतिक पतन, विस्थापन और बदलती मान्यताओं पर चिंतन किया है।

स्वतंत्रता आंदोलन और ग्रामीण चेतना

हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन केवल गरीबी और शोषण की कहानी नहीं, बल्कि जागरण और परिवर्तन की कहानी भी है। 'रंगभूमि' में प्रेमचंद ने गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित किसान चेतना को स्वर दिया। 'मैला आँचल' में डॉक्टर प्रशांत जैसे पात्र ग्राम्य सुधार और सेवा का प्रतीक हैं। इन रचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि गाँवों में भी राष्ट्र, समाज और मानवीयता की चेतना विकसित हो रही थी

ग्रामीण जीवन और स्त्री दृष्टि

हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण नारी का भी विस्तृत चित्रण मिलता है। 'निर्मला' की नायिका हो या 'मैला आँचल' की 'मलती' – सभी अपने परिवेश से जूझती, परंतु संघर्षशील हैं। स्त्री का यह रूप न केवल संवेदनशील है, बल्कि जीवन की मूल शक्ति का प्रतीक भी है। गाँव की स्त्री परिवार और समाज की धुरी है– यह भाव हिंदी उपन्यासों में बार–बार उभरता है।

भाषा और शैली में ग्रामीणता का प्रभाव

ग्रामीण जीवन को सजीव बनाने में हिंदी उपन्यासों की भाषा और शैली ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रेमचंद ने बोलचाल की भाषा और लोकप्रचलित मुहावरों का प्रयोग किया, जबकि रेणु ने लोकभाषा – मैथिली, भोजपुरी, मगही – के शब्दों से उपन्यासों को आंचलिकता का रंग दिया। इससे हिंदी उपन्यास न केवल अधिक जीवंत बने, बल्कि भारतीय ग्रामीण संस्कृति की आत्मा को भी प्रकट करने लगे।

आधुनिक संदर्भ में ग्रामीण जीवन का महत्व

आज भारत तेजी से शहरीकरण की ओर बढ़ रहा है, फिर भी देश की अधिकांश आबादी गाँवों में बसती है।

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन अब भी एक सशक्त विषय है। समकालीन लेखक जैसे मन्नू भंडारी, संजीव, ज्ञानरंजन, नीलम शुक्ला आदि ने ग्रामीण परिवेश में बदलते मूल्यों, विस्थापन, पलायन और कृषि संकट जैसे विषयों को उठाया है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण जीवन आज भी हिंदी साहित्य की आत्मा बना हुआ है।

निष्कर्ष: हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का महत्व केवल विषयगत नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, मानवीय और नैतिक दृष्टि से भी अत्यंत गहरा है। यह जीवन संघर्ष, करुणा, श्रम और संवेदना की गाथा है। प्रेमचंद ने इसकी पीड़ा दिखाई, रेणु ने उसकी आत्मा को स्वर दिया, और बाद के लेखकों ने उसके परिवर्तनों को समझा। गाँव हिंदी उपन्यासों में केवल एक स्थान नहीं – बल्कि भारतीय समाज की आत्मा, संवेदना और संस्कृति का प्रतीक है। जब तक हिंदी साहित्य रहेगा, तब तक ग्रामीण जीवन उसकी धड़कन बना रहेगा।

राजेश मिश्रा
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

मल्टीप्ल स्क्लेरोसिस (एमएस)- एक रोग

मल्टीप्ल स्क्लेरोसिस (एमएस), एक केन्द्रीय तंत्रिका प्रणाली की स्थिति है, जिसमें दिमाग से हमारे शरीर में चल रही क्रियाओं के लिए प्राप्त संदेशों की गहनता कम हो जाती है। इससे इन क्रियाओं का प्रभाव कम हो जाता है। यह स्थिति प्रगतिशील है। इसका वर्तमान में कोई पुख्ता इलाज उपलब्ध नहीं है, लेकिन दवाएँ लक्षणों को नियंत्रित कर सकती हैं या इसकी प्रगति को धीमा कर सकती हैं।

यह एक तंत्रिका तंत्र विघटन विकार है, जिसमें समय के साथ–साथ मस्तिष्क से शरीर को प्राप्त संदेश धीमे पड़ने लगते हैं, जिससे बदन की प्रक्रिया जो है, प्रभावित होती हैं।

दुनिया भर में वर्तमान में लगभग 29,00,000/– लोग इस स्थिति से ग्रस्त हैं।

यह बता पाना कठिन है कि मल्टीप्ल स्क्लेरोसिस किस तरीके से एक व्यक्ति में बढ़ेगा।

भारत में इस बीमारी की दर लगभग 8 से 9 प्रति 1 लाख लोगों में देखी गई है। पूरे भारत में इस हिसाब से रोगियों की दर जो एमएस से ग्रस्त हैं 1.5 से 2.25 लाख लोगों की है।

कुछ लोगों में इसके लक्षण हल्के होते हैं, जैसे की आंखों में धुंधलापन, हाथ पांव सुन होना और झुंझुनी रहना। जैसे की यह एक प्रगतिशील रोग है, इसकी स्थिति में और भी परेशानियाँ आती हैं। बहुत गंभीर स्थिति में एक इंसान को लकवा और आंखों में अंधापन और चलने फिरने में परेशानी जैसे लक्षण हो सकते है।

साल 2016 से इस बीमारी को हमारे भारत में विकलांगता अधिनियम में सम्मिलित किया गया है।

'इसमें आंकड़े गूगल से प्राप्त विवरण के अनुसार हैं।

इस लेख का लेखक स्वयं इस स्थिति से ग्रस्त है एवं इसमें लिखी गई जानकारी इस दौरान अर्जित जानकारी के आधार पर है।

अविनाश साहू
प्रबन्धक (विद्युत)
नालको, दिल्ली

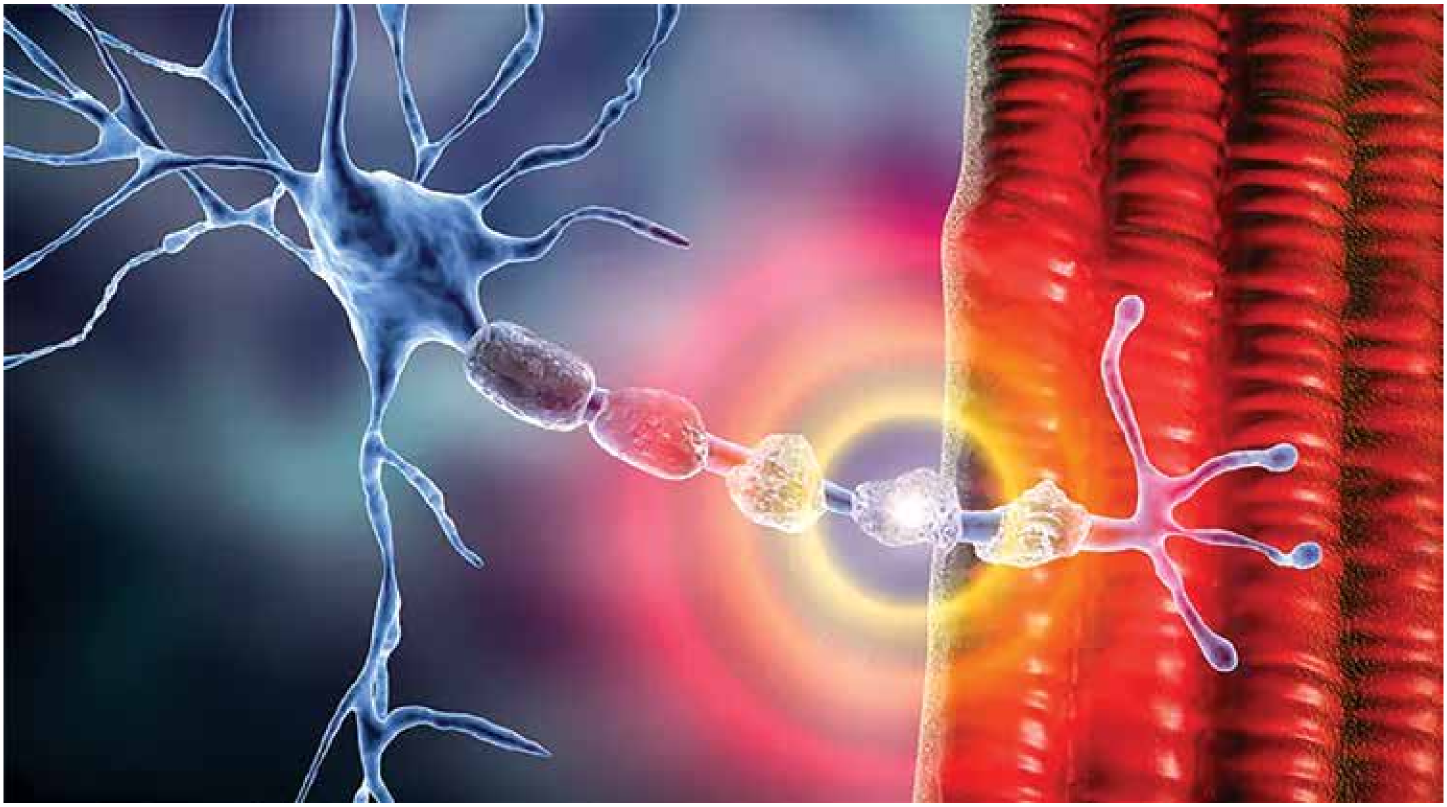

पर्यावरण - जीवन का आधार और उसकी प्रदूषण से सुरक्षा

पर्यावरण का अर्थ है हमारे चारों ओर का वह प्राकृतिक और मानवजनित वातावरण जिसमें हम रहते हैं। इसमें वायु, जल, मिट्टी, वनस्पति, जीव–जंतु और मानव–निर्मित संरचनाएँ शामिल होती हैं। पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है क्योंकि यह हमें आवश्यक संसाधन जैसे हवा, पानी, भोजन, ऊर्जा और आश्रय प्रदान करता है। स्वस्थ पर्यावरण के बिना जीव जगत की कल्पना करना व्यर्थ है। 'प्रदूषण से सुरक्षा' का तात्पर्य है कि पर्यावरण के प्रतिकूल जो भी गतिविधियां हो रही हैं और जिनके कारण पर्यावरण में असंतुलन पैदा हो गया है और वैश्विक स्तर पर भयानक दुष्परिणाम देखने को मिल रहे हैं उन परिस्थितियों से पर्यावरण कि सुरक्षा कैसे कि जाए ताकि जीवन और जीव–जगत को सुरक्षित रखा जा सके परिणामस्वरूप प्रकृति प्रदत्त पर्यावरण स्वस्थ और संतुलित रह सके।

पर्यावरण का महत्वः–

पर्यावरण केवल प्राकृतिक संसाधनों का संग्रह नहीं है बल्कि यह हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित करता है। अगर पर्यावरण असंतुलित हो जाए, तो जीवन की गुणवत्ता प्रभावित होती है और स्वास्थ्य संकट में पड़ता है। पर्यावरण, जलवायु, वर्षा, तापमान और पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित रखता है। इसलिए स्वस्थ पर्यावरण जीव जगत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण। निम्नलिखित घटक पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं जो जीवन को प्रभावित करते हैं और इनमें किसी भी प्रकार असंतुलन जीव जगत के लिए खतरा पैदा करती हैं।

- साफ वायु और जल – ये स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य हैं इनके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।
- वन और हरित क्षेत्र – मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों के लिए लाभकारी हैं। घने वन वातावरण में ऑक्सीजन उपलब्ध कराते हैं और प्रदूषण को भी अवशोषित करते हैं। यही ऑक्सीजन जीवन का मुख्य आधार है।
- मिट्टी और जल स्रोत – कृषि के लिए आवश्यक हैं जो मानव और पशुओं के भोजन का आधार हैं।

पर्यावरण पर मानव गतिविधियों का प्रभाव एवं प्रदूषणः–

प्रदूषण एक ज्वलंत वैश्विक समस्या बन चुका है। तेज गति से विकास करने की होड़ में मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित दोहन किया है जिसके कारण परिस्थितिकी तंत्र प्रभावित हुआ है और पर्यावरण में असंतुलन हो गया है फलस्वरूप कई प्रकार की जटिलताएँ पैदा हो गयी हैं। मानव गतिविधियाँ जैसे औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, रासायनिक कृषि और अव्यवस्थित कचरा प्रबंधन मुख्यतः इसके लिए जिम्मेदार हैं। विश्व स्वास्थ संगठन (WHO) के अनुसार वैश्विक प्रदूषण में जीवाश्म ईंधनों और ऊर्जा (Fossil Fuel & Energy Industries) उद्योग जैसे थर्मल पवार प्लांट और रिफाइनरी वायु प्रदूषण में सबसे बड़े योगदानकर्ता हैं जो वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के लगभग 75% के लिए जिम्मेदार हैं। फैशन में तेज बदलाव के कारण कपड़ा उद्योग से अत्यधिक अपशिष्ट, सिंथेटिक कपड़े के माइक्रोप्लास्टिक, विनिर्माण तथा परिवहन के कारण भी वातावरण प्रदूषित हो रहा है। समुद्री प्रदूषण में तेल रिसाव, प्लास्टिक और कचरा मुख्यतः शामिल हैं जो समुद्री जीवों के द्वारा निगल लिए जाते हैं और नुकसानदेह साबित होते हैं। पर्यावरण पर मानव गतिविधियों के प्रभाव और परिणामस्वरूप पैदा हुए विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों पर हम और विस्तार से चर्चा करेंगे।

1. **वायु प्रदूषण**– उद्योगों और वाहनों से निकलने वाली गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड शामिल हैं। यह स्मॉग, एसिड वर्षा और श्वसन रोगों का कारण बनते हैं। भारत में वायु प्रदूषण से हर साल लाखों लोगों की मृत्यु होती है। भारत की हवा में भी मुख्य प्रदूषक कण पार्टिकुलेट मैटर (PM2.5 और PM10) हैं जो फेफड़ों और रक्तप्रवाह (Bloodstream) में प्रवेश कर सकते हैं इसके कारण श्वसन (Respiratory), स्ट्रोक (Stroke), कैंसर (Cancer) और हृदय संबंधी रोग (Cardiovascular Diseases) हो सकते हैं।

2. **जल प्रदूषण**– रासायनिक अपशिष्ट, प्लास्टिक और औद्योगिक कचरा नदियों, झीलों और समुद्रों को दूषित

कर रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार दूषित जल से हर साल करोड़ों लोग बीमार होते हैं।

भारत के संदर्भ में उपलब्ध कुछ आंकड़े इस प्रकार हैं:

- नीति आयोग (NITI Aayog) और इंडियन करेंट्स (Indian Currents) दोनों की रिपोर्टों के अनुसार 70% तक ताजा पानी (freshwater) पीने के योग्य नहीं है।
- केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) द्वारा 2018 में 351 प्रदूषित नदी खंडों (polluted river stretches) की पहचान की गई थी, हालाँकि 2022 तक यह संख्या घटकर 311 हो गई है।
- लगभग 40 मिलियन लीटर दूषित पानी (wastewater) प्रतिदिन भारतीय नदियों और जल निकायों में प्रवेश करता है, जिसका एक बड़ा हिस्सा अनुपचारित (untreated) रहता है।
- 2021 तक, भारत में सीवेज उपचार क्षमता में 78.7% का अंतर था, जिसमें प्रथम श्रेणी के शहर 29,000 मिलियन लीटर प्रतिदिन (MLD) से अधिक सीवेज उत्पन्न कर रहे थे, लेकिन स्थापित उपचार क्षमता केवल 6,190 MLD थी।
- प्रतिदिन 2 मिलियन टन सीवेज और अपशिष्ट जल (Effluent) के साथ–साथ सालाना 300–400 मिलियन टन औद्योगिक कचरा भी छोड़ा जाता है।

सुधारात्मक कदम उठाने के बाद अब ये आंकड़े कम हो गए हैं, आशा है कि भविष्य में ये और भी कम होंगे।

3. **मृदा प्रदूषण और भू–क्षरण**– रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक मिट्टी की उपजाऊ शक्ति घटा रहे हैं। इससे कृषि उत्पादन में कमी और भू– उपयोग असंतुलन उत्पन्न हो रहा है। आंकड़े बताते हैं कि 2018–19 में भारत की कुल भूमि का लगभग 97.85 मिलियन हेक्टेयर भू–क्षरण हुआ था जो देश के भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 29.77% है।

यूएनसीसीडी (UNCCD) डैशबोर्ड के आँकड़ों के अनुसार, 2015 से 2019 के बीच 30.51 मिलियन हेक्टेयर भूमि का भू–क्षरण हुआ जो देश के कुल भूभाग का 9.45% है। जल अपरदन से 36.1 मिलियन हेक्टेयर भूमि प्रभावित है जबकि वायु अपरदन से 18.2 मिलियन हेक्टेयर भूमि प्रभावित है। अति – पशुचारण (overgrazing) और वनोन्मूलन (deforestation) के कारण जमीन के ऊपर की बायोमास (above-ground biomass) में कमी आई है। खनन (mining), शहरीकरण (urbanization) और औद्योगिक कचरा भी भू–क्षरण में महत्वपूर्ण योगदान देते रहे हैं।

4. **जैव विविधता का नुकसान**– वनस्पति और जीव–जंतुओं के प्राकृतिक आवास नष्ट होने के कारण अनेक प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं। उदाहरण के लिए 20वीं सदी में गंगा डॉल्फिन जैसी कई प्रजातियाँ संकट में आई हैं। वर्तमान में पूरे विश्व में जलवायु में एक विशेष परिवर्तन देखने को मिला है जिसकी वजह से अति वृष्टि, भूस्खलन और बादल फटना आदि शामिल हैं। हाल ही में भारत के हिमालयी क्षेत्रों में भी भूस्खलन के बहुत भयावह रूप देखने को मिले हैं।

5. **जलवायु परिवर्तन**– ग्लोबल वार्मिंग के कारण तापमान बढ़ रहा है ध्रुवीय बर्फ पिघल रही है और समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। फरवरी 2025 में प्रकाशित एक अध्ययन

में पाया गया कि पिछले दशक में वैश्विक ग्लेशियर बर्फ तेजी से पिघली है जिसमें 2000–2011 की तुलना में 2012–2023 के बीच पिघलने में 36% की वृद्धि हुई है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (World Meteorological Organisation) ने बताया कि लगातार तीसरे वर्ष पृथ्वी के प्रत्येक हिमनद क्षेत्र (glaciated region) में बर्फ अनुमान से ज्यादा पिघली है।

6. **ओजोन परत का क्षरण**– ओजोन परत का क्षरण पृथ्वी की सुरक्षात्मक समतापमंडलीय ओजोन परत का पतला होना है जो मुख्य रूप से

क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी) जैसे मानव निर्मित रसायनों के कारण होता है। क्लोरीन और ब्रोमीन परमाणुओं को छोड़ते हैं जो ओजोन अणुओं को नष्ट करते हैं।

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए वैश्विक स्तर पर प्रयासः

उपरोक्त समस्याओं से निबटने के लिए विश्वस्तरीय प्रयास किए जा रहे हैं ताकि पर्यावरण में पुनः संतुलन स्थापित किया जा सके और भावी पीढ़ी और समस्त जीव–जगत को स्वस्थ और सुरक्षित पर्यावरण दिया जा सके। पूरे विश्व में पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर चिंता जाहिर की गई है डबल्यूएचओ आदि संस्थाओं ने भी वैश्विक चर्चा के माध्यम से बार–बार इस बात को प्रमुखता से रखा है। 'नेट जीरो पेरिस समझौता' भी वायु प्रदूषण नियंत्रण करने की दिशा में एक बड़ी पहल है इसके अंतर्गत ग्लोबल वार्मिंग को 2°C तक सीमित करने का अंतरराष्ट्रीय लक्ष्य रखा गया है। ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन नियंत्रण के लिए उद्योगों और वाहनों से उत्सर्जित गैसों को नियंत्रित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं। वनों की कटाई और जैव विविधता के संरक्षण के लिए कड़े नियम बनाए गए हैं। UNEP (UN Environment Programme) के तहत समाज पर प्रदूषण के व्यापक प्रभाव से लड़ने के लिए 2017 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा (UNEA) में दुनिया भर के पर्यावरण मंत्रियों ने प्रदूषण मुक्त ग्रह की दिशा में काम करने की अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धता व्यक्त की है। इसके अतिरिक्त UNESCO जैसी संस्थाएँ भी कई योजनाओं पर कार्य कर रही हैं।

भारत के संदर्भ में अगर बात करें तो भारत सरकार ने भी प्रदूषण से मुक्ति के लिए बहुत सारी गतिविधियां शुरू की हैं, कई कार्ययोजनायें तथा नियम बनाए गए हैं और उनका बड़ी कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जा रहा है, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

भारत में जल प्रदूषण नियंत्रण और नदी संरक्षण के लिए प्रभावी नीति नियम बनाए गए हैं:

- **नमामि गंगे/राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन** (NMCG): इस कार्यक्रम को अब मार्च 2026 तक बढ़ा दिया गया है। 2025–26 के बजट में गंगा नदी पारिस्थितिकी तंत्र में सीवेज उपचार क्षमता, जल की गुणवत्ता में सुधार और औद्योगिक अपशिष्ट को सही प्रक्रिया के तहत निस्तारित करने के लिए धन की उपलब्धता को बढ़ाया गया है। इन प्रयासों में सहयोग के लिए ''राष्ट्रीय गंगा योजना (CS)'' के तहत 2025–26 के लिए रु. 3,400 करोड़ आवंटित किए गए हैं। इस मिशन ने पूरे भारत में नदियों के किनारे स्थित 145 शहरों के लिए 2025 में एक कार्य योजना को मंजूरी दी है। इसका लक्ष्य इन शहरों के किनारे नदी के हिस्सों को ''स्वच्छ और मजबूत'' रखना है।
- **जल प्रदूषण संबंधी कानूनों में सुधारः** राज्यसभा ने जल (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1974 में संशोधन के लिए एक विधेयक पारित किया इसमें कुछ बदलाव किए गए हैं जैसे छोटे प्रदूषण–संबंधी अपराधों को गैर–आपराधिक बनाना ताकि दंड गंभीरता के अनुरूप हों। इसके अतिरिक्त स्थानीय नदियों के विकास के लिए भी कई पहल की गई हैं। इसमें से कुछ इस प्रकार हैं:
  - तमिलनाडु – कोसस्थलैयार नदीः चेन्नई नदी रेस्टोरेशन ट्रस्ट (Chennai River Restoration Trust) ने जून 2025 में कोसस्थलैयार नदी के लगभग 70 किमी हिस्से के पुनरुद्धार की परियोजना शुरू की है। केरल सरकार ने भी नदी संरक्षण के लिए केरल नदी बेसिन संरक्षण और प्रबंधन प्राधिकरण की स्थापना हेतु राज्य स्तरीय ढाँचे को मंजूरी दी गई है।
  - दिल्ली सरकार, ओखला एसटीपी (सीवेज उपचार संयंत्र) से उपचारित अपशिष्ट जल को मोड़कर यमुना के पर्यावरण प्रवाह (e-flow) को बढ़ाने पर काम कर रही है। इससे जल प्रवाह बढ़ाने और झाग जैसे प्रदूषण को कम करने में मदद मिलेगी। अक्टूबर 2025 में केंद्र सरकार ने दिल्ली सरकार को यमुना नदी की सफाई से संबन्धित विभिन्न कार्यों के लिए रु. 1860 करोड़ की वित्तीय सहायता की मंजूरी दी है।
  - औद्योगिक निर्वहन नियंत्रण को मजबूत करनाः संशोधित जल प्रदूषण अधिनियम के अंतर्गत शून्य तरल निर्वहन (ZLD-Zero Liquid Discharge) को लागू करना है।
  - नदियों में ठोस अपशिष्ट और प्लास्टिक को जाने से रोकने के प्रयास किए जा रहे हैं उदाहरण के लिए तमिलनाडु एवं अन्य राज्यों में तटीय मिशनों के अंतर्गत अवरोधकों (इंटरसेप्टर) के माध्यम से ठोस अपशिष्ट और प्लास्टिक को नदियों से साफ करने के लिए उपाय किए गए हैं।

भारत वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने की दिशा में भी प्रयासरत है और इसके लिए कई योजनाएँ बनाई गई हैं:

- **राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) योजनाएँ:** भारत राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) के तहत लगभग 130 शहरों (जो एक मिलियन से अधिक आबादी वाले हैं) के लिए शहर – विशिष्ट स्वच्छ वायु कार्य योजनाओं को लागू कर रहा है। ये योजनाएँ प्रदूषण के प्रमुख स्रोतों जैसे कि सड़क की धूल, निर्माण और विध्वंस (C&D) की धूल, वाहन, औद्योगिक उत्सर्जन, कचरा/पराली जलाना, और घरेलू ईंधन उपयोग पर ध्यान केंद्रित करती हैं। जुलाई 2025 तक, NCAP के तहत इन शहरों के लिए रु. 13,036 करोड़ जारी किए गए थे जिसमें से अब तक लगभग रु. 9,209 करोड़ का उपयोग किया जा चुका है।

- **स्वच्छ ऊर्जा के लिए केंद्रीय बजट प्रोत्साहन:** 2025–26 के केंद्रीय बजट में स्वच्छ ऊर्जा, स्वच्छ ईंधन आदि को बढ़ावा देने के उपाय शामिल हैं। उदाहरण के लिए अधिक उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए ऑटो एलपीजी पर जीएसटी कम करने और स्वच्छ गतिशीलता के लिए प्रोत्साहन देने पर चर्चा चल रही है।

- **ईंधन और वाहनों पर विनियम:**
  - नए वाहनों के लिए भारत स्टेज VI (BS-VI) मानक लागू किए गए हैं।
  - कुछ पुराने वाहनों पर प्रतिबंध लगाया जा रहा है उदाहरण के लिए दिल्ली सरकार ने अनिवार्य किया है कि अप्रैल 2025 से 15 साल से अधिक पुराने वाहनों को पेट्रोल पंपों पर ईंधन नहीं दिया जाएगा।
  - दिल्ली की 2025 शमन योजना (Delhi's 2025 Air Pollution Mitigation Plan) के तहत, 1 नवंबर, 2025 से दिल्ली में केवल BS-VI वाहन, CNG वाहन या इलेक्ट्रिक वाहनों को ही प्रवेश की अनुमति दी जाएगी।

- **वायु प्रदूषण शमन योजना 2025:** दिल्ली में ''शुद्ध हवा सबका अधिकार प्रदूषण पर जोरदार प्रहार'' नामक एक व्यापक योजना शुरू की गई थी। इस योजना के तहत निम्न कार्यवाहियों को शामिल किया गया है:
  - इलेक्ट्रिक ऑटो (~2299) और दर्जनों इलेक्ट्रिक बसें तैनात करना।
  - पानी के स्प्रिंकलर (1000+), एंटी स्मॉग गन (~140), प्रदूषण हॉटस्पॉट में मिस्ट स्प्रेयर तैनात करना।
  - बड़ी निर्माण साइटों का अनिवार्य पंजीकरण और धूल नियंत्रण उपायों को लागू करना।
  - वृक्षारोपण अभियान (''एक पेड़ माँ के नाम'') जिसके तहत लगभग 70 लाख (7 मिलियन) पौधे लगाने का लक्ष्य है।
  - अगले कुछ वर्षों में कुछ बड़े लैंडफिल (ओखला, भलस्वा आदि) को साफ करने की समय–सीमा तय की गयी है।
  - परिवहन के साधनों को अधिक से अधिक वैकल्पिक ऊर्जा से जोड़ा जा रहा है ताकि हवा में कार्बन डाइऑक्साइड और मिथेन जैसी खतरनाक ग्रीन हाउस गैस से स्तर को घटाया जा सके।

मृदा प्रदूषण के क्षेत्र में भी कई नियम तथा योजनाएँ बनाई गयी हैं:

- **पर्यावरण संरक्षण–दूषित स्थलों का प्रबंधन नियम, 2025** (The Environment Protection Management of Contaminated Sites Rules, 2025): 24 जुलाई 2025 को अधिसूचित ये नियम पूरे भारत में दूषित स्थलों की पहचान करने, आकलन करने और सुधारने के लिए एक कानूनी ढाँचा प्रदान करते हैं। राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (SPCBS) और स्थानीय प्राधिकरणों को संदिग्ध दूषित स्थलों को सूचीबद्ध करने का अधिकार दिया गया है। एक बार जब किसी स्थल को दूषित घोषित कर दिया जाता है तो जिम्मेदार पक्ष को एक प्रभावी उपचार योजना तैयार करने और निष्पादित करने का आदेश दिया जाता है। अगर जरूरत हो तो सरकार पर्यावरण राहत कोष फंड का उपयोग कर सकती है।

- **अरावली हरित दीवार परियोजना** (Aravalli Green Wall Project): इस योजना का लक्ष्य खराब हो चुकी भूमि का पुनरुद्धार करना, मरुस्थलीकरण को कम करना, जैव विविधता को बढ़ाना है। यह हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और दिल्ली के हिस्सों को कवर करती है। इस परियोजना का लगभग 1,400 किमी लंबी और 5 किमी चौड़ी होने की संभावना है।

- **एकल–उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध और प्रवर्तन:** पहचान किए गए एकल– उपयोग प्लास्टिक वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाने के लिए केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB)/SPCBs/स्थानीय प्राधिकरणों द्वारा नियमित अभियान चलाए जा रहे हैं।

- **वृक्षारोपण:** राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) ने उन क्षेत्रों में ''गहन वृक्षारोपण'' का आदेश दिया है जहाँ से अतिक्रमण हटाए गए हैं उदाहरण के लिए भोपाल में हरित पट्टियों का पुनरुद्धार किया जा रहा है जिससे मिट्टी के कटाव/भूमि के क्षरण को कम किया जा सके। सर्वोच्च न्यायालय के आदेशनुसार आर्द्रभूमियों (Wetlands) के सीमांकन का कार्य किया जा रहा है।

प्रदूषण नियंत्रण के लिए किए गए प्रयासों के सुधारात्मक परिणाम:–

प्रदूषण नियंत्रण के लिए वैश्विक प्रयासों के उपरांत विभिन्न क्षेत्रों में सुधार देखने को मिले हैं इनमें कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

सीसे में कमी (Lead reduction): नाइट्रोजन ऑक्साइड्स को कम करने के प्रयासों से 1990 से 2021 के बीच UNECE देशों में सीसे के स्तर में लगभग 80% की गिरावट आई। अमेरिका ने 1995 तक पेट्रोल में सीसे का उपयोग पूरी तरह से समाप्त कर दिया जिससे 1980 से 1999 के बीच वायु में सीसे के स्तर में 94% की कमी आई।

ओजोन परत की सुरक्षा: मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण नीति में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है जिसने ओजोन परत को नष्ट करने वाले हानिकारक रसायनों की उत्सर्जन को सफलतापूर्वक कम किया है। चीन में वायु गुणवत्ता में सुधार: 2013 से 2023 के बीच, चीन में PM2.5 की सांद्रता में 57% की गिरावट आयी है।

कचरा प्रबंधन: वैश्विक स्तर पर अब ऐसे कचरा प्रबंधन प्रणालियों की ओर बढ़ावा दिया जा रहा है जो संसाधन–कुशल और टिकाऊ हों जिनमें कचरे में कमी, रीसायक्लिंग और कचरे से ऊर्जा प्राप्त करने की प्रक्रिया शामिल हो।

प्लास्टिक प्रदूषण: वर्ष 2022 में पारित प्रस्ताव ''प्लास्टिक प्रदूषण समाप्त करें'' अंतरराष्ट्रीय कानून के रूप में 175 देशों ने अपनाया और वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग: संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) और भारत के राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) जैसे प्रयास प्रदूषण से निपटने के लिए लक्ष्य किए गए कार्यक्रमों और हितधारकों की भागीदारी के उदाहरण हैं।

भारत के संदर्भ में कहना चाहते हैं कि देश में प्रदूषण नियंत्रण के लिए पिछले वर्षों में अनेक प्रयास किए गए हैं सरकार, न्यायपालिका, और जन सहभागिता सभी ने इसमें भूमिका निभाई है। इन प्रयासों से सुधारात्मक परिणाम तो प्राप्त हुए हैं, लेकिन चुनौतियाँ अब भी बनी हुई हैं। प्रमुख क्षेत्रों में लाये गए सुधारों का सारांश इस प्रकार है:

- **वायु प्रदूषण (Air Pollution) सुधारात्मक परिणाम:**
  - CPCB (केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड) के अनुसार 2019–2024 के बीच कई शहरों में PM स्तर में 18–25% तक गिरावट देखी गई।
  - इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) की संख्या तेजी से बढ़ी है (2025 तक 20 लाख से अधिक पंजीकृत)। FADA–फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन के ताजा आंकड़ों के अनुसार इलैक्ट्रिक वाहनों की बिक्री वर्ष 2024 की तुलना में 2025 में दोगुनी हो गई है।
  - पराली जलाने के मामलों में कुछ कमी आई है।
  - दिल्ली NCR में ग्रैप (GRAP) सिस्टम लागू करके सर्दियों में प्रदूषण स्तर को नियंत्रित करने के लिए ठोस कदम उठाए गए हैं।
  - 2030 तक ''नेट जीरो लक्ष्य'' की दिशा में भारत ने ठोस नीतिगत कदम उठाए गए हैं। 2050 तक नेट जीरो उत्सर्जन का लक्ष्य जिसे "पेरिस समझौता'' भी कहते हैं एक वैश्विक प्रतिबद्धता है जिसके तहत वायुमंडल में उत्सर्जित ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा को कम करके वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5°C तक सीमित करना है)
- **भूमि प्रदूषण (Land Pollution)–सुधारात्मक परिणाम:**
  - इलेक्ट्रॉनिक कचरे के संग्रह और रीसाइक्लिंग की व्यवस्था की गई है।
  - देश के 95% से अधिक गांव अब खुले में शौच से मुक्त घोषित हैं।
  - कई राज्यों में सिंगल यूज प्लास्टिक वस्तुओं पर 60–80% अनुपालन देखा गया है। 5 जून 2025 को "Beat Plastic Pollution" विषय के साथ विश्व पर्यावरण दिवस पर केंद्र सरकार ने एक राष्ट्रीय प्लास्टिक प्रदूषण निवारण अभियान (National Plastic Pollution Reduction Campaign) भी आरंभ किया है।

– रीसाइक्लिंग उद्योग में तेजी आई है।

- **जल प्रदूषण (Water Pollution) सुधारात्मक परिणाम:**
  - CPCB के आंकड़ों के अनुसार गंगा नदी के कई हिस्सों में DO (Dissolved Oxygen) स्तर में सुधार हुआ है।
  - 2024 तक गंगा बेसिन क्षेत्र में सीवेज ट्रीटमेंट क्षमता दोगुनी हुई है।
  - राष्ट्रीय जल जीवन मिशन – हर घर तक स्वच्छ नल जल पहुँचाने हेतु मुहिम चालू है। दिल्ली में जल बोर्ड के कुछ आंकड़े इस प्रकार हैं:

दिल्ली में कच्चे जल के स्रोत और स्वच्छ जल का उत्पादन:

Name of WTP (वॉटर ट्रीटमंट प्लांट का नाम)	Installed Capacity (MGD) (स्थापित क्षमता)	Average Production (MGD) (औसत उत्पादन)	
सोनिया विहार	140	140	ऊपरी गंगा नहर
भागीरथी	100	100	ऊपरी गंगा नहर
चंद्रावल I & II	90	95	यमुना नदी
वजीराबाद I, II & III	120	123	यमुना नदी
हैदरपुर I & II	200	210	भाखड़ा स्टोरेज और यमुना नदी
नागलोई	40	40	भाखड़ा स्टोरेज
ओखला	20	20	मुनक नहर से कच्चा जल
बवाना	20*	15	
द्वारका	50*	40	
रीसाइक्लिंग प्लांटस	45	40	मौजूदा संयंत्रों में अपशिष्ट जल का प्रसंस्करण/उपचार
रैनी कुएँ और ट्यूबवेल	80	80	भू–जल
कुल		**900 MGD**	

(स्रोत: दिल्ली जल बोर्ड)

- **अन्य उल्लेखनीय सुधार जो भारत में किए गए हैं:**
  - 2025 तक भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 180 GW से अधिक हो गई।
  - जन–जागरूकता अभियानों (स्वच्छता ही सेवा, मिशन लाइफ आदि) से लोगों में पर्यावरण चेतना बढ़ी है।
  - भारत सरकार ने बंदरगाह एवं समुद्री प्रदूषण नियंत्रण नियम बनाए हैं जिनका उद्देश्य बंदरगाहों के संचालन में प्रदूषण नियंत्रण, सुरक्षा, दीर्घकालीन समन्वय और समुद्री पर्यावरण संरक्षण उपायों को लागू करना है।
  - परमाणु (न्यूक्लियर) ऊर्जा की क्षमता वृद्धि, सरकार ने अपनी "India's Environmental Transformation" रिपोर्ट में बताया है कि 2014 से 2025 तक परमाणु ऊर्जा क्षमता में लगभग 84% की वृद्धि हुई यह स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम है।

सारांश:–

सारांश ये है कि पर्यावरण में संतुलन की उपयोगिता आज सारे विश्व को समझ आ चुकी है क्योंकि असंतुलन के दुष्परिणाम स्पष्ट रूप से देखे जा रहे हैं। जीव–जगत की सुरक्षा के लिए प्रदूषण को नियंत्रित करना नितांत आवश्यक है और यही एकमात्र विकल्प भी है। अगर हमने पर्यावरण की सुरक्षा नहीं की तो आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन कठिन और असुरक्षित हो जाएगा। पर्यावरण हमारे जीवन की गुणवत्ता और अस्तित्व का आधार है। प्रदूषण नियंत्रण के लिए वैश्विक देशों ने अब अपने–अपने स्तर पर प्रभावी कदम उठाए हैं। कई बड़े

संस्थाएं जैसे WHO, UNEP, UNESCO और वैज्ञानिक–संगठन सुधारात्मक कार्यों में लगे हुए हैं। भारत में भी प्रदूषण से पर्यावरण की सुरक्षा के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं और इसके सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं कुछ क्षेत्रों जैसे नवीकरणीय ऊर्जा, प्लास्टिक नियंत्रण, जल स्वच्छता में ठोस परिणाम मिले हैं जबकि वायु प्रदूषण और औद्योगिक अपशिष्ट नियंत्रण प्रयासों को सख्ती से लागू किया जा रहा है। पर्यावरण– संतुलन बनाना केवल सरकारों का ही काम नहीं है अपितु जन–मानस कि भागीदारी भी उतनी हि महत्वपूर्ण है तभी हम भावी पीढ़ी और जीव–जगत को स्वस्थ पर्यावरण देने में कामयाब हो सकेंगे। श्रीमद्भगवद्गीता के एक श्लोक का उल्लेख करना यहाँ अन्यथा नहीं होगा और इसको मूलमंत्र मानते हुए निरंतर प्रयासरत रहना होगा तभी लक्ष्य की प्राप्ति संभव हो पाएगी यथाः

अन्नाद्भवन्ति भूतानि, पर्जन्यादन्नसम्भवः। यज्ञाद्भवति पर्जन्यो, यज्ञः कर्मसमुद्भवः।।

यह श्लोक बताता है कि मानव के निःस्वार्थ और धर्मपरक कर्म ही प्रकृति के संतुलन और पर्यावरण की शुद्धता का आधार हैं। यह श्लोक सृष्टि के चक्र को बताता है। सभी जीव अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न वर्षा से पैदा होता है, वर्षा यज्ञ से होती है और यज्ञ कर्मों (कर्तव्य) से उत्पन्न होता है। इसका अर्थ है ब्रह्मांड एक–दूसरे से जुड़े हुए कार्यों की एक श्रृंखला (ecosystem) है और सभी कार्य अंततः सृष्टि को बनाए रखने के लिए किए जाते हैं।

दिनेश चंद्र जोशी
उप अधिकारी
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

साभारः लेख में दिए गए आंकड़े समाचार–पत्रों और संबन्धित वेब–साइट से उद्धृत हैं।

आदिवासी गौरव और देशभक्ति

वन में ही जीवन, वन में प्रयाण,
सादा जीवन, अनुशासन प्रधान।
आदिवासी हम–प्रकृति की संतान,
खग–मृग सखा, अकथ सम्मान।

वन जीवन में अपनापन साम,
हर मन हँसता–रमता ग्राम।
भारत माँ के प्रिय सपूत प्रथम,
प्रकृति सेवा, बलिदान धरम।

भील, कोरबा, उराँव और मुंडा,
नाम अनेक, पर लक्ष्य एक – झंडा।
कपट की चाल, न चले हथकंडा,
जब वनवासी हाथ उठाए खंडा।

वीर बुधू भगत और लक्ष्मण नायक,
अमर बिरसा मुंडा से थे रणनायक।
वीर नारायण जी का संग्राम निर्णायक,
हर बच्चा बनने चला जननायक।

हॉकी को दी इगनेस, दिलीप तिर्की ने जान,
जग को हुआ कुमारी दीपिका के तीरों का भान।
बॉक्सर मैरीकॉम ने रचा नया कीर्तिमान,
आदिवासी वीरों पर है हमें अभिमान।

देश की प्रथम नागरिक, आदिवासी बेटी,
रखती भारत – सेवा, निष्ठा की परिपाटी।
पवित्र संविधान से जुड़ी हमारी माटी,
तिरंगा लहराए हर पर्वत, हर घाटी।

धनंजय कुमार बरनवाल
अभियंता(निजी सचिव)
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

प्रदूषण मुक्त भारत की ओर एक प्रयास

प्रदूषण आज की ज्वलंत समस्या है। हम सभी जानते है पूरे भारतवर्ष में प्रदूषण की समस्या कम ज्यादा सभी राज्यों में चल रही है। दिल्ली की बात करें तो आजकल एक्यूआई 400 के आस–पास है। दिल्ली सहित अन्य राज्य गैस के चेम्बर बने हुए है। परिणामस्वरूप लोगो को सांस की समस्या, दिल के दौरे जैसे कई बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। शोध में यह भी बताया जा रहा है कि प्रदूषण से लोगो की उम्र कम हो रही है। बच्चे बीमार पैदा हो रहे है और उनमें फेफड़े से संबन्धित गंभीर बीमारियाँ पाई जा रही है। बीमा कंपनियों की रिपोर्ट के अनुसार 43% दावे 10 वर्ष तक के बच्चों के हो रहे है। यह अत्यंत चिंता का विषय है।

जीवन को बेहतर और अधिक प्राकृतिक बनाने के लिए प्रत्येक वर्ष 5 जून "पर्यावरण दिवस" के रूप में मनाया जाता है। पर्यावरण में कुछ सकारात्मक बदलाव लाने के लिए इसकी घोषणा और स्थापना संयुक्त राष्ट्र महासभा के द्वारा 1972 में हुई थी, हालांकि इस कार्यक्रम को हर साल मनाने की शुरुआत 1973 से हुई। इसका वार्षिक कार्यक्रम संयुक्त राष्ट्र के द्वारा घोषित की गई विशेष थीम या विषय पर आधारित होता है। इसका मुख्यालय नैरोबी, केन्या में है। भारतवासियों ने अलग–अलग तरह से विभिन्न गतिविधियों द्वारा इस दिन की विशेषता को सामने लाने का प्रयास किया। देश की बड़ी–बड़ी संगठनो ने अपने स्तर पर पर्यावरण के लिए जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए, जिसमे मुख्य है वृक्षारोपण कार्यक्रम। प्रदूषण मुक्त समाज के निर्माण में वृक्षारोपण एक विशेष पहल है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हम पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सामूहिक प्रयास करें। इस संबंध में किसी ने बहुत सही कहा है– "हम धरती को हमारे पूर्वजों से विरासत में नहीं पाए हैं हमने इसे अपने बच्चों से उधार लिया है।"

आधुनिक तकनीकों में असीम शक्ति है, एक ओर जहां वह मानव को आधुनिक सुख–सुविधा से लैस करता है वहीं दूसरी ओर पूरे पर्यावरण को बहुत ही असंतुलित कर देता है। मानव अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए लगातार पर्यावरण का अंधा–धुंध दोहन कर रहा है। वृक्षों को काटकर मकान, फैक्टरी और अपनी सुविधा के साधन जुटा लेता है। वाहनों का प्रयोग करता है जिससे निकलने वाले धुओं से आज कई नई तरह की लाइलाज बीमारियाँ हो रही है।

भले ही विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने प्रकृति के संतुलन की मौलिक शर्तों को बदल दिया हो, लेकिन हमें अभी भी पर्यावरण को धारण करने की जरुरत है। मानव समाज पर्यावरण में निहित है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सबसे पहले मनुष्य को पर्यावरण में, जिस पर कि वो पूरी तरह से निर्भर हैं, उसका सम्मान करना हमारा नैतिक कर्तव्य है।

दिनोदिन बढ़ते प्लास्टिक के प्रयोग से अंततः हमें नुकसान ही होगा भले ही हमें अभी ऐसा नहीं लगता कि उनसे हमें कोई खतरा भी है, लेकिन इनमें प्रयुक्त रसायनों से मनुष्य स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभावों को लेकर जो शोध परिणाम सामने आ रहे हैं वे चिन्तित करने वाले हैं। पर्यावरणीय रसायनों जिसमें आर्सेनिक और कैडमियम से लेकर कई पेस्टीसाईड तक मौजूद हैं। यह केवल पर्यावरण के ही दूषित होने का मामला नहीं है, हमारे शरीर तक प्लास्टिक रसायनों से प्रदूषित हो चुके हैं।

इन तत्वों की सूक्ष्म मात्रा भी गम्भीर स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे रही है। इनके चलते मोटापा, मधुमेह, आटिज्म, ध्यान केन्द्र में कमी जैसी समस्याएं ऐसे रसायनों के मानव शरीर में घुसपैठ के कारण हो सकती हैं।

नए शोधों में यह तथ्य उजागर हुआ है कि औद्योगिक रसायनों और खासकर प्लास्टिक के निर्माण में इस्तेमाल होने वाले रासायनिक तत्वों की एक अति सूक्ष्म मात्रा का एक खरबवां हिस्सा भी मनुष्य स्वास्थ्य के लिए खतरा बन सकती है। कुछ विषैले तत्व जैसे सीसे के 10 माइक्रोग्राम की अति सूक्ष्म मात्रा भी 'आई क्यू' को सीधे प्रभावित कर सकती है।

प्लास्टिक अपशिष्ट जलाने से आमतौर पर कार्बन डाइऑक्साइड और कार्बन मोनोऑक्साइड गैसों का उत्सर्जन होता है जो श्वसन नालिका या त्वचा की बीमारियों का कारण बन सकता है। इसके अलावा पॉलीस्टाइन प्लास्टिक के जलने से क्लोरो–फ्लोरो कार्बन का उत्पादन होता है जो वायुमंडल के ओजोन परत के लिए हानिकारक होता है। इसी तरह पोलिविनाइल क्लोराइड के जलने से क्लोरीन और नायलॉन का उत्पादन होता है और पॉलीयोरेथन नाइट्रिक ऑक्साइड जैसे विषाक्त गैसें निकलती हैं।

प्लास्टिक को फेंकने और जलाने दोनों से ही पर्यावरण को समान रूप से हानि पहुँचती है। प्लास्टिक जलने पर एक बड़ी मात्रा में रासायनिक उत्सर्जन होता है जो श्वसन प्रणाली पर इनफलिंग का कारण बनता है। चाहे प्लास्टिक को जमीन में डाल दें या पानी में फेंक दें इसके हानिकारक प्रभाव कम नहीं होते हैं।

यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि हम पॉलीथीन

या प्लास्टिक के युग में रह रहे हैं। हर कोई जानबूझकर पॉलीथीन की दुष्प्रभावों से अनजान बना हुआ है जो कि एक प्रकार का जहर है जो अंततः पर्यावरण को नष्ट कर देगा। अगर हम भविष्य में प्लास्टिक से छुटकारा चाहते हैं तो इससे पहले की बहुत देर हो जाए, हम सभी को अपने स्तर से सही कदम उठाने की आवश्यकता है। हम व्यक्तिगत स्तर पर महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं, जैसे प्लास्टिक बैग, बोतल, स्ट्रॉ आदि सिंगल यूज वस्तुओं का उपयोग कम करें। सार्वजनिक परिवहन अपनाएं, कार–शेयरिंग, साइकिल आदि को प्राथमिकता दें। कचरा सही तरह से विभाजित करें और पुनरावलोकन योग्य वस्तुओं को संग्रह करें।

हमारा पहला कदम हम हमारे घर से ही शुरू करें। अपने बच्चों तथा परिवार के सदस्यों को प्लास्टिक का उपयोग कम से कम करने या न करने की सलाह दें और प्रदूषण मुक्त भारत की ओर पहला प्रयास करें। लियोनार्डो डिकैप्रियो का कहना है: "हमारे ग्रह की अलार्म घड़ी बज रही है, और अब हमें जागने का समय है।" जाने–माने पर्यावरणविद रेचल कार्सन ने कहा था–"प्रकृति के खिलाफ हर युद्ध, असल में मानव के अपने अस्तित्व के खिलाफ युद्ध है।"

यानी जब हम पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं, तो असल में खुद अपने भविष्य को खतरे में डालते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि धरती को बचाने के लिए हमें क्या करने की आवश्यकता है। अपने बच्चों के लिए आप कैसा पर्यावरण छोड़ना चाहते हैं, निर्णय आपका है।

प्रीति साह
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी
इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड

हिंदी !!!

हिंद देश की भाषा हूँ मैं, भाषा हूँ जन–जन की
हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं हिंदी!!!

सहज सरल मैं, सजल सबल मैं
मैं सुशील संस्कारी
सुगम सुगढ मैं, सुरस सरस मैं
मैं विनीत व्यवहारी

मैं वैज्ञानिक मैं वैधानिक, मैं नियमों में रहती
हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं हिंदी!!!

कैसे भी हों भाव भले ही
मिलती सबको राहें
सबका स्वागत करते मेरे
शब्द खोलकर बाहें

टेढ़े मेढे पथ पर भी मैं, कल कल कल कल बहती
हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं हिंदी!!!

जैसी अंदर वैसी बाहर
इक सी कथनी करनी
सुंदर सुंदर अक्षर चढ़कर
पार करूँ वैतरणी

मिश्री से भी मीठी मीठी, मैं टिकिया मक्खन की
हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं हिंदी!!!

मैं हूँ सबसे जेठी लेकिन
कभी न धौंस दिखाई
उलटा अपमानों को गटका
मैं हरदम मुसकाई

मैं अनुरोधों का क्रम अविरल, मैं अनुनय मै विनती
हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं हिंदी!!!

मुझको अपने अधर धरेंगे
इक दिन भारत वासी
इस कारण मैं जप तप में हूँ
इस कारण उपवासी

इक दिन भाल धरेगा भारत, इस आशा में जिंदी
हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं हिंदी!!!

आलोकेश्वर चबडाल
वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा)
गेल (इंडिया) लिमिटेड

बात-बात में यहां दिखावा है

हक़ीक़त कुछ भी नहीं बात–बात में यहाँ दिखावा है,
पाखंडी ये दुनिया झूठी शान–शौकत बस छलावा है।

गलतियों पर टोका ना माँ–बाप ने गलत राहें चले गए,
बच्चों से ज्यादा लाड़–प्यार का होता यही नतीजा है।

रिश्तों–नातों का अब कोई मोल ना रहा अब दिलों में,
स्वार्थ में इतना गिरा अपनों के ही खून का प्यासा है।

नैतिकता भूल गए सब्र, धैर्य रहा ना अब के लोगों में,
ना ही आता आज की पीढ़ी को जीने का सलीका है।

पहले पहल तो सोचा तक नहीं गलत करते चले गए,
बाद में भुगतते कर्मों का फल ये वक्त का तकाजा है।

जिन्दगी की आपाधापी में चैन–ओ–सुकून सब गंवाया,
वक्त के हाथों मात खा–कर ये जिन्दगी हुई तमाशा है।

मेरा घर बड़ा, मेरी गाड़ी बड़ी हो दूसरों से यहीं चाहत,
औकात में बसर करना किसी को नहीं यहाँ गवारा है।

प्यार से सजाई होती ये जिन्दगी ''पुखराज'' तो महकती,
पर अब लोगों के लिए प्यार बन गया यहाँ पर सौदा है।

पुखराज मीना
कार्यपालक
एनएसएफडीसी, दिल्ली

सतर्कता: एक साझा जिम्मेदारी

सतर्कता है वह ज्योति प्रखर,
जो मिटाए मन का प्रत्येक तिमिर।
उठो, जागो, बनो प्रहरी न्यारे,
सत्य के पथ पर चलो सदा सारे।

सतर्कता है वो पुकार हृदय की,
जो बांधे डोर एकता की।
सतर्कता है जीवन का आधार,
हर कदम पर रखे हमें सतर्क और तैयार।

आँखें खुली और मन में हो जागृति एवं विश्वास,
अन्याय के खिलाफ एकजुट हो जाओ।
साझा जिम्मेदारी, सबका है भार,
नैतिकता का दीप जलाओ हर बार।

भ्रष्टाचार की छाया को दूर भगाओ,
ईमानदारी का पथ सबको दिखाओ,
सतर्कता है साझा जिम्मेदारी का पवित्र बंधन,
जिससे बने देश हमारा प्यारा और वंदन।

सतर्कता से बने सुंदर समाज,
हाथ मिलाकर, कंधे से कंधा मिलाकर,
सत्य की राह पर बढ़े चलो,
आओ, प्रण करो, बनाओ नया इतिहास,
सतर्क समाज ही है विकसित भारत का आगाज।

नम्रता बजाज
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
केन्द्रीय भंडारण निगम

समय प्रबंधन

समय प्रबंधन से तात्पर्य विभिन्न कार्यों को उनकी प्राथमिकता और महत्व के आधार पर उनको क्रम से व्यवस्थित करके अपने समय का कुशलतापूर्वक सदुपयोग करने से है और यह तभी हो सकता है जब हम समय का महत्व समझे। इस बारे में कई कहावतें आपने सुनी होगी जैसे **बीता समय कभी वापस नहीं आता है, सांप निकल गया अब लाठी पीटने से क्या फायदा, समय किसी का भी इंतजार नहीं करता अथवा समय बड़ा बलवान होता है.........** इत्यादि। ये सभी कहावतें समय का महत्व बताती हैं। समय प्रबंधन सुनने और बोलने में जितना आसान लगता है उतना होता नहीं। यह सत्य है कि सफलता के प्रमुख सौंपानों में कठिन परिश्रम और दृढ़ निश्चय आते हैं परंतु समय का प्रबंधन अथवा समय का सदुपयोग करने का महत्व भी इन दोनों सौंपानों से किसी भी दृष्टि से कम नहीं होता है और जिसने समय का महत्व समझ लिया उसके लिए कोई भी लक्ष्य कठिन और असंभव नहीं होता है। वह हर लक्ष्य में सफलता प्राप्त करता है।

ऐसा कहा जाता है कि सफलता की दिशा में पहला कदम कुशल समय प्रबंधन है। जो अपने समय को ठीक से व्यवस्था नहीं कर सकता वह हर चीज में विफल हो जाता है। कुशल समय प्रबंधन आपके कार्य–निष्पादन (परफोर्मेंस) को बढ़ाता है, काम की गुणवत्ता सुधारता है और तनाव कम करने में भी मदद करता है। बेंजामिन फ्रैंकलिन ने मत व्यक्त किया था कि **"समय पैसा है"** और वह मत व्यापारिक दुनिया का मंत्र बन गया क्योंकि उनका मानना था कि आप रूक सकते हैं लेकिन समय नहीं रूकता तथा खोया समय कभी दोबारा नहीं मिलता। मेरे विचार में समय तो पैसे से भी बहुमुल्य हैं क्योंकि पैसा अर्जित किया जा सकता है, संचित किया जा सकता हैं, उसमें वृद्धि की जा सकती है परंतु पैसे से समय को खरीदा नहीं जा सकता, उसे अर्जित नहीं किया जा सकता, उसे संचित नहीं किया जा सकता और न ही उसमें विस्तार किया जा सकता है। केवल उसका सदुपयोग किया जा सकता है। **यह मूल मंत्र याद रखो कि जो कार्य आज किया जा सकता है उसे कल पर मत छोड़ो, क्योंकि वो कल अर्थात् समय फिर कभी नहीं आता है।**

प्रत्येक व्यक्ति के लिए समय प्रबंधन महत्वपूर्ण है चाहे आप एक पेशेवर हैं, छात्र है, गृहिणी है, कार्यालय में अधिकारी/कर्मचारी है अथवा अन्य किसी क्षेत्र में संलग्न है– यदि आप अपने समय को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने में सक्षम हैं तो आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने से पीछे नहीं रहेंगे। समय प्रबंधन का प्रमुख महत्व निम्नलिखित रूप में माना जा सकता है।

- लक्षित कार्य आसानी से समय पर पूरा हो जाता है।
- आपकी निष्पादन (परफोर्मेंस) को बढ़ाता है।
- काम की गुणवत्ता सुधारता है।
- तनाव कम करने में भी मदद करता है।
- कम परिश्रम करने से अधिक परिणाम प्राप्त होते हैं।
- मन एवं शरीर स्वस्थ रहता है।
- कोई भी कार्य अथवा लक्ष्य कठिन नहीं लगता है अपितु यह आपको कठिन कार्य करने के लिए प्रेरित भी करता है।
- सही निर्णय लेने में मदद मिलती है और इसमें आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।
- समय प्रबंधन हमारे व्यावसायिक और निजी जीवन में संतुलन और सामंजस्य लाता है।

समय प्रबंधन का उपर्युक्त महत्व तो हमने समझ लिया परंतु अब प्रश्न है कि इसे अमल में कैसे लाया जाए। नीचे कुछ महत्वपूर्ण उपाय/तरीके दिए गए हैं जिनको अपनाकर हम इसमे सफलता प्राप्त कर सकते हैं। परंतु इन उपायों/तरीकों को अमल में लाने के लिए हमें आत्म–अनुशासन को अपनाना अनिवार्य है इसके बिना इसमें हम पूरी तरह से सफल नहीं हो सकतेः

- दैनिक कार्यों की एक सूची तैयार करें।
- विवेकपूर्ण अपने कार्यों को प्राथमिकता दें और अच्छा रहेगा यदि आप इन कार्यों का समय निर्धारण भी कर लें। यदि अपेक्षित हो तो प्राथमिकता का पुनः निर्धारण भी कर सकते हैं।
- प्रत्येक कार्य के बीच कुछ ब्रेक/अंतराल रखें।
- किए गए कार्यों की समीक्षा/मूल्यांकन करें और पाई गई कमियों को अगले कार्यों में दूर करें और सदैव गुणवत्ता को महत्व दें।

- यदि कोई कार्य पूरा न हो पाए तो हताश न हो बल्कि शांतिपूर्वक उसे पूरा करने का प्रयास करें।
- सामूहिक कार्यों में टीम भावना से कार्य करें।
- यदि आपके अधीनस्थ अच्छा कार्य करते हैं तो उन्हें श्रेय अवश्य दें और इसका मनोबल बढ़ाएं।
- समय प्रबंधन करते समय अपने स्वास्थ्य के लिए भी कुछ समय अवश्य निर्धारित करें।
- सिर्फ श्रेय लेने की भावना न रखें।
- किसी भी कार्य को पूरा करने में जल्दबाजी या हड़बड़ाहट ना करें बल्कि शांतिपूर्वक करें।
- व्यर्थ अथवा फालतू के कामों में समय नष्ट करने से बचें।
- अपने व्यावसायिक/पेशेवर/कार्यालयी कार्यों के साथ–साथ स्वयं और परिवार के लिए भी सयम निकालें और इन दोनों में सामंजस्य बनाएं। इसे बिल्कुल भी नजरअंदाज न करें।
- उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी का सदुपयोग करें। आज के डिजिटल युग में अनेक समय प्रबंधन उपकरण उपलब्ध हैं– जैसे मोबाइल/डिजिटल कैलेंडर, रिमाइंडर, नोट्स, या ऐप्स आदि। इनका उपयोग करके कार्यों को समय पर करना आसान हो जाता है। इसके साथ ही फेसबुक, चौटिंग और वाट्सअप जैसे अनावश्यक कार्यों में समय व्यर्थ करने से बचें।
- दूसरो को भी कार्य करने दें अर्थात् यदि कोई ऐसा कार्य है जो कम महत्वपूर्ण है और दूसरों से करा सकते हैं तो उसे आगे डेलिगेट कर दें और स्वयं महत्वूर्ण कार्य कर लें।

समय प्रबंधन कोई एक बार सीखी जाने वाली कला नहीं है, बल्कि यह निरंतर अभ्यास का विषय है। जो व्यक्ति अपने समय का सम्मान करता है, वह स्वयं का सम्मान करता है। सफलता, संतुलन और संतोष इन तीनों का आधार सही समय प्रबंधन है। इसलिए हमें सदैव "अभी करो" का सिद्धांत अपनाना चाहिए और हर क्षण को सार्थक बनाना चाहिए। इस प्रकार समय प्रबंधन के महत्व को समझकर अपने जीवन में इसे अपनाएं और सफल एवं सुखमय जीवन यापन करें।

सतीश कुमार सोलंकी
प्रबंधक (राजभाषा)
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड

उम्र ढलती रही

मैं लड़ता रहा, उम्र ढलती रही,
जब आंखें खुलीं,
जिंदगी की शाम हो गई,
डरावनी काली रात भी आ गई,
अब भोर होने की उम्मीद न थी,
दिन का उजाला अब कहां?

अफसोस यूं करता रहा,
क्यों नहीं मैं जीवन के उजाले में,
कुछ अच्छा किया, भरपूर जिया?
आखिरी बार जब आंखें बंद हुईं,
फिर न खुलीं, अफसोस,
मैं लड़ता रहा, उम्र ढलती रही।

इन्ताज अली
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
रेडियो निर्माण एवं विकास एकक
एकीकृत प्रशासनिक एकक

"शाकाहारः एक सशक्त और संतुलित जीवनशैली"

शाकाहारः प्रकृति के करीब जीवनशैली

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। ऐसे में शाकाहार न केवल एक आहार प्रणाली है, बल्कि यह एक स्वस्थ, संतुलित और नैतिक जीवनशैली का प्रतीक भी है। शाकाहार का महत्व केवल स्वास्थ्य तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण और जीव–जंतुओं के प्रति हमारे उत्तरदायित्वों को भी दर्शाता है।

पर्यावरण संरक्षण में भूमिका

शाकाहार पर्यावरण संरक्षण में भी अहम भूमिका निभाता है। मांस उत्पादन में अधिक पानी, भूमि, और ऊर्जा की खपत होती है। इसके विपरीत, शाकाहारी भोजन के उत्पादन में इन संसाधनों की कम आवश्यकता होती है। साथ ही, मांस उत्पादन से होने वाला कार्बन उत्सर्जन जलवायु प्रदूषण का कारक है। शाकाहार अपनाकर हम पर्यावरण को स्वस्थ रखने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं।

नैतिक दृष्टिकोण

शाकाहार अपनाने का एक महत्वपूर्ण कारण जीव–जंतुओं के प्रति करुणा और नैतिकता है। यह दृष्टिकोण अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित है, जो भारतीय संस्कृति और धर्म का अभिन्न हिस्सा है। जानवरों के प्रति दयालुता दिखाना और उनके अधिकारों का सम्मान करना हमारे समाज को अधिक मानवीय बनाता है।

शाकाहार और भारतीय संस्कृति

भारत में शाकाहार का प्राचीन इतिहास रहा है। यहां की परंपरागत भोजन शैली में दाल, रोटी, चावल, सब्जियां और मसालों का समावेश होता है, जो भोजन को न केवल स्वादिष्ट बल्कि पोषक भी बनाते हैं। आज, शाकाहार वैश्विक स्तर पर भी लोकप्रिय हो रहा है।

शाकाहार अपनाने की ओर कदम

शाकाहार को अपनाना बहुत सरल है। भोजन में अधिक से अधिक फल, सब्जियां और दालों का उपयोग करना चाहिए। पौधों से प्राप्त प्रोटीन, जैसे सोया, छोले, और मूंगफली आदि मांस का उत्तम विकल्प हैं। साथ ही, शाकाहारी व्यंजनों के प्रयोग एवं रचनात्मकता से खाना और भी रुचिकर बन सकता है।

शाकाहार का स्वास्थ्य पर प्रभाव

शाकाहार को वैज्ञानिक रूप से एक स्वस्थ आहार प्रणाली माना जाता है। यह फाइबर, विटामिन, और खनिजों का उत्कृष्ट स्रोत है। फल, सब्जियां, अनाज, और दालें शरीर को आवश्यक पोषण प्रदान करती हैं। यह आहार हृदय रोग, मधुमेह, और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों के खतरे को कम करता है। इसके अतिरिक्त, शाकाहार वजन प्रबंधन में भी सहायक होता है।

मांसाहारी लोग दिल की बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील क्यों होते हैं? जीव वैज्ञानिकों और पोषण विशेषज्ञों के अनुसार, इसका एक कारण यह है कि मानव शरीर की आंतें मांस को पचाने के लिए उपयुक्त नहीं हैं। मनुष्य की आंतें शाकाहारी

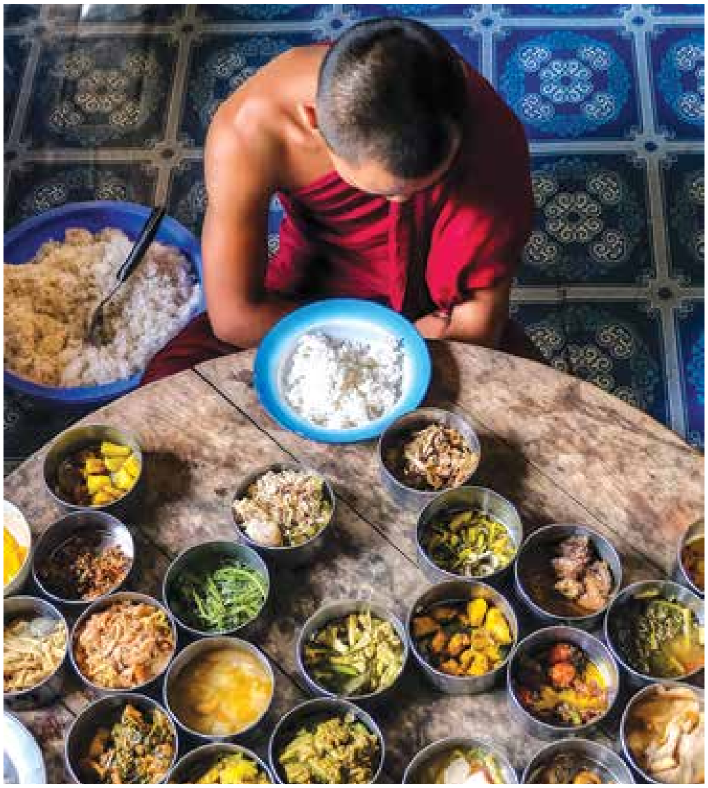

जीवों की तरह लंबी होती हैं, इसलिए यदि वह मांस खाता है, तो शरीर में विषाक्त पदार्थों का भार गुर्दों पर पड़ता है, जिससे गाउट, गठिया, वात रोग और यहां तक कि कैंसर जैसी बीमारियां हो सकती हैं।

यह सवाल आपके मन में आ सकता है– क्या शाकाहारी भोजन हमें पर्याप्त शारीरिक शक्ति प्रदान करेगा? क्यों नहीं? अगर शाकाहारी भोजन से हाथी, गैंडा और दरियाई घोड़ा जैसे विशालकाय जीव अपनी असाधारण शक्ति प्राप्त कर सकते हैं, तो यह हमारे शरीर को पोषण क्यों नहीं देगा? और सबसे बड़ी बात यह है कि भगवान की सभी रचनाओं को जीने का समान अधिकार है। अतः अगली बार जब आप मांसाहारी भोजन की योजना बनाएं, तो इन तथ्यों को अवश्य ध्यान में रखें।

निष्कर्ष

शाकाहार केवल आहार पद्धति नहीं, बल्कि एक जागरूक जीवनशैली है। यह न केवल हमारे स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, बल्कि पर्यावरण और जीव–जंतुओं के प्रति हमारे उत्तदायित्व को भी दर्शाता है। आज जब पूरी दुनिया स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण की ओर बढ़ रही है, तो शाकाहार अपनाना समय की मांग है।

रजनी टेकचंदानी
प्रबन्धक (आशुलिपि)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (नि.मु.)

दो शहर

अहमदाबाद की गलियाँ,
बचपन की वो बात,
हर मोड़ पे अपनापन,
हर स्वाद में साथ।
फाफड़ा–जलेबी की खुशबू,
खाखरे का स्वाद,
हर दिन था सादा,
हर पल में उमंग।
लोग थे सीधे,
दिल से भरे,
हर दरवाजे पे अपनापन मिले।
यादें हैं अब भी उन गलियों के साथ,
जहाँ हँसी थी सच्ची,
और रिश्तों में बात।
फिर एक दिन आया,
जब सपनों ने दिल्ली की राह चुनी,
दिल्ली ने खोले सपनों के द्वार सभी।

हर सुबह यहाँ उम्मीदों से भरी,
हर शाम में चमक,
हर गली में नई कहानी।
यहाँ लोग हैं तेज,
आत्मविश्वास से भरे,
हर कदम पे बढ़ते,
अपने सपनों के सहारे।
दिल्ली ने उड़ान दी,
अहमदाबाद ने जड़ें,
दोनों ने मिलकर दीं पहचान की परतें।
एक ने बचपन सँवारा,
दूसरा भविष्य बना,
दो शहर हैं ये,
पर दिल में एक ही ठिकाना।
मिठास है एक में, उड़ान है दूजे में,
मेरी कहानी के दो रंग हैं,
इन दोनों के सांचे में।

सुश्री हनिशा भागिया
सहायक प्रबंधक (मासंप्र)
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

भारत अर्थ मूवर्स (बीईएमएल): राष्ट्र का प्रेरक बल

नव निर्माण की धरा पे जब उमड़ी थी लहर विकास की,
देखा था एक स्वप्न, जीत हुई, मेहनत और विश्वास की।
1964 से आज तक, कहानी है ये परिश्रम की गति की,
भारत अर्थ मूवर्स, पहचान है सफलता की, प्रगति की।

धरती के सीने को चीर, चलती है मशीनें बलशाली,
खदानों से सीमाओं तक, कहानी है इसकी निराली।
डिफेन्स, रेलवे, इन्फ्रा या माइनिंग का हो अभियान,
हर क्षेत्र में बढ़ाए कदम, बन गया भारत का अभिमान।

मूलभूत ढांचे को दी गति, और किया उन्नति का विस्तार,
इंजीनियरिंग के संग जोड़ा अपना आत्मनिर्भरता का सार।
मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत का है प्रहरी महान,
बीईएमएल के कर्मवीरों ने रचा, नवयुग का नव अभियान।

अब बढ़ रहा है आकाश की ओर, बना रहा है आकाश का पथ,
ड्रोन्स, ऐम–आर–ओ और रक्षा उपकरणों, सबमें बढ़ा इसका रथ।
वंदेभारत, फ्यूचर टेक्नोलॉजी संग चलकर, हो रहा अगुआ निर्माण का,
राष्ट्र रक्षक, राष्ट्र निर्माता, यही है उद्देश्य बीईएमएल की कमान का।

चलो सलाम करें उस शक्ति को, जो मिट्टी से सोना गढ़े,
हर कार्य में सेवा भाव से, आगे बढे व देश का मान बढ़े।
भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड – प्रतीक है स्वाभिमान का,
अद्वितीय रहे गौरव इसका, उद्देश्य है राष्ट्र निर्माण का।

बी ई एम एल
NEW FRONTIERS NEW DREAMS

विंग कमांडर पवन भारद्वाज (से नि)
उप महाप्रबंधक (विमानन अंतरिक्ष विपणन)
बी ई एम् एल लिमिटेड

वक्ताओं की ताकत भाषा, लेखक का अभिमान है भाषा,
भाषाओं के शीर्ष पर बैठी, मेरी प्यारी हिंदी भाषा।

“भीष्म प्रतिज्ञा”

भीष्म प्रतिज्ञा से हमारा तात्पर्य ऐसी प्रतिज्ञा से है जो अटूट और अटल हो। हस्तिनापुर के महाराजा शांतनु एवं गंगा पुत्र राजकुमार देवव्रत अपनी भीष्ण प्रतिज्ञा के कारण भीष्म पितामह के नाम से प्रसिद्ध हुए। देवव्रत अर्थात भीष्म पितामह की यह भीष्ण प्रतिज्ञा, अनगिनत उतार–चडावों को पार कर पूर्ण हुई। भीष्म पितामह एवं उनकी भीष्ण प्रतिज्ञा का हस्तिनापुर के “कुरु राजवंश” के साम्राज्य एवं महाभारत के महासंग्राम में प्रमुख प्रभाव रहा है। भीष्म पितामह एवं उनकी भीष्ण प्रतिज्ञा के कुछ पड़ावों के बारे में पुनरावलोकन कर इसके बारे में और अधिक जानने का प्रयास करते हैं।

प्रतिज्ञा क्या होती है और यह क्यों ली जाती है। साधारण शब्दों में प्रतिज्ञा एक प्रकार का आश्वासन है, जो विशेष परिस्थितियों में किसी प्रयोजन को पूर्ण करने हेतु, किसी एक के द्वारा किसी दुसरे को दिया जाता है। यह आश्वासन, किसी बात को करने या न करने से संबंधित हो सकता है। प्रतिज्ञा देने(या लेने) वाला व्यक्ति अपने आप को प्रतिज्ञा के अधीन बना लेता है और उसकी सीमा को किसी भी परिस्थिति में नहीं लाँघता है। प्रतिज्ञा की अवधि प्रतिज्ञा की प्रकृति पर निर्भर करती हैं, जो घंटो महीनो या वर्षों या जन्मों–जन्म तक हो सकती है।

जैसा कि हम जानते है कि देवव्रत अर्थात भीष्म पितामह के पिता महाराज शांतनु ने, सत्यवती के प्रेम में आसक्त होकर राजपाठ से मुहं मोड़ लिया और दुखी रहने लगे थे। जब देवव्रत को पता चला कि सत्यवती के पिता ने, महाराज शांतनु से अपनी पुत्री सत्यवती के विवाह के लिए यह शर्त रखी है कि हस्तिनापुर का अगला राजा उनकी पुत्री से पैदा हुआ पुत्र ही बनेगा, जिसे महाराज ने स्वीकार करने से मना कर दिया हैं क्योंकि उस समय राजकुमार देवव्रत, महाराज शांतनु एवं गंगा के बड़े पुत्र होने के नाते हस्तिनापुर के युवराज थे और राजसिंहासन पर देवव्रत का ही अधिकार था। इसलिए महाराज शांतनु ने सत्यवती से विवाह की इच्छा होते हुए भी, देवव्रत के अधिकार को तिलांजलि देना सही नहीं समझा और सत्यवती के पिता की शर्त को अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार सत्यवती से बिछड़ने के गम में महाराज शांतनु दुखी रहने लगे। अपने पिता महाराज शांतनु की इच्छा को पूर्ण करने के लिए और सत्यवती से उनका विवाह करवाने के लिए देवव्रत ने, सत्यवती के पिता के सामने, आजीवन ब्रह्मचारी रहने और हस्तिनापुर राजसिंहासन की सेवा एवं सुरक्षा करने की प्रतिज्ञा ली। देवव्रत आगे चलकर अपनी इसी भीष्ण प्रतिज्ञा के कारण भीष्म पितामह के नाम से प्रसिद्ध हुए। इस प्रकार देवव्रत की प्रतिज्ञा से संतुष्ट होकर सत्यवती के पिता ने अपनी पुत्री का विवाह महाराजा शांतनु से कर दिया। महाराजा शांतनु अपने पुत्र की प्रतिज्ञा से बहुत विह्वल हुए और उन्होंने देवव्रत को “इच्छा मृत्यु” का वरदान दिया।

ये तो रही भीष्म प्रतिज्ञा के बारे में, अब देखते है कि इस प्रतिज्ञा ने आगे चलकर क्या–क्या देखा और कौन–कौन से पड़ाव पार किए। महाभारत के संग्राम में इस प्रतिज्ञा के क्या प्रभाव रहे। आगे हम देखते हैं कि सत्यवती के दो पुत्र हुए उनमें से एक की मृत्यु विवाह से पूर्व ही हो गई और दूसरे पुत्र विचित्रवीर्य विवाह उपरांत भी निःसंतान रहे। भीष्म ने विचित्रवीर्य का विवाह, काशीराज की कन्याओं अम्बा, अम्बे, अम्बालिका का स्वयंवर से अपहरण करके करवाया क्योंकि विचित्रवीर्य इतने सक्षम नहीं थे और न ही काशी नरेश ने उन्हें स्वयंवर हेतु निमंत्रण दिया था। इसी स्वयंवर से अम्बा को भीष्म ने अपर्हित किया था जिसने विचित्रवीर्य से विवाह करने से मना कर दिया और भीष्म से विवाह करने को कहा। यहाँ पर, भीष्म ने अपने ब्रह्मचर्य पालन की प्रतिज्ञा के कारण अम्बा से विवाह करने से मना कर दिया। इससे अम्बा बहुत आक्रोशित हुई और उसने भीष्म पितामह को श्राप देते हुए कहा कि तुम्हारी मृत्यु का कारण मैं बनूँगी। कालांतर में यही अम्बा, पंचाल नरेश के यहाँ राजकुमार शिखंडी के रूप में जन्म लिया और महाभारत के युद्ध में, भीष्म पितामह की मृत्यु का कारण बना। इस प्रकार भीष्म प्रतिज्ञा का यहाँ एक पड़ाव पार हुआ। इस पड़ाव में, भीष्म पितामह द्वारा, काशिराज की कन्याओं का अपहरण एवं अम्बा द्वारा भीष्म पितामह को श्राप देना मुख्य था।

जब विचित्रवीर्य की मृत्यु हुई तो हस्तिनापुर के राजसिंहासन पर अस्तित्व का संकट छा गया क्योंकि विचित्रवीर्य निःसंतान थे और उनके देहांत से राजसिंहासन रिक्त हो गया था। राजमाता सत्यवती को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करें? उन्होंने भीष्म पितामह को बुलाया और कहा अब तुम ही हस्तिनापुर राजसिंहासन के उत्तराधिकारी हो। तुम राजसिंहासन पर बैठो और विवाह करके कुरु वंश को आगे बढ़ाओ। भीष्म पितामह ने माता को अपना प्रण याद दिलाया और इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। सत्यवती ने कहा, प्रतिज्ञा तो मेरे ही कारण ली थी अब मैं ही तुमसे प्रतिज्ञा वापस लेने को बोल रही हूँ, तो इसमे गलत क्या है। सत्यवती के

पिता ने भी भीष्म पितामह से यही प्रार्थना की। भीष्म पितामह ने कहा माता! प्रतिज्ञा प्रतिज्ञा होती है, यह समय के अनुसार नहीं बदलती, इसलिए मैं आप की बात को स्वीकार नहीं कर सकता। आगे हम देखते हैं कि, भीष्म के मना करने के बाद सत्यवती ने "महर्षि व्यास" को आमंत्रित किया जिनके आशीर्वाद से ' धृतराष्ट, पांडु एवं विदुर का जन्म हुआ, जिससे आगे चलकर महाभारत के दो पक्ष पांडव एवं कौरव हुए। यहाँ यह ध्यान देने वाली बात है कि यदि भीष्म पितामह, सत्यवती की बात मानकर हस्तिनापुर राजसिंहासन पर बैठ जाते और विवाह कर लेते तो, धृतराष्ट एवं पांडु का जन्म न होता, न कौरव एवं पांडवों का, और शायद महाभारत भी न होती। किन्तु यह भीष्ण प्रतिज्ञा थी जिसने भीष्म पितामह को अपनी प्रतिज्ञा के पालन हेतु माँ सत्यवती की बात को टालने पर मजबूर किया। खैर यहाँ आकर भीष्म प्रतिज्ञा का दूसरा पड़ाव भी पूर्ण हुआ।

तीसरे पड़ाव के रूप में हम, हस्तिनापुर के बटवारे को देख सकते हैं जब, लाक्षागृह से बचकर पांडव वन–वन घूमकर द्रौपदी स्वयंवर के पश्चात हस्तिनापुर वापस लौटे। तब हस्तिनापुर के दो युवराज थे युधिष्ठिर और दुर्योधन। किसी प्रकार गृह कलह से बचने के लिए भीष्म पितामह ने हस्तिनापुर को कौरवों और पांडवों में विभाजित करने की बात की। युधिष्ठिर, इन्द्रप्रस्थ के राजसिंहासन पर बैठे और हस्तिनापुर में महाराज धृतराष्ट्र और राजकुमार दुर्योधन। इस प्रकार जिस हस्तिनापुर के राजसिंहासन की सुरक्षा की प्रतिज्ञा भीष्म पितामह ने की थी, उस प्रतिज्ञा की रक्षा हस्तिनापुर को दोनों पक्षों में विभाजित करके की। यहाँ भीष्म प्रतिज्ञा का तीसरा पड़ाव पूर्ण हुआ।

भीष्म प्रतिज्ञा का चौथा पड़ाव बहुत ही उदास, थकान भरा और शर्मनाक दौर से गुजरा। यह समय था, भरी राजसभा में द्रौपदी का चीर हरण। भीष्म पितामह के सामने उनकी कुलवधू का चीर हरण हो रहा था और वो सिर झुकाए बैठे हुए थे। जिस भीष्म की हुंकार से पूरा आर्यावर्त कांपता था आज उसी के सामने हस्तिनापुर राजसभा में उन्हीं की कुलवधू का चीर हरण हो रहा था, और वह अपने को असहाय महसूस कर रहे थे और इसका कारण थी, हस्तिनापुर राजसिंहासन के प्रति उनकी प्रतिज्ञा। वही प्रतिज्ञा जिसकी वजह से वह हस्तिनापुर के राज सिहासन से बंधे हुए थे और विरोध नहीं कर सकते थे। अपनी प्रतिज्ञा के कारण एक अबला नारी के सम्मान को नहीं बचा पाने के कारण भीष्म पितामह बहुत व्यथित महसूस रहे थे। महाभारत की नींव तो पहले ही पड़ चुकी थी किन्तु यहाँ से महाभारत अवश्यभावी लगने लगा। द्रौपदी ने इसी सभा में प्रतिज्ञा की थी कि वह अपने केश तभी बांधेगी जब उसे दुशासन के छाती का रक्त भीम ला कर दे देंगे और भीम ने दुर्योधन की जांघ उखाड़ने का भी प्रण किया। तो इस प्रकार भीष्म प्रतिज्ञा के इस पड़ाव में कुरु राजवंश और हस्तिनापुर पर संकट के बादल फैलने लगे थे।

भीष्म, प्रतिज्ञा का पांचवां पड़ाव, श्री कृष्ण के शांतिदूत बनकर हस्तिनापुर राजदरबार में आने के समय शुरू हुआ। भीष्म पितामह, महाभारत का युद्ध हर हाल में रोकना चाहते थे इसलिए जब उन्हें पता चला कि, श्री कृष्ण शांति दूत बनकर आ रहे हैं तो भीष्म ने धृतराष्ट्र को समझाया और श्री कृष्ण के प्रस्ताव को स्वीकार करने की सलाह देते हुए दुर्योधन से सावधान रहने की बात की। किन्तु भावी को कौन रोक सकता है, हस्तिनापुर के राजदरबार में एकबार फिर परंपरा और प्रतिष्ठा को धक्का लगा। दुर्योधन, शांति तो दूर उसने श्री कृष्ण को ही बंदी बनाने की आज्ञा दे दी। जिस सभा में भीष्म पितामह, गुरुद्रोण, कृपाचार्य, विदुर जैसे महापुरुष उपस्थिति हों उस राजसभा में दूत का तिरस्कार और स्वयं कृष्ण के साथ दुर्व्यवहार होना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण था। यह एकबार फिर से द्रौपदी के चीर हरण वाला परिदृश्य याद दिलाने लगा। भीष्म पितामह अपनी प्रतिज्ञा के कारण विवश थे इसलिए वह व्याकुल हो रहे थे और, उन्हें हस्तिनापुर का भविष्य अंधकारमय लगने लगा। महाभारत के युद्ध को रोकने का अंतिम प्रयास भी विफल हुआ। ऐसा कहा जा सकता है कि, दुर्योधन की लालसा, हठधर्मिता, धृतराष्ट्र का पुत्र प्रेम एवं महापुरुषों की अपनी अपनी विवशताओं एवं प्रतिज्ञाओं ने तात्कालिक मानव समाज को महाविनाश के युद्ध में धकेल दिया।

अपने अगले पड़ाव में भीष्म प्रतिज्ञा, महाभारत के युद्ध में प्रवेश करती है। भीष्म पितामह द्वारा कौरव सेना का सेनापति बनना और क्षीर–शैय्या पर पड़ने तक की कहानी को समेटे हुए। भीष्म पितामह बड़े दुखी मन से कौरव सेना का सेनापति बनते है, और कारण भी उनकी प्रतिज्ञा ही है। प्रतिज्ञाबद्ध होने के कारण भीष्म पितामह ने यह जानते हुए भी कि कौरव असत्य के प्रतीक है, उनकी ओर से, सत्य के प्रतीक, पांडवों, के विरुद्ध युद्ध किया। भीष्म पितामह जब तक लड़ते, तब तक पांडवों की जीत असंभव थी, इसलिए भीष्म पितामह ने स्वयं अपनी मृत्यु के रहस्य के बारे में पांडवों को बताया और अगले दिन युद्ध में अर्जुन अपने रथ पर राजकुमार शिखंडी को ले आए और उनके पीछे से अर्जुन भीष्म पितामह पर बाण चलाते रहे किन्तु भीष्म पितामह ने उत्तर में बाण नहीं चलाए क्योंकि भीष्म पितामह शिखंडी (जो राजकुमारी अम्बा का पुनर्जन्म था) को "अम्बा" का स्वरूप मान रहे थे, और स्त्री पर बाण चलाना धर्म के विरुद्ध था। इस प्रकार अपनी प्रतिज्ञावश भीष्म पितामह पर बाणों की बौछार हो रही थी और वो उत्तर देने में निःसहाय थे।

अर्जुन के बाणों ने भीष्म को बींध दिया और भीष्म क्षीर–शैय्या पर लेट गए। इस प्रकार अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए भीष्म पितामह ने अपना सबकुछ न्यौछावर कर दिया और अंत में क्षीर–शैय्या पर लेट गए।

महाभारत में हर ओर केवल प्रतिज्ञा ही थी और इस भीष्ण प्रतिज्ञा ने कई उतार चढ़ाव देखे और कई घटनाओं की साक्षी बनी। ऐसा भी हुआ कि कुछ घटनाओं के लिए प्रत्यक्ष या अप्रतयक्ष रूप से भीष्म पितामह की प्रतिज्ञा को उत्तरदायी माना गया, जैसे दुर्योधन का दुराचार, कपट, हठधर्मिता धृतराष्ट्र का पुत्र प्रेम और राजधर्म का परित्याग। धृतराष्ट्र और दुर्योधन को यह पता था कि भीष्म पितामह प्रतिज्ञाबद्ध होने के कारण हस्तिनापुर राजसिंहासन से बंधे है और वह महाराज धृतराष्ट्र की आज्ञा पालन हेतु बाध्य हैं। इसलिए दुर्योधन हमेशा अपनी दुराग्रहों को महाराज से मनवा लेता था और उसकी रक्षा की जिम्मेदारी भीष्म पितामह की हो जाती थी। द्रौपदी के चीर हरण, या कृष्ण के दूत रूप के बंदी बनाने की आज्ञा आदि सभी कार्य दुर्योधन द्वारा द्रोण, कर्ण, आदि महावीरों की हस्तिनापुर राजसिंहासन के प्रति कर्तव्यनिष्ठा और विवशता को जानते हुए किए गए। उसे पता था कि इन महावीरों के रहते उसे कोई नहीं हरा सकता। एक तरह से देखें तो दुर्योधन को स्वयं की जगह इन महावीरों की प्रतिज्ञा, एवं कर्तव्यनिष्ठ। पर अधिक विश्वास था। यदि इन महावीरों में से कोई दुर्योधन की ओर से लड़ने से मना कर देता तो शायद दुर्योधन युद्ध करने की न सोचता। किन्तु ये सभी महापुरुष किसी न किसी प्रतिज्ञा के कारणवश असत्य एवं अधर्म से अलग नहीं हो सकते थे।

महाभारत में हर कोई प्रतिज्ञाबद्ध दिखता है, फिर चाहे वो भीष्म प्रतिज्ञा हो, द्रोण या फिर कर्ण, द्रौपदी हो या गांधारी आदि। महाभारत को इस प्रकार प्रतिज्ञाओं का युद्ध भी कहा जा सकता है।

कितना विचित्र एवं विरोधाभासी विचार है कि, कभी–कभी आप किसी कारणवश, न चाहते हुए भी किसी को मना नहीं कर पाते, और अपात्र का सहयोग करना आपकी मजबूरी मान लेते हैं।

रमेश चन्द्र शुक्ल
स. महाप्रबंधक(रेल विपणन एवं प्रभारी राजभाषा)
बी ई एम एल लिमिटेड

हिंदी हमारी पहचान

जन–जन की भाषा हिंदी
भारत की आशा है, हिंदी।
सबको साथ मिलाती हिंदी
देश की राजभाषा है, हिंदी

अभिमान, निज गर्व की भाषा हिंदी,
पूरे देश को जोड़े, वो भाषा है हिंदी।

हिंदी सबका संगम है
गंगा कावेरी की धारा है।
शब्द, लिपि सबसे आगे
एक भरोसा अनुपम है।

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण
कमल पंखुरी सेतु बनाती हिंदी।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
सबको साथ मिलाती हिंदी।

माँ के प्रेम की प्रतीक हिंदी
आजादी, की भाषा है, हिंदी।
हमारी गौरव गाथा हिंदी,
सांस्कृतिक जीवन रेखा है, हिंदी।

श्रीमती सुमति चमोली
बीईएमएल लिमिटेड–नई दिल्ली

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा विचार विमर्श कार्यक्रम

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा दिल्ली, फरीदाबाद, अलीगढ और आस–पास स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (नराकास) के अध्यक्षों तथा उनके कुल 32 सदस्य कार्यालयों के साथ विचार विमर्श कार्यक्रम 10 जून 2025 को दिल्ली में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का समन्वय कार्य भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (अध्यक्ष कार्यालय नराकास(उपक्रम–1) को दिया गया था। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु संसदीय समिति के सदस्यों तथा सभी निरीक्षित नराकास कार्यालयों के अध्यक्षों द्वारा नराकास (उपक्रम–1) सचिवालय (भाविप्रा) की प्रशंसा की गई। कार्यक्रम के कुछ छायाचित्र प्रस्तुत हैं।

नराकास (उपक्रम-1) दिल्ली के तत्वावधान में "संसदीय राजभाषा निरीक्षण प्रश्नावली" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 05 मार्च, 2025 को भाविप्रा, निगमित मुख्यालय, राजीव गांधी भवन के सेमिनार हाल में पूर्ण–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सभी सदस्य कार्यालयों से 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आरंभ कार्यपालक निदेशक (प्रशासन), सुश्री माया लवानिया द्वारा सभा के संबोधन तथा सदस्य कार्यालयों से आए सभी प्रतिभागियों के स्वागत के साथ हुआ। संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य–सचिव नराकास (उपक्रम–1), श्री संजीव कुमार द्वारा संसदीय राजभाषा निरीक्षण प्रश्नावली एवं निरीक्षण समिति की अपेक्षाओं पर पीपीटी की माध्यम से व्याख्यान दिया गया।

भोजनावकाश के बाद प्रशिक्षण का दूसरा सत्र आरंभ हुआ, जिसमें संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य–सचिव नराकास (उपक्रम–1), श्री संजीव कुमार द्वारा संसदीय राजभाषा निरीक्षण प्रश्नावली भरने में आने वाली कठिनाइयों तथा उनके निवारण संबंधी चर्चा की गई। चर्चा के दौरान कई प्रकार के उदाहरण देते हुए प्रतिभागियों की समस्याओं के हल सुझाए गए। अंततः सभी प्रतिभागियों ने समय–समय पर कार्मिकों के प्रशिक्षण हेतु इन कार्यक्रमों के आयोजन के लिए श्री संजीव कुमार संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य–सचिव नराकास (उपक्रम–1) एवं उनके सहायक दल के प्रति आभार व्यक्त किया।

14.05.2025 को "भारतीय ज्ञान परम्परा में हिंदी अनुवाद" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 14 मई, 2025 को भाविप्रा, निगमित मुख्यालय, राजीव गांधी भवन के सेमिनार हाल में पूर्ण–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सभी सदस्य कार्यालयों से 36 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आरंभ कार्यपालक निदेशक (प्रशासन), सुश्री माया लवानिया के संबोधन तथा सदस्य कार्यालयों से आए सभी प्रतिभागियों के अतिरिक्त प्रथम सत्र के व्याख्याता डॉ पी सी टंडन, वरिष्ठ प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय के स्वागत के साथ हुआ।

तत्पश्चात डॉ पी सी टंडन द्वारा "भारतीय ज्ञान परंपरा में हिंदी और अनुवाद" विषय पर व्याख्यान आरंभ किया गया। व्याख्यान के दौरान उन्होंने अनुवाद करते समय सामने आने वाली कठिनाइयों और उनके समाधान के विषय में चर्चा की और साथ ही अधिक स्पष्टता हेतु प्रतिभागियों को अनुवाद का अभ्यास भी कराया गया।

भोजनावकाश के बाद प्रशिक्षण का दूसरा सत्र आरंभ हुआ, जिसमें संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य–सचिव नराकास (उपक्रम–1), श्री संजीव कुमार द्वारा "कार्यालय में हिंदी पत्राचार का बदलता स्वरूप" तथा "कार्यालय में राजभाषा हिंदी के समक्ष चुनौतियाँ" विषयों पर दो अलग–अलग व्याख्यान दिए गए। व्याख्यान के दौरान कई प्रकार के उदाहरण देते हुए प्रतिभागियों की समस्याओं का हल सुझाया गया। अंततः सभी प्रतिभागियों ने समय–समय पर कार्मिकों के प्रशिक्षण हेतु इन कार्यक्रमों के आयोजन के लिए श्री संजीव कुमार संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य–सचिव नराकास (उपक्रम–1) एवं उनके सहायक दल के प्रति आभार व्यक्त किया।

नराकास (उपक्रम-1) के तत्वावधान में 2025 में आयोजित की गई प्रतियोगिताएँ

नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के तत्वावधान में निम्नलिखित 15 सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रतियोगिताएं आयोजित करवाई गई एवं राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ एवं प्रेरक बनाने के लिए सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारियों द्वारा दिए गए योगदान हेतु सभी आयोजक कार्यालय बधाई के पात्र है।

क्र सं	प्रतियोगिता का नाम	आयोजक कार्यालय	प्रतियोगिता की तिथि
1.	हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता	रेलटेल निगमित कार्यालय	11.11.2025
2.	हिन्दी प्रतिवेदन लेखन प्रतियोगिता	केन्द्रीय भंडारण निगम	12.11.2025
3.	हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता	इरकॉन इंटरनेशनल	18.11.2025
4.	हिन्दी टिप्पण लेखन प्रतियोगिता	सफदरजंग हवाई अड्डा	19.11.2025
5.	राजभाषा प्रश्नमंच प्रतियोगिता	एनएसएफडीसी	20.11.2025
6.	राजभाषा ज्ञान एवं हिन्दी व्याकरण	इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड	20.11.2025
7.	हिन्दी आशु भाषण प्रतियोगिता	गेल इंडिया	21.11.2025
8.	हिन्दी संस्मरण लेखन प्रतियोगिता	बीएचईएल कारपोरेट कार्यालय	25.11.2025
9.	तकनीकी प्रस्तुतीकरण	ओ एन जी सी	26.11.2025
10.	रचनात्मक समाचार वाचन	हिंदुस्तान पैट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड	28.11.2025
11.	चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता	इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन	02.12.2025
12.	अंग्रेजी–हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता	आई ए यू. भाविप्रा	03.12.2025
13.	हिन्दी प्रशासनिक शब्द अंताक्षरी प्रतियोगिता	पीएफसी	08.12.2025
14.	सूक्ति प्रतियोगिता	इरेडा लिमिटेड	11.12.2025
15.	हिन्दी शब्दार्थ लिखित	कंटेनर कॉर्पोरेशन लिमिटेड	12.12.2025

भारत का इतिहास : भारत गौरव

जितना वृहद है देश हमारा, उतना विस्तृत इतिहास
पाषाणकाल से आजादी तक, हुआ है क्रमिक विकास...

सबसे पहले मानव ने की, पहिए और आग की खोज
हड़प्पा मोहजोदड़ो में थे व्यवस्थित नगरीय आवास...

वैदिक सभ्यता काल में की गई, चारों वेदों की रचना
संस्कृत से मिला संस्कृति को, ज्ञान, ध्यान का प्रकाश...

छठी, सातवीं शताब्दी में उद्‌भव, हुए बौद्ध और जैन
आगम और त्रिपिटक से हुआ, दिग दिगंत में उजास...

कपिलवस्तु, वैशाली, मगध, कोशल, कुरु, पांचाल
चोल, चेर, पांडय, मौर्य शुंग का, था सुदूर विन्यास...

विजय नगर पतन के बाद, बाबर का हुआ आगमन
खिलजी, मुगल, गुलाम वंश का, वर्षों रहा अधिवास...

राजपूताना की चर्चा बिना अतीत का वृतांत अधूरा
मराठवाड़े में शिवाजी ने, महाराष्ट्र को किया पलाश...

फिर सदियों राज किया भारत पर ब्रिटिश हुकूमत ने
दो सौ वर्ष संघर्ष के बाद, आया आजादी का मधुमास...

अतीत अपना सदियों पुराना, है स्वयं में गर्वित गाथा
आगामी पीढ़ी को बताएं, उन्हें हो गौरव का एहसास...

नवीन कुमार
हिंदी अनुवादक
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-1)
दिल्ली सचिवालय

अध्यक्ष	संरक्षक	मार्गदर्शक	सदस्य–सचिव
श्री विपिन कुमार, भा.प्र.से. अध्यक्ष, भाविप्रा	श्री पंकज मल्होत्रा, भा.रे.का.से सदस्य(वित्त) एवं अतिरिक्त प्रभार (मानव संसाधन), भाविप्रा	श्रीमती माया लवानिया कार्यपालक निदेशक (प्रशासन), भाविप्रा	श्री संजीव कुमार संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा)

नराकास (उपक्रम-1) दिल्ली के सभी उपक्रमों के कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा प्रमुखों का विवरण

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड निगमित मुख्यालय इस्पात भवन, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003	 श्री कृष्ण कुमार सिंह निदेशक (कार्मिक)	 श्री धीरज कुमार उप महाप्रबंधक(मा.सं.–राजभाषा)
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड-मुख्य महाप्रबंधक कार्यालय-रिटेल 8वीं मंजिल, कोर–2, स्कोप मीनार, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092	 श्री अविनाश जैन महाप्रबन्धक(प्रभारी)–रिटेल	 श्री रमेश चंद मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा)
एम.एम.टी.सी. लिमिटेड कोर–1, स्कोप कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003	 श्री नितिन कुमार यादव, भा.प्र.से अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार)	 डॉ विनय कुमार उप प्रबंधक(राजभाषा)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण निगमित मुख्यालय राजीव गाँधी भवन, सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110003	 श्री विपिन कुमार, भा.प्र.से अध्यक्ष	 श्री संजीव कुमार संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा)
बामर लारी एंड कंपनी लिमिटेड एन आर ओ, प्रथम तल, एन बी सी सी केंद्र, प्लाट नं 2, ओखला फेज–1, नई दिल्ली–110020	 श्री अशोक कुमार गुप्ता उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) – उत्तरीय क्षेत्र	 डा. राघवेंद्र कुमार शर्मा वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा एवं प्रशासन)
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड- उद्योगक्षेत्र एकीकृत कार्यालय परिसर, इस्पात भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003	 श्री जितेन्द्र दास कार्यपालक निदेशक	 सुश्री शिल्पा गोयल वरिष्ठ प्रबन्धक (मा.सं./राजभाषा)
नेशनल शेडयूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉरपोरेशन 14वीं मंजिल, स्कोप मीनार, कोर–1 व 2, लक्ष्मी नगर जिला केंद्र, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092	 श्री प्रभात त्यागी अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक	 श्रीमती अर्चना मेहरा मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड ऊर्जानिधि 1, बाराखंबा लेन, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001	 सुश्री परमिंदर चोपड़ा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 श्री योगेन्द्र कुमार खंडूजा विभागाध्यक्ष (राजभाषा)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड ईसीई हाउस, 28—ए, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली —110001	 **श्री निखिल कुमार सिंह** मुख्य महाप्रबंधक समन्वयन	 **श्री राजकुमार महतो** सहायक प्रबंधक राजभाषा
पवन हंस लिमिटेड सी—14, सैक्टर—1, नोएडा—201301 (उत्तर प्रदेश)	 **श्री संजीव राजदान** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **सुश्री सारिका शारदा** प्रमुख (प्रशासन/राजभाषा)
स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, उत्तरी क्षेत्र स्कोप मीनार, कोर—1, 17वां तल, लक्ष्मीनगर, दिल्ली—110092	 **श्री अभिजीत कुमार** मुख्य महाप्रबन्धक(विक्रय) एवं क्षेत्रीय प्रबन्धक	 **श्री अभयेश्वर सहाय** उप महाप्रबन्धक (मा.सं.)
ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड दीनदयाल ऊर्जा भवन, 5, नेल्सन मंडेला मार्ग, वसंत कुंज, नई दिल्ली—110 070	 **श्री निरूपम शर्मा** समूह महाप्रबंधक — प्रधान समन्वय	 **सुश्री संजय वती** प्रबंधक (राजभाषा)
महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड महानगर दूरसंचार सदन, 9, केंद्रीय कार्यालय परिसर, लोदी रोड, नई दिल्ली—110003	 **श्री ए के राबर्ट जे रवि** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **श्री लक्ष्मी प्रसाद** उप प्रबन्धक (राजभाषा)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
गेल इंडिया लिमिटेड 16, भीकाएजी कामा प्लेस, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110066	 श्री संदीप कुमार गुप्ता अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक	 श्री पी. नागेन्द्र मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा)
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड-कार्पोरेट कार्यालय बीएचईएल हाउस, सीरी फोर्ट, नई दिल्ली–110049	 श्री एम श्रीधर कार्यपालक निदेशक(मानव संसाधन)	 श्री मंगल स्वरूप त्रिवेदी वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा)
इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट्स(इंडिया) लिमिटेड स्कोप कॉम्प्लेक्स, कोर–3, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003	 श्री संजय गोयल समूह महाप्रबंधक	 डॉ. अहीर प्रभुनाथ कार्यकारी(एस.जी.) (राजभाषा)
भारतीय कंटेनर निगम लिमिटेड कॉनकॉर भवन, सी–3, मथुरा रोड, अपोलो अस्पताल के सामने, नई दिल्ली – 110076	 श्री संजय स्वरूप अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 श्री पुष्प राज सिंह समूह महाप्रबंधक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी
इंडियन रिन्यूएबल एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी लिमिटेड (इरेडा) कोर–4ए, भारत पर्यावास केंद्र, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110003	 श्री प्रदीप कुमार दास अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 सुश्री संगीता श्रीवास्तव उप महाप्रबन्धक (राजभाषा)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड कोर–2,स्कोप कॉम्प्लेक्स, 7, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली	 **श्रीमती पियाली चक्रबर्ती** कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)	 **श्री विजय कुमार शर्मा** सहायक प्रबंधक (हिंदी)
हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड स्कोप मीनार, दूसरा तल, कोर–2, नार्थ टावर, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092	 **श्री जसवंत कुमार राजौरा** उप महाप्रबंधक	 **श्री संजीव कुमार कश्यप** प्रबन्धक (मानव संसाधन)
एनटीपीसी लिमिटेड एनटीपीसी केंद्रीय कार्यालय ईओ सी सेक्टर –24, नोएडा	 **श्री गुरदीप सिंह** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **श्री अतरसिंह गौतम** उप महाप्रबन्धक (राजभाषा)
केन्द्रीय भंडारण निगम-निगमित मुख्यालय 4/1, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, अगस्त क्रांति मार्ग, हौजखास, नई दिल्ली–110016	 **श्री संतोष सिन्हा** प्रबंध निदेशक	 **श्रीमती नम्रता बजाज** उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड सी–4, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, साकेत, नई दिल्ली–110017	 **श्री हरि मोहन गुप्ता** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **श्री सुरेन्द्र सिंह** कार्यपालक निदेशक (परियोजना)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड प्लेट–ए, 6वां तल, ऑफिस ब्लॉक, टॉवर–2, एन.बी.सी.सी. बिल्डिंग, ईस्ट किदवई नगर, नई दिल्ली–110023	 **श्री संजय कुमार** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **सुश्री रुचिरा चटर्जी** समूह महाप्रबंधक/विपणन एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी
इंडियन रेलवे कैटरिंग व टूरिज्म कॉर्पोरेशन लिमिटेड, निगम कार्यालय बी–148, 12वां तल, स्टेट्स्मैन हाऊस, बाराखंबा रोड, नई दिल्ली–110001	 **श्री संजय कुमार जैन** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **श्री संदीप त्रिवेदी** मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं समूह महाप्रबंधक/मानव संसाधन विकास
भारतीय होटल निगम लिमिटेड सेन्टॉर होटल परिसर, इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट, नई दिल्ली–110037	 **श्री अमित कुमार** अध्यक्ष	 **श्री संदीप कुमार** कंपनी सचिव एवं महा प्रबंधक–लीगल कार्यवाहक मुख्य मानव संसाधन एवं राजभाषा अधिकारी
दि स्टेट ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड जवाहर व्यापार भवन, टॉलस्टॉय मार्ग, नई दिल्ली–110001	 **श्री एस. के. मीणा** संयुक्त महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन)	 **डॉ. जगदीश प्रसाद** मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण- उत्तरी क्षेत्र मुख्यालय नवीन विमान यातायात सेवा परिसर, इन्दिरा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110037	 **श्री देवेन्द्र कुमार गौतम** क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक	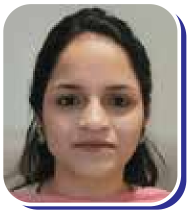 **श्रीमती ज्योत्स्ना मिश्रा** प्रबन्धक (राजभाषा)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विकास एवं वित्त निगम (एनएमडीएफसी) प्रथम तल, कोर 1, स्कोप मीनार, लक्ष्मी नगर, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, दिल्ली–110092	 डॉ. आभा रानी सिंह, आईआरएस अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक	 श्री प्रदीप कुमार गुप्ता उप प्रबंधक विपणन एवं ऑफिसियल लैंग्वेज
एम.एस.टी.सी. लिमिटेड जे–500, 5वीं मंजिल, टावर–जे, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, नौरोजी नगर, नई दिल्ली–110029	 श्री मनोबेन्द्र घोषाल अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 श्री सूर्यकांत महाप्रबंधक (सीसी/सीपी/राजभाषा)
बी.ई.एम.एल. लिमिटेड क्षेत्रीय कार्यालय, ईएफजीएच, 'वंदना' बिल्डिंग, 11वीं मंजिल, टॉलस्टॉय मार्ग, नई दिल्ली –110001	 श्री रणवीर सिंह चोपड़ा मुख्य महाप्रबंधक (प्रमुख–प्रधान कार्यालय प्रकोष्ठ दिल्ली)	 श्री रमेश चन्द्र शुक्ल सहा–महाप्रबन्धक (रेल विपणन/प्रभारी–राजभाषा)
भारत संचार निगम लिमिटेड – निगम कार्यालय 403, बीएसएनएल भवन, हरीशचन्द्र माथुर लेन, जनपथ, नई दिल्ली–110001	 श्री राजीव कुमार कौशिक प्रधान महाप्रबंधक (कार्मिक)	 श्रीमती अपर्णा सेन राजभाषा अधिकारी
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड – क्षेत्रीय कार्यालय विशाखापत्तनम इस्पात संयंत्र, एनबीसीसी प्लाजा, चतुर्थ टॉवर, चौथा तल, सैक्टर–5, पुष्प विहार, साकेत, नई दिल्ली–110017	 श्री संजय गर्ग महाप्रबंधक(विपणन) एवं क्षेत्रीय प्रबंधक(उत्तर)	 श्री ए. एस. मित्तल महाप्रबंधक (विपणन)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
मेकॉन लिमिटेड स्कोप मीनार, नार्थ टावर, 13वां/15वां तल, लक्ष्मी नगर व्यावसायिक केन्द्र, दिल्ली–110092	 **डॉ. राजेश दत्त** कार्यपालक निदेशक एवं कार्यालय प्रमुख	 **श्री पंकज श्रीवास्तव** वरिष्ठ महाप्रबंधक (विद्युत एवं प्रभारी राजभाषा)
ग्रिड कंट्रोलर ऑफ इंडिया लिमिटेड 18ए, शहीद जीत सिंह मार्ग, कटवारिया सराय, नई दिल्ली–110016	 **श्री नाबारुण रॉय** कार्यपालक निदेशक, उ.क्षे.भा.प्रे.के.	 **श्री मनीष कुमार सिंह** उप–प्रबन्धक (मानव संसाधन)
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड 1, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली–110066	 **सुश्री वर्तिका शुक्ला** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 **श्री सतीश कुमार सोलंकी** प्रबन्धक (राजभाषा)
नालको - उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय कोर–4, 5वां तल, साउथ टॉवर, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, स्कोप मीनार, लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली–110092	 **श्री संदीप दरबारी** मुख्य महाप्रबन्धक(विपणन)/ क्षेत्रीय प्रबन्धक (उत्तरी क्षेत्र)	 **श्री बिट्टू गौतम** प्रबंधक (प्रद्रावक)
रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड–उत्तरी क्षेत्रीय कार्यालय छठा तल, ब्लॉक–3, दिल्ली आई टी पार्क, शास्त्री पार्क, नई दिल्ली–110053	 **श्री जगदीप सिंह** प्रमुख कार्यपालक निदेशक	 **श्री सी एल भारद्वाज** उप महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन/राजभाषा)

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
विमानपत्तन निदेशक कार्यालय सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110003	 **श्री कैलाश चंद्र मीना, आईएपी** विमानपत्तन निदेशक	 **श्री राकेश रंजन कुमार सिंह** सहायक प्रबंधक(रा.भा.)
आई आर सी टी सी उत्तर क्षेत्र कार्यालय 11वां तल, स्टेट्समैन हाउस, बारहखंबा रोड, नई दिल्ली–110001	 **श्री सुनील बेनीवाल** समूह महाप्रबंधक	 **श्री नीरज कुमार सिन्हा** प्रबंधक (मानव संसाधन एवं राजभाषा अधिकारी)
रेडियो निर्माण एवं विकास एकक भाविप्रा, एकीकृत प्रशासनिक एकक, सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110003	 **श्री सी पट्टाभी** कार्यपालक निदेशक (रे.नि.वि.ए./उ.नि.ए.)	 **श्री इन्ताज अली** वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
एनएमडीसी लिमिटेड पंचम तल, प्लेट–सी, एनबीसीसी टावर, ऑफिस ब्लॉक–2, पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023	 **श्री सोमनाथ आचार्य** उप महाप्रबंधक(कार्मिक)	 **श्री अजय कुमार** प्रबन्धक (नैगम संचार)
भारत संचार निगम लिमिटेड **कार्यालय मुख्य महाप्रबंधक(ट्रांस-उत्तर)** किदवई भवन, नई दिल्ली–110001	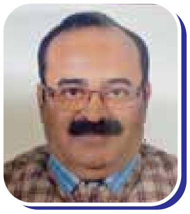 **श्री जय कुमार साह** मुख्य महाप्रबंधक	 **सुश्री अनु कौशिक** राजभाषा अधिकारी

कार्यालय का नाम	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रमुख
इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली	 श्री उदित जैन कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)	 श्री विशाल महाप्रबंधक (कर्मचारी संबंध)

जब सेवानिवृत्त हो जाऊँगी

जब सेवानिवृत्त हो जाऊँगी,
जीवन की दौड़ से थोड़ा ठहर जाऊँगी।
कलम, फाइलें, और मीटिंग की भीड़,
सबको मुस्कुराकर अलविदा कह जाऊँगी।

सुबह की घड़ी अब नहीं पुकारेगी,
"जल्दी करो, दफ्तर देर हो जाएगी।"
अब वो अलार्म भी चैन से सोएगा,
जो बरसों से मेरे संग जागता आया था।

दीवार पर टँगा कैलेंडर भी बोलेगा,
"अब गिनती खत्म, अब अपना वक्त है।"
वो मेज, वो कुर्सी, वो चाय का प्याला,
अब यादों का प्यारा एक किस्सा बन जाएगा।

सहकर्मियों की हँसी, वो छोटी–छोटी बातें,
दिल के कोनों में सहेज लूँगी मैं।
जो सीखा, जो जिया इन वर्षों में,
वो अनुभव जीवन की निधि बनाऊँगी मैं।

अब समय होगा अपने लिए,
पुस्तकों, पौधों और सपनों के लिए।
कभी सवेरे बाग में सैर करूँगी,
कभी दोपहर को अपनी कहानी लिखूँगी।

जो अधूरी इच्छाएँ रह रह गईं,
उन्हें पूरा करने अब जाऊँगी।
चार महीने के बाद, हाँ,
थोड़ा खुद को भी जी पाऊँगी।

सेवा समाप्त नहीं, बस रूप बदलेगा,
कर्तव्य से अब आत्मसुख का क्रम चलेगा।
दिल कहेगा – "तूने जीवन दिया कर्म को,"
अब मन को दे इनाम – "स्वतंत्रता का पल दो।"

चार महीने के बाद जब मैं विदा लूँगी,
तो न आँखें नम होंगी, न मन भारी,
क्योंकि गर्व रहेगा इस बात का सदा–
"मैंने जीवन दिया, निष्ठा और सेवा की पूरी तैयारी।"

कुसुम मिड्ढा
प्रबंधक (राजभाषा)
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-1) दिल्ली की 60वीं बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) दिल्ली की 60वीं बैठक एवं राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन संबंधी पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन 21 जनवरी, 2025 को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण अधिकारी संस्थान, सफदरजंग हवाईअड्डा, नई दिल्ली में किया गया। इस बैठक में नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के सभी सदस्य कार्यालयों से कार्यालय–प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक के दौरान, सदस्य कार्यालयों द्वारा जनवरी–दिसम्बर, 2024 अवधि के दौरान किए गए राजभाषा कार्यान्वयन के आधार पर कुल 05 सदस्य कार्यालयों को श्रेष्ठ पत्रिका पुरस्कार प्रदान किए गए और अक्तूबर–दिसंबर 2024 के दौरान 15 प्रतियोगिताओं के आयोजक सदस्य कार्यालयों तथा नराकास के तत्वावधान में विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं के 78 विजेताओं को राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया साथ ही नराकास(उपक्रम–1) द्वारा 27 सितंबर 2024 को आयोजित की गई गीत गायन प्रतियोगिता के 08 विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। बैठक के दौरान सदस्य कार्यालयों से प्राप्त जुलाई–दिसंबर, 2024 अवधि की हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी छमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-1) दिल्ली की 61वीं बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) दिल्ली की 61वीं बैठक एवं राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन संबंधी पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन 08 अगस्त, 2025 को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण अधिकारी संस्थान, सफदरजंग हवाईअड्डा, नई दिल्ली में किया गया। बैठक की अध्यक्षता भाविप्रा एवं नराकास (उपक्रम–1) के अध्यक्ष श्री विपिन कुमार, भा प्र से द्वारा की गई एवं इस अवसर पर सदस्य (मानव संसाधन) डॉ श्री एच श्रीनिवास भी उपस्थित थे। इस बैठक में नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के सभी सदस्य कार्यालयों से कार्यालय–प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक के दौरान, सदस्य कार्यालयों द्वारा जनवरी–जून, 2025 अवधि के दौरान किए गए राजभाषा कार्यान्वयन के आधार पर कुल 08 सदस्य कार्यालयों को श्रेष्ठ कार्यान्वयन पुरस्कार प्रदान किए गए। सदस्य कार्यालयों को राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति–पत्र प्रदान किए गए। बैठक के दौरान सदस्य कार्यालयों से प्राप्त अक्टूबर 2024 से 31 मार्च 2025 अवधि की हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी छमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई एवं सभी सदस्य कार्यालयों को हिन्दी और उसकी उपयोगिता एवं प्रयोगिकता पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों को हिन्दी के बहुआयामी प्रयोगों के लिए प्रेरित किया गया।

कवि और लेखक "डॉ. रामदरश मिश्र"

डॉ. रामदरश मिश्र (जन्म 15 अगस्त, 1924 – निधन 1 नवंबर, 2025) हिंदी के एक महान साहित्यकार थे, जिनका जन्म गोरखपुर के डुमरी गाँव में हुआ; उन्होंने कविता, उपन्यास, कहानी, आलोचना और संस्मरण सहित साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लिखा, गाँव और शहर की जिंदगी का यथार्थ चित्रण किया, और अपनी सहज भाषा व गहरी संवेदनशीलता के लिए जाने गए; उन्होंने बीएचयू से शिक्षा ली और दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रहे, तथा 'सरस्वती सम्मान' 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और ''पद्मश्री'' जैसे कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त किए।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
निगमित मुख्यालय
राजीव गांधी भवन, सफदरजंग हवाईअड्डा नई दिल्ली – 110 003
वेबसाइट : www.aai.aero